

उ. प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय



परास्नातक पाठ्यक्रम (मानविकी विद्याशाखा)

विश्वविद्यालय परिसर शान्तिपुरम् (सेक्टर-एफ),
फाफामऊ, इलाहाबाद – 211 013, उ.प्र.
www.uprtouallahabad.org.in

पाठ्यक्रम प्रकाशन समिति

डॉ. एच. सी. जायसवाल	(वरिष्ठ परामर्शदाता)	- संयोजक
श्री अछेलाल	(प्रवक्ता - संस्कृत)	- सदस्य
डॉ. ज्ञान प्रकाश यादव	(प्रवक्ता - प्रबन्ध शास्त्र)	- सदस्य
डॉ. राम प्रवेश राय	(प्रवक्ता - पत्रकारिता एवं जनसंचार)	- सदस्य
डॉ. दीप शिखा	(परामर्शदाता - राजनीतिशास्त्र)	- सदस्य
डॉ. स्मिता अग्रवाल	(परामर्शदाता - संस्कृत)	- सदस्य
श्री राजित राम यादव	(प्रवक्ता - कम्प्यूटर विज्ञान)	- सदस्य
श्री जितेन्द्र यादव	(परामर्शदाता - दर्शनशास्त्र)	- सदस्य

प्रस्तुति :

डॉ. (श्रीमती) रूचि बाजपेई	(प्रवक्ता - हिन्दी)
---------------------------	---------------------

पररसनरतक डरठुड-कुरड डरनवरकी वरडरशरखर

उतुतर डुरडेश ररकषर डणुडन डुकुत वरशुवरवरडरलय के डरनवरकी वरडरशरखर डुररर नरडुनलरखरत डुररसनरतक कररुडकुरड संचरलरत करे कर रहे हूँ।

डरगुरी कररुडकुरड

1. डड.ड. हरनुदी (MAHI)
2. डड.ड. अरुथशरसुतुर (MAEC)
3. डड.ड. संसुकुरत (MAST)
4. डड.ड. अंगुरेकुरी (MAEN)
5. डड.ड. डरुशनशरसुतुर (MAPH)

डरुु (डुरी डनरु संरह)
नरडेशक
डरनवरकी वरडरशरखर
30 डुरर ररकषर डणुडन डुुवरुवरुु
इलरहरडरड

विषय सूची

कार्यक्रम		पृष्ठ संख्या
1- एम0ए0एच0आई0	-	1 - 35
2- एम0ए0ई0सी0	-	36 - 82
3- एम0ए0एस0टी0	-	83 - 91
4- एम0ए0ई0एन0	-	92 - 171
5- एम0ए0पी0एच0	-	173

एम. ए. हिन्दी MAHI - 01

आधुनिक हिन्दी काव्य

खण्ड –1 नवजागरण काव्य

इकाई –01 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का काव्य

1. भारतेन्दु का भक्तिपरक काव्य, 2. श्रृंगारपरक काव्य, 3. आधुनिक काव्य 4. समाजसुधार और नवजागरण, 5. साहित्य क्षेत्र में भारतेन्दु के योगदान का महत्व

इकाई –02 मैथिलीशरण गुप्त का काव्य (राष्ट्रीय जागरण, नवजागरण और नारी चेतना के संदर्भ में)

1. गुप्त जी के काव्य के मूल स्वर, 2. हिन्दी काव्य जगत् में गुप्तजी का योगदान

इकाई –03 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और मैथिलीशरण गुप्त की काव्य-भाषा और शिल्प (खड़ी बोली के विकास के संदर्भ में)

1. भारतेन्दु की काव्य भाषा और शिल्प, 2. मैथिलीशरण गुप्त की काव्य भाषा और काव्य शिल्प, 3. भारतेन्दु और मैथिलीशरण गुप्त की काव्य भाषा और शिल्प की तुलना

खण्ड –2 छायावादी काव्य (एक)

इकाई –04 जयशंकर प्रसाद के काव्य में राष्ट्रीय चेतना की विशिष्टता और आधुनिक भावबोध

1. प्रसाद काव्य का अध्ययन : दृष्टि और पद्धति, 2. छायावाद : युग संदर्भ 3. जय शंकर प्रसाद का महत्व : आधुनिक कविता का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, 4. आधुनिक बोध और संवेदना : प्रसाद का काव्य, 5. विशिष्ट चयन के आधार पर प्रसाद का मूल्यांकन

अ- कामायनी का श्रद्धा सर्ग : सौन्दर्य चेतना और विश्व दृष्टि ,
ब- 'ऑसू' में प्रसाद की काव्यानुभूति: प्रेम संवेदना, स- 'प्रलय की छाया' का विशेष पाठ

इकाई –05 जयशंकर प्रसाद की भाषा और काव्य शिल्प

1. छायावाद : काव्यभाषा और काव्यशिल्प, 2. प्रसाद की काव्य भाषा
3. प्रसाद का काव्य शिल्प, 4. 'काव्यपाठ' के चयन के आधार पर प्रसाद का मूल्यांकन

इकाई –06 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के काव्य का वैचारिक आधार

1. निराला काव्य की आलोचना के प्रचलित आधार, 2. निराला के

- काव्य का वैचारिक आधार 3. विभिन्न वैचारिक आधार वाली कविताएँ
- इकाई –07** सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' के काव्य में प्रयोगशीलता की दिशाएं
1. प्रयोगशीलता के प्रेरक तत्व, 2. प्रयोगशीलता के नये और पुराने का सामंजस्य 3. काव्य में प्रयोगशीलता का अर्थ, 4. निराला काव्य में प्रयोगशीलता
- इकाई –08** राम की शक्ति पूजा एक पाठावलोकन
1. राम की शक्तिपूजा का ऐतिहासिक संदर्भ, 2. संवेगात्मक उद्देश्य 3. कविता का पाठावलोकन, 4. काव्यरूप का सवाल, 5. संरचनात्मक सौन्दर्य
- खण्ड –3** छायावादी काव्य (दो) तथा छायावादोत्तर काव्य
- इकाई –09** महादेवी वर्मा की काव्य संवेदना
1. महादेवी वर्मा की काव्य संवेदना 2. महादेवी की कविता में वेदना भाव 3. महादेवी की कविता में रहस्य भावना, 4. महादेवी की कविता में प्रणय की अनुभूति 5. महादेवी की कविता में सौन्दर्य चित्रण
- इकाई –10** महादेवी वर्मा की प्रतीक योजना
1. प्रतीक अर्थ और उसकी परंपरा, 2. प्रतीक की आवश्यकता, 3. महादेवी वर्मा के काव्य में प्रतीक योजना, 4. महादेवी के प्रतीकों के विभिन्न प्रकार, 5. महादेवी द्वारा प्रयुक्त प्रतीकों के चार वर्ग, 6 महादेवी के प्रतिनिधि और प्रिय प्रतीक
- इकाई –11** सुमित्रानन्दन पंत की काव्य यात्रा के विविध चरण
1. पंत की काव्य यात्रा के विविध चरण
- इकाई –12** सुमित्रानन्दन पंत का काव्य शिल्प : भाषा और शैली
1. पंत की काव्य भाषा, 2. पंत की काव्य शैली, 3. काव्य रूप एवं छंद विधान
- इकाई –13** दिनकर के काव्य की अंतर्धाराएँ
1. दिनकर का युग, 2. दिनकर की राष्ट्रीय चेतना, 3. सौन्दर्य और प्रेम भावना 4. दिनकर की काव्य दृष्टि का विकास
- खण्ड-4** प्रगतिशील काव्य
- इकाई –14** नागार्जुन के काव्य में संवेदना के रूप
1. संवेदना क्या है? 2. संवेदना के विविध रूप, 3. संवेदना की जटिलता: कुछ और पक्ष
- इकाई –15** नागार्जुन के काव्य का रचना-विधान

1. रचना विधान के तत्व, 2. नागार्जुन और रूप प्रयोग
- इकाई –16 मुक्तिबोध का जीवन दर्शन और उनकी काव्य दृष्टि (जीवन प्रक्रिया और रचना प्रक्रिया के संदर्भ में)**
1. मुक्तिबोध : जीवन दर्शन और काव्य दृष्टि, 2. कला की स्वायत्तता और कलात्मक अनुभूति तथा जीवनाभूति का संबंध, 3 पक्षधरता साहित्य और राजनीति के संदर्भ में मुक्तिबोध कृत वर्तमान सभ्यता समीक्षा , 5.काव्य की रचना-प्रक्रिया
- इकाई –17 मुक्तिबोध का काव्य शिल्प : फैंटेसी के सन्दर्भ में**
1. फैंटेसी का स्वरूप और उसकी प्रकृति, 2 फैंटेसी के शिल्प की शक्ति और सीमा 3. फैंटेसी: कविताओं के विश्लेषण के संदर्भ में, 4. भाववादी शिल्प का यथार्थवादी दृष्टि से उपयोग, 5. मुक्तिबोध द्वारा प्रयुक्त उपमा, रूपक, प्रतीक, मिथक और बिंब, 6. काव्य भाषा, शब्दावली और विराम चिन्ह, 7. कुछ कविताओं के शीर्षकों का आशय-अभिप्राय
- इकाई –18 “अंधेरे में” कविता का विश्लेषण**
1. अंधेरे में : विश्लेषण
- इकाई –19 धूमिल**
1. सुदामा पाण्डेय धूमिल : संक्षिप्त जीवन परिचय, 2. धूमिल की आरम्भिक कविताएं और अकविता आंदोलन, 3. धूमिल की कविता : बैलमुत्ती इबारत से लोहे के स्वाद तक 4. राजनीतिक चेतना और धूमिल की कविताएं, 5. ग्रामीण बोध और धूमिल की कविता 6. धूमिल की कविता में देश की तस्वीर, 7. धूमिल का कविता सम्बन्धी दृष्टिकोण 8.लम्बी कविता की परम्परा और ‘पटकथा’, 9. धूमिल की कविता का अभिव्यंजना-कौशल
- खण्ड-5 नयी कविता –1**
- इकाई –20 अज्ञेय के काव्य में आधुनिक भाव-बोध**
1. छायावादोत्तर कविता: प्रयोगवाद और नई कविता, 2. अज्ञेय : आत्मबोध और जीवन दृष्टि, ‘आंगन के पार द्वार’ के बाद अज्ञेय 3. अज्ञेय की कविता: आधुनिक बोध और संवेदना, 4. प्रमुख कविताओं के आधार पर अज्ञेय का मूल्यांकन
- इकाई –21 अज्ञेय: काव्य भाषा और काव्यशिल्प**
1. प्रयोगवाद और नयी कविता : काव्यभाषा और काव्यशिल्प, 2. अज्ञेय की काव्यभाषा, 3. काव्यशिल्प, 4. प्रमुख कविताएं : काव्यभाषा और काव्यशिल्प की दृष्टि से मूल्यांकन
- इकाई –22 शमशेर काव्य की विचार भूमि**

इकाई -23 शमशेर की काव्य-संवेदना और शिल्प

1. शमशेर के काव्य की संवेदना के आयाम, 2. शमशेर की कविता : आशंसा के आयाम

खण्ड-6 नयी कविता - II

इकाई -24 अपने समय के आर-पार देखता कवि: रघुवीर सहाय

1. रघुवीर सहाय की कविता: विचारवस्तु के विविध आयाम, 2. समय की अवधारणा, 3. कविता का वैचारिक आयाम, 4. रचनात्मक लक्ष्य : जन पक्षधरता, 5. नारी के प्रति दृष्टिकोण, 6. रघुवीर सहाय की कविता : कुछ वैचारिक सीमाएँ

इकाई -25 रघुवीर सहाय का काव्य-शिल्प

1. रघुवीर सहाय की काव्यभाषा का विकास, 2. रघुवीर सहाय की कविता में छंद, 3. रघुवीर सहाय की काव्यभाषा में लय

इकाई -26 श्रीकांत वर्मा और उनकी कविता

1. श्रीकांत वर्मा की जीवन-दृष्टि और साहित्य-दृष्टि, 2. रचनात्मक संघर्ष का आरंभ, 3. काव्य में व्यक्त राजनीतिक दृष्टि, 4. कविताओं में इतिहास और वर्तमान का द्वंद्व, 5. भाषा और शिल्पगत विशेषताएँ।

नोट :- 1. व्याख्यात्मक प्रश्न पाठ्यक्रम में निहित सभी कवियों की रचनाओं से पूछे जाएँगे जिनका सन्दर्भ, प्रसंग एवं काव्यशास्त्रीय टिप्पणियों सहित उत्तर देना होगा।

2. कविताओं की व्याख्या सम्बन्धी पाठ्यक्रम जानने हेतु रीडर - 'आधुनिक काव्य विविधा' का अवलोकन करें।

MAHI - 02

उपन्यास एवं कहानी

खण्ड—1 'गोदान'— प्रेमचंद

इकाई —01 किसान जीवन के परिप्रेक्ष्य में गोदान

1. गोदान उपन्यास की कथायोजना, 2. गोदान में भारतीय किसानों की वेदना की अभिव्यक्ति, 3. गोदान के पाठक, 4. गोदान में गाय का महत्व, 5. किसानों का आर्थिक—सामाजिक शोषण, 6. होरी का स्थितियों से समझौता

इकाई —02 राष्ट्रीय आन्दोलन के संदर्भ में गोदान

1. गोदान में उपस्थित राष्ट्रीय आंदोलन, 2. किसान जीवन में राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव, 3. 'शहरी' जीवन में राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रभाव, 4. गोदान में स्वतंत्र भारत की कल्पना, 5. 'गोदान' और प्रेमचंद की जनतांत्रिक दृष्टि

इकाई —03 'गोदान' में नारी चरित्र

1. नारी जीवन के प्रति प्रेमचंद का दृष्टिकोण, 2. चरित्र—चित्रण की विधि और नारी चित्रण, 3. 'गोदान' में प्रस्तुत किसान नारी पात्र, 4. 'गोदान' में चित्रित मध्यवर्गीय नारी पात्र, 5. जातिव्यवस्था और दलित नारी का उत्पीड़न, 6. प्रेमचंद की दृष्टि में नारीत्व की अवधारणा

खण्ड —2 'धरती धन न अपना' : जगदीश चंद्र 'सूखा बरगद' : मंजूर एहतेशाम

इकाई —04 धरती धन न अपना : दलित जीवन की त्रासदी के संदर्भ में

1. धरती धन न अपना: कथासूत्र 2. धरती धन न अपना में अंकित दलित जीवन के पहलू 3. धरती धन न अपना: दलित जीवन त्रासदी के संदर्भ

इकाई —05 "धरती धन न अपना" चित्रांकन और आंचलिक पहलू

1. चरित्रांकन, 2. 'धरती धन न अपना' : आंचलिक पहलू

इकाई —06 सूखा बरगद : मध्यवर्गीय मुस्लिम समाज की मानसिकता

1. मध्यवर्गीय अतीत मोह, 2. रूढ़ियों और नए मूल्यों का द्वंद्व, 3. मुस्लिम मध्य वर्ग : सामाजिक—आर्थिक संघर्ष, 4. मध्यवर्गीय नारी का बदलता बिम्ब, 5. सकारात्मक धर्मनिरपेक्ष सोच

- इकाई –07 सूखा बरगद : अल्पसंख्यक समाज में असुरक्षा की भावना**
 1. देश विभाजन की प्रतिध्वनि, 2. मुसलमानों की आत्मकेन्द्रित मानसिकता, 3. इतिहास की गलत प्रस्तुति और भ्रामक समझ, 4. मिथ्या आरोपों का निराकरण, 5. कथ्यगत नवीनता
- खण्ड—3 मैला आंचल : फणीश्वरनाथ रेणु, बालभट्ट की आत्मकथा: हजारी प्रसाद द्विवेदी**
- इकाई –08 मैला आंचल और आंचलिक उपन्यास की अवधारणा**
 1. आंचलिकता और आंचलिक उपन्यास, 2. मैला आंचल: आंचलिक संदर्भ, 3. मैला आंचल : आंचलिकता के विविध रंग
- इकाई –09 मैला आंचल : राजनीतिक संदर्भ**
- इकाई –10 मैला आंचल: भाषा और शिल्प**
 1. मैला आंचल : संरचना शिल्प, 2. मैला आंचल : भाषा शिल्प
- इकाई –11 बाणभट्ट की आत्मकथा : भारतीय जीवनदृष्टि**
 1. बाणभट्ट की आत्मकथा : जीवन दृष्टि, 2. बाणभट्ट की आत्मकथा : संरचना और शैली, 3. संवाद योजना, 4. विशिष्ट प्रसंग निर्मिति
- इकाई –12 बाणभट्ट की आत्मकथा का शिल्प**
 1. आत्मकथात्मकता, 2. रोमांस के तत्व, 3. इतिहास और कल्पना का सर्जनात्मक मिश्रण
- इकाई –13 बाणभट्ट की आत्मकथा की प्रासंगिकता**
 1. प्रासंगिकता, 2. प्रेम संबंधी दृष्टिकोण, 3. सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ, 4. नारी चेतना के स्वर, 5. मानवता की प्रतिष्ठा, 6. राज्याश्रय और कवि-कलाकार की स्थिति 7. धार्मिक वर्चस्व
- खण्ड—4 कहानी – 1**
- इकाई –14 ठाकुर का कुआँ**
 1. कहानी का आशय, 2. जातिप्रथा और छुआछूत, 3. जातिभेद उन्मूलन और दलित अस्मिता का आंदोलन, 4. अछूत समस्या के प्रति प्रेमचंद का जुड़ाव और प्रतिबद्धता, 5. स्त्री के वर्गगत और जातिगत शोषण का चित्रण
- इकाई –15 पुरस्कार : जयशंकर प्रसाद**
 1. राष्ट्रीय भावना और व्यक्ति चेतना, 2. इच्छा और स्वीकृत मूल्यों का संघर्ष, 3. मधुलिका का अंतर्द्वन्द्व, 4. दो मनोभावों का सामंजस्य, 5. मधुलिका: सबल नारी चरित्र, 6. पुरस्कार का शिल्प

- इकाई –16 कुत्ते की पूँछ : यशपाल**
1. यशपाल की कहानियों में मध्यवर्गीय संदर्भ, 2. 'कुत्ते की पूँछ' कहानी की पृष्ठभूमि, 3. मध्यवर्ग पर व्यंग्य, 4. मध्यवर्ग में छिपे स्वार्थ की अभिव्यक्ति, 5. 'कुत्ते की पूँछ' की भाषा शैली
- इकाई –17 पाजेब : जैनेन्द्र कुमार**
1. बालमनोविज्ञान की कहानी : 'पाजेब', 2. मध्यवर्ग : भौतिक वस्तुओं के प्रति आसक्ति 3. मध्यवर्गीय मानसिकता और बदलते नैतिक मूल्य, 4. कहानी का शिल्प
- इकाई –18 'रोज' : अज्ञेय**
1. स्त्री जीवन को यांत्रिकता में बदलते परम्परागत तथ्य, 2. स्त्री की सामाजिक स्थिति 3. कहानी का शिल्प
- खण्ड-5 समकालीन कहानी**
- इकाई –19 पिता : ज्ञानरंजन**
1. नयी कहानी : नए और पुराने मूल्यों का द्वन्द्व, 2. साठोत्तरी कहानी का भावबोध, 3. पारिवारिक संबंधों के बदलते स्वरूप, 4. सामाजिक यथार्थ 5. कहानी की संरचना
- इकाई –20 तिरिछ**
1. कहानी का आशय, 2. कहानी में अभिव्यक्त यथार्थ की प्रासंगिकता, 3. शहरी आधुनिकता में लुप्त होती मानवीय संवेदना, 4. 'तिरिछ' और 'पिता' कहानी के पिता की तुलना
- इकाई –21 त्रिशंकु : मन्नू भण्डारी**
1. नई कहानी : आन्दोलन, 2. मन्नू भण्डारी की कहानियाँ और नई कहानी, 3. परंपरागत मूल्यों से मुक्ति की छटपटाहट, 4. मन्नू भण्डारी की नारी दृष्टि 5. मन्नू भण्डारी की 'त्रिशंकु' : पाठ बोध और प्रक्रिया
- इकाई –22 'चीफ की दावत': भीष्म साहनी**
1. मध्यवर्गीय अवसरवादिता और मानवीय मूल्यों का विघटन, 2. आधुनिकता, सुसंस्कृति का पाखंड और अवसरवादिता, 3. कहानी का निहित उद्देश्य, 4. कहानी का कलात्मक पक्ष ।
- इकाई –23 कर्मनाशा की हार : शिवप्रसाद सिंह**
1. कर्मनाशा की हार' कहानी का आशय, 2. अंधविश्वास, रूढ़ियों में जकड़ा ग्रामीण समाज, 3. मानवता के बचाव का संघर्ष, 4. नई कहानी में आंचलिकता का आग्रह

इकाई –24 भोलाराम का जीव : हरिशंकर परसाई

1. लेखक की सामाजिक परिवर्तन के प्रति प्रतिबद्धता, 2. परसाई की रचना धर्मिता और व्यंग्य का स्वरूप, 3. भ्रष्ट राजनीति का चरित्र, 4. भाषा शैली—व्यंग्य का सटीक प्रयोग

इकाई –25 एक दिन का मेहमान : निर्मल वर्मा

1. स्त्री पुरुष संबंधों में पड़ती दरार, 2. युगीन यथार्थ और स्त्री अस्मिता बोध की अभिव्यक्ति, 3. संवेदना व शिल्प

इकाई –26 सिक्का बदल गया: कृष्णा सोबती

1. सिक्का बदल गया : कथा और कथ्य, 2. देश—विभाजन और मानवीय संबंधों की कहानी, 3. विभाजन की त्रासदी का अमानवीय अनुभव, 4. साम्प्रदायिकता की विभीषिका 5. विस्थापन से उत्पन्न अलगाव की यंत्रणा

इकाई –27 यह अंत नहीं : ओम प्रकाश वाल्मीकि

1. दलित साहित्य – आन्दोलन का उद्भव एवं विकास, 2. हिन्दी साहित्य : दलित कहानी का विकास, 3. दलित चेतना का विकास : 'यह अंत नहीं', 4. दलित स्त्री अस्मिता का संघर्ष, 5. पुलिस और पंचायत राज का जातिवादी चरित्र

नोट: MAHI-02 में व्याख्यात्मक प्रश्न उपन्यासों एवं कहानियों सभी से पूछे जाएंगे जिनका सन्दर्भ एवं प्रसंग सहित उत्तर देना होगा।
2. कहानियों की व्याख्या सम्बन्धी प्रश्नों के लिए रीडर 'हिन्दी कहानी विविधा' का अवलोकन अनिवार्य है।

MAHI - 03

नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

- खण्ड-1 हिन्दी नाटक और रंगमंच - 1**
- इकाई -01 भारतेन्दु की नाट्य दृष्टि और 'अंधेर नगरी'**
1. भारतेन्दु और विभिन्न नाट्य परम्पराएँ, 2. भारतेन्दु की नाट्य संबंधी दृष्टि, 3. भारतेन्दु द्वारा रचित विभिन्न नाटक, 4. अंधेर नगरी की रचना
- इकाई -02 सामाजिक यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में 'अंधेर नगरी'**
1. भारतेन्दु युगीन समय, 2. अंधेर नगरी में व्यक्त यथार्थ, 3. अंधेर नगरी और भारतेन्दु का वैचारिक परिप्रेक्ष्य, 4. व्यंग्य और विडम्बना के रूप में अंधेर नगरी
- इकाई -03 'अंधेर नगरी' का नाट्यशिल्प**
1. अंधेर नगरी : एक प्रहसन के रूप में, 2. अंधेर नगरी के नाट्यशिल्प की विशेषताएँ 3. अंधेर नगरी का रूप - विधान, 4. भाषिक प्रयोग, 5. रंगमंचीय प्रस्तुति
- इकाई -04 जयशंकर प्रसाद की नाट्य दृष्टि और स्कंदगुप्त**
1. प्रसाद की नाट्य संबंधी सोच, 2. प्रसाद की नाट्यकला का मौलिक स्वरूप, 3. 'स्कंदगुप्त' की रचनाशीलता
- इकाई -05 स्कन्दगुप्त में इतिहास दृष्टि और राष्ट्रीय चेतना**
1. स्कंदगुप्त में इतिहास, 2. प्रसाद की इतिहास दृष्टि और वर्तमान संदर्भ, 3. स्कंदगुप्त में इतिहास और कल्पना, 4. स्कंदगुप्त में चरित्र-चित्रण की विशिष्टता, 5. स्कंदगुप्त में रस-विधान और जीवन मूल्य
- इकाई -06 'स्कंदगुप्त' की रंगमंचीय संभावनाएँ**
1. जयशंकर प्रसाद और रंगमंच, 2. स्कंदगुप्त में दृश्य योजना और रंगमंचीयता, 3. स्कंदगुप्त में भाषा, संवाद और अभिनय, 4. स्कंदगुप्त में गीत-सृष्टि
- खण्ड-2 हिन्दी नाटक और रंगमंच - II**
- इकाई -07 मोहन राकेश की नाट्य सृष्टि**
1. मोहन राकेश का नाट्य कर्म, 2. मोहन राकेश का नाट्य-चिंतन, 3. नाटक और रंगमंच के अंतःसंबंधों में संगति, 4. मोहन राकेश और 'आधे अधूरे'

- इकाई -08 सामाजिक यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में 'आधे अधूरे'**
 1. मध्यवर्गीय जीवन और 'आधे अधूरे' का कथ्य, 2. स्त्री-पुरुष : संबंध - विश्लेषण 3. 'आधे अधूरे' में चरित्र सृष्टि, 4. 'आधे अधूरे' का परिवेश, 5. 'आधे अधूरे' की भाषा और संवाद।
- इकाई -09 'आधे अधूरे' का नाट्य शिल्प**
 1. नाट्य संरचना, 2. नाट्य-भाषा और संप्रेषण, 3. वेशभूषा, 4 प्रकाश योजना और ध्वनि संकेत (संगीत), 5. रंगमंचीयता की समस्याएँ और चुनौतियाँ, 6. 'आधे अधूरे' की प्रमुख प्रस्तुतियाँ
- इकाई -10 अंधायुग : मिथकीय आख्यान का पुनःसृजन**
 1. अंधा युग: मिथकीय आख्यान, 2. 'अंधा युग' की कथ्य चेतना, 3. पौराणिक आख्यान का आधुनिक संदर्भ, 4. अंधायुग का राजनीतिक संदर्भ, 5. अंधायुग: बदलते मूल्यों का संकट। 6. 'अंधायुग' पर अस्तित्ववादी जीवन-दर्शन का प्रभाव
- इकाई -11 'अंधायुग' में चरित्र-सृष्टि**
 1. अंधायुग : चरित्र-चित्रण की विधियाँ, 2. 'अंधायुग' के प्रमुख पात्र, 3. 'अंधायुग' के चरित्रों की प्रतीकात्मकता, 4. अंधायुग' में चरित्रों का मूल्यगत संघर्ष
- इकाई -12**
 1. काव्य नाटक के रूप में 'अंधायुग', 2. 'अंधायुग' की भाषा और संवाद योजना 3. 'अंधायुग' में रंगशिल्पगत प्रयोग, 4. 'अंधायुग' की रंग प्रस्तुति
- खण्ड-3 एकांकी और नुक्कड़ नाटक**
- इकाई -13 एकांकी नाटक : ताँबे के कीड़े**
 1. असंगत नाटक की अवधारणा, 2. भुवनेश्वर के एकांकी नाटक, 3. ताँबे के कीड़े की प्रतीक योजना, 4. ताँबे के कीड़े की भाषिक विशेषता, 5. प्रयोगशीलता और अभिनेयता
- इकाई -14 नुक्कड़ नाटक : औरत**
 1. औरत की रचना, 2. औरत की कथावस्तु का विवेचन, 3 औरत का प्रतिपाद्य 4. औरत की रंग प्रस्तुति, 5. औरत का भाषिक विवेचन
- खण्ड-4 गद्य साहित्य की अन्य विधाएँ -।**
- इकाई -15 निबन्ध : धोखा**
 1. प्रतापनारायण मिश्र का लेखकीय व्यक्तित्व, 2. धोखा निबंध की

अंतर्वस्तु, 3. निबंध पर लेखकीय व्यक्तित्व का प्रभाव, 4. निबंध का प्रतिपाद्य, 5. नबंध का भाषिक सौन्दर्य 6. निबंध की शैलीगत विशेषताएँ

इकाई –16 निबन्ध : लोभ और प्रीति

1. रामचन्द्र शुक्ल के भाव और मनोविकार संबंधी निबन्ध, 2. लोभ और प्रीति का वैचारिक पक्ष, 3. लोभ और प्रीति का प्रतिपाद्य 4. लोभ और प्रीति पर लेखकीय व्यक्तित्व का प्रभाव, 5. लोभ और प्रीति पर लेखकीय व्यक्तित्व का प्रभाव, 6. लोभ और प्रीति का संरचना-शिल्प

इकाई –17 निबंध : कुटज

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी और उनका निबंध लेखन, 2. कुटज की अंतर्वस्तु, 3. ललित निबन्ध के रूप में कुटज 4. कुटज की भाषा-शैली

इकाई –18 निबन्ध : संस्कृति और जातीयता

1. संस्कृति और जातीयता की अंतर्वस्तु, 2. हिन्दी जाति की अवधारणा, 3. संस्कृति और जातीयता का मूल्यांकन, 4. लेखकीय व्यक्तित्व का प्रभाव, 5. निबंध की भाषा शैली

इकाई –19 निबन्ध : तीसरे दर्जे का श्रद्धेय

1. हरिशंकर परसाई के लेखन की विशिष्टता, 2. हरिशंकर परसाई का समय और व्यंग्य का महत्व, 3. 'तीसरे दर्जे का श्रद्धेय' की अंतर्वस्तु, 4. 'तीसरे दर्जे का श्रद्धेय' का संरचना-शिल्प, 5 'तीसरे दर्जे का श्रद्धेय' का प्रतिपाद्य

खण्ड-5 गद्य साहित्य की अन्य विधाएँ – II

इकाई –20 रेखाचित्र : ठाकुरी बाबा

1. रेखाचित्र के रूप में ठाकुरी बाबा, 2. ठकुरी बाबा में सामाजिक चेतना, 3. ठकुरी बाबा की भाषा और शिल्प 4. ठकुरी बाबा का मूल्यांकन

इकाई –21 संस्मरण : वसंत का अग्रदूत

1. संस्मरण की अवधारणा, 2. संस्मरण का अन्य साहित्यिक विधाओं से संबंध, 3 हिन्दी में संस्मरण लेखन की परंपरा, 4. वसंत का अग्रदूत की विशिष्टता, 5. वसंत का अग्रदूत की अंतर्वस्तु, 6. वसंत का अग्रदूत का संरचनात्मक वैशिष्ट्य

इकाई –22 जीवन : कलम का सिपाही

1. जीवनी का स्वरूप, 2. जीवनी साहित्य : परंपरा और विकास,

3. कलम का सिपाही : जीवनी साहित्य की अन्यतम उपलब्धि,
4. कलम का सिपाही : शिल्पगत वैशिष्ट्य, 5. कलम का सिपाही का मूल्यांकन

इकाई –23 आत्मकथा : क्या भूलूँ क्या याद करूँ

1. आत्मकथा के रूप में क्या भूलूँ क्या याद करूँ। 2. क्या भूलूँ क्या याद करूँ की अंतर्वस्तु, 3. क्या भूलूँ क्या याद करूँ में लेखक के विचार 4. क्या भूलूँ क्या याद करूँ का संरचना शिल्प 5. क्या भूलूँ क्या याद करूँ का महत्व और उपयोगिता

खण्ड-6 गद्य साहित्य की अन्य विधाएँ-III

इकाई –24 एकांकी नाटक : ताँबे के कीड़े

1. असंगत नाटक की अवधारणा, 2. भुवनेश्वर के एकांकी नाटक,
3. ताँबे के कीड़े की प्रतीक योजना, 4. ताँबे के कीड़े की भाषिक विशेषता, 5. प्रयोगशीलता और अभिनेयता

इकाई –25 रिपोर्टाज : अदम्य जीवन

1. विधा के रूप में रिपोर्टाज, 2. रिपोर्टाज की परंपरा, 3. तूफानों के बीच : एक विहंगम दृष्टि, 4. अदम्य जीवन : मूल संवेदना, 5. अदम्य जीवन : शिल्पगत विशेषताएँ 6. अदम्य जीवन : मूल्यांकन

इकाई –26 साक्षात्कार : आक्टिवियो पॉज

1. साक्षात्कार विधा का वैशिष्ट्य, 2. साक्षात्कारदाता, पात्र के चयन का औचित्य, 3. साक्षात्कार में उठे प्रश्नों का विवेचना, 4. साक्षात्कार की लेखन शैली

- नोट: 1. MAHI-03 में व्याख्यात्मक प्रश्न पाठ्यक्रम में निहित नाटकों, एकांकी, नुक्कड़ नाटक एवं निबन्धों में पूछे जाएँगे जिनका सन्दर्भ और प्रसंग सहित उत्तर देना होगा।
2. 'आधे अधूरे', 'अंधा युग', 'अंधेर नगरी' तथा 'स्कन्द गुप्त' की व्याख्या हेतु मूल रचनाओं एवं 'ताँबे के कीड़े' एकांकी, औरत' नुक्कड़ नाटक तथा निबन्धों के लिए व्याख्यात्मक प्रश्नों हेतु रीडर – 'हिन्दी गद्य विविधा' का अवलोकन करें।

MAHI - 04

हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास

खण्ड -1 हिन्दी साहित्य के इतिहास की भूमिका और आदिकाल

इकाई -01 काल विभाजन नामकरण

1. काल विभाजन की समस्याएँ
2. काल विभाजन के आधार
3. नामकरण के आधार
4. हिन्दी साहित्य में प्रचलित काल विभाग और नामकरण
5. आदिकाल का सीमा निर्धारण
6. आदिकाल का नामकरण
7. भक्तिकाल : काल विभाजन और नामकरण
8. रीतिकाल का सीमा निर्धारण
9. रीतिकाल: नामकरण
10. आधुनिक काल की पृष्ठभूमि
11. आधुनिक संवेदना के आधार

इकाई -02 आदिकाल की पृष्ठभूमि

1. आदिकाल का स्वरूप एवं महत्व
2. अपभ्रंश का स्वरूप और विकास
3. हिन्दी भाषा का विकास
4. अपभ्रंश और हिन्दी के बीच के अंतर का प्रामाणिक आधार
5. आदिकालीन साहित्य की पृष्ठभूमि
6. आदिकालीन साहित्य का वर्गीकरण

इकाई -03 सिद्ध, नाथ और जैन साहित्य

1. सिद्धों का परिचय
2. सिद्ध साहित्य
3. नाथ परम्परा
4. नाथ साहित्य
5. जैन साहित्य
6. जैन साहित्य के प्रकार
7. सिद्ध, नाथ और जैन साहित्य का परवर्ती हिन्दी के विकास में योगदान

इकाई -04 रासो काव्य एवं लौकिक साहित्य

1. रासो साहित्य की प्रामाणिकता और अप्रामाणिकता
2. रासो काव्य की पृष्ठभूमि
3. रासो साहित्य में विचारणीय बिन्दु
4. रासो साहित्य में कथात्मक संरचना
5. रासो साहित्य में वीर गीत
6. रासो काव्य में अभिव्यक्ति कौशल
7. लौकिक साहित्य

खण्ड-2 भक्तिकालीन साहित्य

इकाई -05 भक्तिकाल की पृष्ठभूमि

1. राजनीतिक पृष्ठभूमि
2. आर्थिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि
3. धार्मिक पृष्ठभूमि
4. दार्शनिक पृष्ठभूमि
5. भक्तिकाल का उदय (विभिन्न विद्वानों के मतों की व्याख्या)
6. भक्ति आंदोलन का अखिल भारतीय स्वरूप
7. दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन का उदय
8. भक्ति आंदोलन (वर्णव्यवस्था एवं नारी) आंतरिक अन्तर्विरोध

इकाई -06 निर्गुण ज्ञानमार्गी संत काव्य धारा

1. संत शब्द का अर्थ
2. संत मत
3. संत परम्परा
4. ज्ञानमार्ग : अर्थ एवं दृष्टिकोण
5. प्रमुख संत कवि
6. प्रमुख प्रवृत्तियाँ
7. अभिव्यंजना शिल्प

इकाई –07 निर्गुण प्रेममार्गी (सूफी) काव्यधारा

1. सूफी शब्द का अर्थ
2. सूफी मत और सिद्धान्त
3. प्रेमाख्यान का स्वरूप
4. सूफी काव्य की मूल प्रेरणा
5. सूफी प्रेमाख्यानक काव्य परंपरा
6. भाव व्यंजना तथा रस निरूपण
7. सूफी रहस्यवाद
8. काव्य रूप तथा कथानक रूढ़ियाँ
9. काव्य शैली
10. काव्य भाषा, अलंकार एवं छंद विधा

इकाई –08 कृष्ण भक्ति काव्य

1. कृष्ण का विकास
2. भक्ति चिंतन
3. सगुण भक्ति
4. अष्टछाप
5. शिल्प विधान

इकाई –09 राम भक्ति काव्य

1. रामकाव्य परम्परा
2. रामकथा की प्राचीनता और विरुद्धों में सामंजस्य स्थापित करने की दृष्टि
3. राम भक्तिकाव्य और रामानन्द सम्प्रदाय
4. रामलीला परम्परा का प्रवर्तन
5. राम भक्ति भावना
6. वैष्णव शैव भक्ति आन्दोलन और हिन्दी का भक्ति काव्य
7. हिन्दी साहित्य का भक्ति आन्दोलन : इस्लाम का प्रभाव है या प्रतिक्रिया
8. राम भक्ति काव्य के सामन्तवाद विरोधी मूल्य
9. भक्ति भावना का अर्थ सन्दर्भ
10. रामकाव्य परम्परा में लोकजीवन और लोकसंघर्ष
11. रामकाव्य में समन्वय साधना
12. तुलसी परवर्ती राम काव्य परम्परा

खण्ड-3 रीतिकालीन साहित्य

इकाई –10 रीतिकालीन कविता की पृष्ठभूमि और आधार

1. रीतिकाल का नामकरण और सीमा निर्धारण
2. रीतिकालीन कविता की पृष्ठभूमि
3. रीतिकालीन काव्य का आधार

इकाई –11 रीतिकालीन कविता का स्वरूप

1. रीतिबद्ध काव्य
2. रीतिसिद्ध काव्य
3. रीतिमुक्त काव्य
4. शृंगारेतर काव्य

खण्ड-4 आधुनिक साहित्य – I

इकाई –12 आधुनिक काल के साहित्य की पृष्ठभूमि

1. हिन्दी साहित्य के संदर्भ में आधुनिक काल
2. हिन्दी भाषा और गद्य का उदय
3. समाज सुधार और स्त्री स्वातंत्र्य
4. देश भक्ति और राष्ट्रवाद का विकास
5. पुनरुत्थानवाद, नवजागरण और आधुनिकता

इकाई –13 भारतेन्दु युग

1. नवजागरण और आधुनिक बोध 2. खड़ी बोली और साहित्यिक भाषा के रूप में उसका विकास 3. साहित्यिक भाषा के रूप में खड़ी बोली के उपयोग का प्रारम्भ एवं विकास 4. खड़ी बोली गद्य का विकास 5. भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता और साहित्य 6. भारतेन्दु युगीन गद्य साहित्य 7. भारतेन्दु युगीन कविता

इकाई –14 द्विवेदी युग

1. स्वाधीनता आंदोलन और द्विवेदी युग का मूल चरित्र 2. 'सरस्वती' और महावीर प्रसाद द्विवेदी की भूमिका 3. द्विवेदी युगीन गद्य साहित्य 4. द्विवेदी युगीन कविता

इकाई –15 छायावाद

1. स्वच्छंदतावाद और छायावाद 2. प्रवर्तन का प्रश्न 3. परिभाषा की समस्या 4. छायावाद की मूल प्रवृत्तियाँ

खण्ड—5 आधुनिक साहित्य – II

इकाई –16 उत्तर छायावादी कविता

1. उत्तर छायावादी काव्य की अंतर्वस्तु 2. प्रमुख धाराएँ 3. राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता 4. प्रेम और मस्ती का काव्य 5. उत्तर छायावादी काव्यभाषा व शिल्प 6. प्रमुख कवि

इकाई –17 प्रगतिशील साहित्य

1. प्रगतिशीलता का सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य 2. प्रगतिवादी आंदोलन की पृष्ठभूमि 3. प्रगतिवादी आंदोलन का इतिहास 4. प्रगतिशील साहित्य का उदय 5. प्रगतिशील कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ 6. प्रगतिशील कविता की शिल्पगत प्रवृत्तियाँ

इकाई –18 प्रयोगवाद और नयी कविता

1. प्रयोगवाद 2. प्रयोगवाद से नयी कविता के संबंध की पहचान 3. प्रमुख प्रवृत्तियाँ अ— काव्य संबंधी पुरानी अवधारणा में बदलाव ब— लघु मानव दर्शन में नए व्यक्तित्व की खोज स— काव्य की अर्थभूमि का विस्तार और व्यक्ति स्वातंत्र्य पर बल द— अनुभूति की ईमानदारी और प्रामाणिकता य— रस के प्रतिमान की अप्रासंगिकता र— स्वाधीनता प्राप्ति के बाद का मोहभंग ल— प्रयोग परंपरा और आधुनिकता व— विसंगति और विडम्बना स— अस्तित्ववादी और आधुनिकतावादी स्वर ष— प्रकृति सौन्दर्य पर नई दृष्टि श— काव्य रूप ह— काव्य भाषा क्ष— बिंब और प्रतीकों का नयापन त्र— छंद और लय ज्ञ— मूल्यांकन

इकाई –19 समकालीन कविता

1. समकालीन कविता : स्वरूप और दृष्टि
2. नयी कविता की रूढ़ियों से नए काव्य सृजन में मुक्ति का प्रयास
3. समकालीन कविता और राजनीति का परिदृश्य
4. समकालीनता, तात्कालिकता और परम्परा
5. समकालीन कविता में आधुनिकता का अर्थ सन्दर्भ
6. समकालीन कविता : परिदृश्य की विशालता
7. समकालीन काव्य – सृजन की मूल प्रवृत्तियाँ या विशेषताएँ
8. समकालीन कविता का शिल्प पक्ष

खण्ड-6 आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य

इकाई –20 हिन्दी कथा साहित्य

1. हिन्दी कहानी
2. समकालीन हिन्दी कहानी दशा एवं दिशा
3. हिन्दी कहानी में दलित चेतना
4. हिन्दी कहानी शिल्प का विकास
5. हिन्दी उपन्यास
6. हिन्दी उपन्यास में दलित चेतना
7. हिन्दी उपन्यास – शिल्प का विकास

इकाई –21 हिन्दी नाट्य साहित्य

1. आधुनिक नाटक रचना में संघर्ष एवं अंतर्द्वन्द्व
2. हिन्दी नाटक का विकास
3. नया नाटक
4. जनवादी नाटक
5. नुक्कड़ नाटक

इकाई –22 हिन्दी आलोचना

1. आधुनिक हिन्दी आलोचना की आरम्भिक स्थिति
2. शुक्लोत्तर हिन्दी आलोचना
3. स्वतंत्रयोत्तर हिन्दी आलोचना
4. हिन्दी आलोचना की वर्तमान स्थिति

इकाई –23 निबंध एवं अन्य गद्य विधाएँ

1. निबंध का विकास
2. अन्य गद्य विधाएँ

इकाई –24 उर्दू साहित्य का परिचय

1. उर्दू भाषा की उत्पत्ति
2. उर्दू साहित्य लेखन पद्य
3. दिल्ली में उर्दू साहित्य का पुनःजागरण
4. नजीर अकबराबादी तथा उर्दू साहित्य में नई धारा का विकास
5. उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में दिल्ली से बाहर उर्दू काव्य का विकास
6. उर्दू साहित्य में गद्य लेखन
7. उर्दू साहित्य का विकास केन्द्र : फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना एवं नयी गद्य शैली
8. उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध का उर्दू गद्य साहित्य
9. स्वतंत्रता आंदोलन का प्रारम्भिक काल एवं उर्दू काव्य
10. उर्दू साहित्य में नई विचारधाराओं का आगमन
11. उर्दू साहित्य में शोधकार्य

खण्ड-7 भारतीय आर्य भाषाएँ

इकाई -25 विश्व की भाषाएँ और भारतीय भाषा परिवार

1. संसार की भाषाएँ
2. भारत के भाषा परिवार और प्रमुख भाषाएँ
3. आर्यभाषा परिवार
4. द्रविड़ परिवार
5. ऑस्ट्रो एशियाई (मुंडा) परिवार
6. तिब्बती-बर्मी परिवार
7. भारतीय भाषा क्षेत्र की परिकल्पना

इकाई -26 भारोपीय परिवार और भारतीय आर्य भाषाएँ

1. भारोपीय परिवार की भाषाएँ
2. भारतीय आर्यभाषाएँ
3. भारतीय आर्यभाषाओं का वर्गीकरण
4. भारतीय आर्यभाषाओं की विशेषताएँ

इकाई -27 संस्कृत से अपभ्रंश तक

1. संस्कृत
2. पालि
3. प्राकृत
4. अपभ्रंश

इकाई -28 आधुनिक आर्य भाषाएँ और हिन्दी

1. आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास, क्षेत्र और परिचय
2. आधुनिक आर्य भाषाओं का वर्गीकरण
3. आधुनिक आर्य भाषाओं की विशेषताएँ
4. हिन्दी भाषा क्षेत्र और बोलियों का विभाजन
5. बोलियों और भाषाओं की विशेषताएँ

खण्ड-8 हिन्दी भाषा का विकास

इकाई -29 हिन्दी भाषा का प्रारंभिक विकास

1. प्रारंभिक हिन्दी (पुरानी हिन्दी)
2. हिंदवी/हिंदुई - साहित्यिक रूप
3. हिंदी की बोलियों का विकास (i) अवधी का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास (ii) ब्रजभाषा का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास (iii) हिन्दी की बोलियों में अंतःसंबंध
4. खड़ी बोली का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास
5. उर्दू

इकाई -30 आधुनिक युग में हिन्दी भाषा का विकास

1. फोर्ट विलियम कालेज
2. हिन्दी की पत्रकारिता
3. राजा द्वय-राजा शिव प्रसाद सिंह तथा राजा लक्ष्मण सिंह
4. भारतेन्दु युग
5. द्विवेदी युग
6. हिन्दी के बढ़ते चरण

इकाई -31 हिन्दी के बढ़ते चरण

1. संविधान में हिन्दी - प्रयोजनमूलक हिन्दी
2. हिन्दी की भूमिकाएँ
3. हिन्दी भाषा का विकास
4. मानकीकरण का सवाल

इकाई -32 देवनागरी लिपि का विकास

1. लिपि क्या है?
2. प्राचीन भारत की लिपियाँ
3. ब्राह्मी लिपि और देवनागरी का विकास
4. देवनागरी लिपि
5. मानक देवनागरी - स्थिति और समस्याएँ

आधुनिक गद्य MAHI - 06

।-उपन्यास : स्वरूप और विकास

खण्ड-1 उपन्यास के सिद्धान्त और स्वरूप-1

इकाई -01 आख्यान के विभिन्न रूप और उपन्यास

1. आख्यान : अर्थ और परंपरा 2. उपन्यास विधा : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य 3. उपन्यास के विविध भारतीय पर्याय 4. उपन्यास और यथार्थ का संबंध 5. उपन्यास की लोकप्रियता 6. उपन्यास और पाठक वर्ग 7. उपन्यास के विविध रूप

इकाई -02 उपन्यास का अर्थ और स्वरूप

1. उपन्यास का अर्थ 2. उपन्यास के विभिन्न नामांतरण 3. उपन्यास में यथार्थ और संभाव्यता 4. उपन्यास में यथार्थ की अभिव्यक्ति के विभिन्न रूप 5. यथार्थवाद और उपन्यास

इकाई -03 उपन्यास का उदय और उसके कारण

1. उन्नीसवीं सदी में उपन्यास 2. उपन्यास के उदय के कारण 3. नये पाठक वर्ग का उदय 4. उपन्यास में देशकाल 5. किसान चेतना और स्त्री चेतना 6. उपन्यास में नायकत्व की संकल्पना

इकाई -04 उपन्यास और अन्य विधाएँ

1. उपन्यास और महाकाव्य 2. उपन्यास और अन्य गद्य रूप 3. उपन्यास और कहानी 4. उपन्यास और आत्मकथा 5. उपन्यास और जीवनी 6. दृश्य माध्यमों के विकास का उपन्यास पर प्रभाव

खण्ड-2 उपन्यास के सिद्धान्त और स्वरूप-2

इकाई -01 उपन्यास वस्तु और शिल्प

1. उपन्यास की अंतर्वस्तु 2. उपन्यास : पात्रों का विकास 3. औपन्यासिक संरचना 4. शिल्पगत वैशिष्ट्य का आधार

इकाई -02 उपन्यास की भाषिक संरचना

1. भाषा : रचनात्मक माध्यम 2. उपन्यास की भाषा 3. औपन्यासिक भाषा की विशिष्टता 4. बोलचाल की भाषा के विविध रंग-रूप 5. काव्य भाषा के उपकरणों का प्रयोग

इकाई -03 उपन्यास : वर्गीकरण और उसके विभिन्न आधार

1. उपन्यास की रचना क्यों: वर्गीकरण के आधार 2. रचना का उद्देश्य 3. कथावस्तु का स्वरूप 4. चरित्रों के आधार पर 5. शैली के आधार पर 6. जीवन दृष्टि के आधार पर

इकाई -04 उपन्यास की आलोचना दृष्टियाँ

1. उपन्यास की आलोचना का वैचारिक आधार 2. उपन्यास और यथार्थवाद 3. उपन्यास और प्रकृतवाद 4. उपन्यास की समाजशास्त्रीय आलोचना

खण्ड-3 विश्व साहित्य में उपन्यास

इकाई -01 विश्व साहित्य में उपन्यास का उदय

1. विश्व में उपन्यास के उदय की प्रक्रिया 2. पूंजी और उपन्यास का अंतःसंबंध 3. प्रारंभिक उपन्यास और यात्रा की बहुस्तरीयता 4. इंग्लैण्ड का लोकतांत्रिक उभार और उपन्यास 5. एक नये ढंग की गद्यकृति : पिलग्रिम्स प्रोग्रेस 6. राबिन्सन क्रासो : यात्रा विवरण की औपन्यासिक अर्थवत्ता 7. अंग्रेजी उपन्यास और अठारहवीं सदी

इकाई -02 उन्नीसवीं सदी के यूरोपीय उपन्यास - I

1. फ्रांसीसी उपन्यास : पृष्ठ भूमि और प्रारम्भिक रूप 2. फ्रांसीसी कथा के अन्य लेखक : प्रकृतवाद और फलावेयर 3. यथार्थवाद और प्रकृतवाद के बीच अन्तर 4. प्रकृतवाद और जोला

इकाई -03 उन्नीसवीं सदी के यूरोपीय उपन्यास - II

1. उन्नीसवीं सदी के रूसी उपन्यास 2. जर्मन उपन्यास लेखन 3. उन्नीसवीं सदी के अंग्रेजी उपन्यास 4. अंग्रेजी उपन्यास में नारी अनुभव और चेतना का उभार 5. उपन्यास और सामाजिक गतिमयता : अंतःसंबंध

इकाई -04 बीसवीं सदी के उपन्यास

1. अमरीकी उपन्यास : पृष्ठभूमि 2. बीसवीं सदी का उपन्यास साहित्य 3. प्रथम विश्व युद्ध और उपन्यास में बदलाव 4. उद्योगवाद का आलोचक उपन्यासकार डी0 एच0 लारेंस 5. उपन्यास में मनोवैज्ञानिक आयाम 6. साम्राज्यवाद के सीधे प्रभाव से उत्पन्न उपन्यास 7. तीसरी दुनिया के उपन्यास

खण्ड -4 भारतीय साहित्य में उपन्यास

इकाई -01 भारतीय उपन्यास की अवधारणा

1. आधुनिकता और जातीयता का द्वंद्व 2. भारतीयता का अर्थ-संदर्भ 3. उपन्यास में भारतीयता 4. जातीय उपन्यास बनाम भारतीय उपन्यास 5. राष्ट्रीय रूपक के रूप में भारतीय उपन्यास 6. भारतीय उपन्यासों में स्थानीयता 7. भारतीय उपन्यास में जातीय चेतना 8. भारतीय उपन्यास में राजनीतिक संदर्भ

- इकाई –02 नवजागरण और भारतीय उपन्यास**
 1. भारतीय नवजागरण 2. भारतीय उपन्यास का उदय 3. भारतीय उपन्यासों में नवजागरण की अभिव्यक्ति
- इकाई –03 राष्ट्रीय आन्दोलन और भारतीय उपन्यास**
 1. औपनिवेशिक शासन और राष्ट्रीय आंदोलन 2. भारतीय उपन्यास और राष्ट्रीय चेतना
- इकाई –04 स्वातंत्र्योत्तर भारतीय उपन्यास**
 1. आजाद भारत का सच 2. भारतीय उपन्यास : युग को पहचानने का प्रयास 3. देश विभाजन और साम्प्रदायिकता 4. ग्रामीण जीवन का यथार्थ 5. दलित जीवन की त्रासदी 6. नारी मुक्ति और सबलीकरण 7. नगरीय परिवेश और नगरीय बोध 8. उपन्यास में इतिहास और मिथक 9. राजनीति और जीवन के अन्य रंग
- खण्ड—5 हिन्दी साहित्य में उपन्यास**
- इकाई –01 नवजागरण और हिन्दी उपन्यास का उदय**
 1. नवजागरण की अवधारणा 2. नवजागरण के विभिन्न संदर्भ 3. हिन्दी भाषी क्षेत्र में नवजागरण 4. हिन्दी उपन्यास के उदय में नवजागरण का योगदान 5. हिन्दी के आरंभिक उपन्यासों में नवजागरण की अभिव्यक्ति 6. प्रेमचंद के उपन्यास
- इकाई –02 राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन और हिन्दी उपन्यास**
 1. राष्ट्रीयता की अवधारणा तथा राष्ट्रीय आन्दोलन की स्थिति 2. राष्ट्रीय चेतना और नवजागरण का अंतःसंबंध 3. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन की अभिव्यक्ति
- इकाई –03 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास**
 1. स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक— राजनीतिक परिदृश्य 2. किसान मजदूर और निम्नवर्ग से संबद्ध उपन्यास 3. उच्च और मध्यवर्गीय जीवन से संबद्ध उपन्यास 4. मनोवैज्ञानिक उपन्यास 5. ऐतिहासिक और मिथकीय उपन्यास 6. आंचलिक उपन्यास 7. दलित जीवन और नारी मुक्ति से संबद्ध उपन्यास 8. उत्तरशती में हिन्दी उपन्यास की स्थिति
- इकाई –04 हिन्दी उपन्यास – आलोचना का विकास**
 1. हिन्दी उपन्यास का उदय और आलोचना की स्थिति 2. प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यासों की आलोचना 3. प्रेमचंद और उनके समकालीन उपन्यासों की आलोचना 4. स्वातंत्र्योत्तर समीक्षा और उपन्यास संबंधी आलोचना

MAHI - 07

हिन्दी काव्य (आदि काव्य, भक्ति काव्य एवं रीति काव्य)

खण्ड –1 आदि काव्य

इकाई –01 पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता, भाषा और काव्यरूप

1. पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता
2. पृथ्वीराज रासो की भाषा
3. पृथ्वीराज रासो का काव्य रूप

इकाई –02 पृथ्वीराज रासो का काव्यत्व

1. विषय वस्तु
2. काव्य कौशल

इकाई –02 विद्यापति और उनका युग

1. विद्यापति का युग
2. विद्यापति की भाषा

इकाई –04 गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली

1. गीतिकाव्य और विद्यापति
2. गीतिकाव्य के रूप में विद्यापति पदावली की विशेषताएँ
3. विद्यापति पदावली में भक्ति और श्रृंगार का द्वन्द्व
4. विद्यापति पदावली की भाषा
5. परवर्ती काव्यधारा में विद्यापति का प्रभाव

खण्ड –2 भक्ति काव्य –01 (निर्गुण काव्य)

इकाई –05 कबीर की विचार चेतना और प्रासंगिकता

1. कबीर साहित्य के मूल्यांकन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
2. आज के संदर्भ में कबीर का मूल्यांकन
3. कबीर पर सिद्धों और नाथों का प्रभाव
4. कबीर का दर्शन

इकाई –06 कबीर का काव्य शिल्प

1. कबीर की भाषा के विभिन्न रूप
2. कबीर की भाषा में व्यंग्य
3. कबीर के काव्य में भाव सौन्दर्य और कलात्मक सौष्टव

इकाई –07 सूफी मत और जायसी का पदमावत

1. सूफीमत
2. जायसी और सूफीमत
3. कवि जायसी और उनका पदमावत

इकाई –08 पदमावत में लोक परंपरा और लोक जीवन

1. भारतीय काव्य परंपरा और फारसी काव्य परंपरा
2. हिन्दी प्रेमाख्यान
3. पदमावत में प्रेम कथा
4. पदमावत की प्रबंधात्मकता
5. पदमावत में लोकतत्व
6. जायसी की भाषा

- इकाई –09 भक्ति आन्दोलनके संदर्भ में सूर काव्य का महत्व**
1. महाकाव्य सूरदास और उनका युग
 2. अष्टछाप और सूरदास
 3. भक्ति आन्दोलन और सूरदास
 4. सूर काव्य में प्रेमाभक्ति
 5. सूरदास की भाषा और रूप विधान
- इकाई –10 सूरदास के काव्य में प्रेम**
1. सूर के काव्य में प्रेमानुभूति
 2. सूर का वात्सल्य वर्णन
 3. सूर काव्य में श्रृंगार
 4. सूर की नयी उद्भावनाएँ
 5. सूर का प्रकृति-वर्णन
- इकाई –11 मीरा का काव्य और समाज**
1. मीरा कालीन रूढ़िगत सामंती समाज और नारी पराधीनता
 2. मीरा का सामंती रूढ़ियों के प्रति विद्रोह
 3. मीरा का जीवन-संघर्ष
 4. कृष्ण के प्रति मीरा की भक्ति
 5. मीरा के गिरधर नागर
 6. मीरा का विरह-वर्णन
- इकाई –12 मीरा का काव्य सौन्दर्य**
1. मीरा की कविता का विषय
 2. मीरा की कविता में प्रेमानुभूति और प्रेम विह्वलता का चित्रण
 3. मीरा की भाषा
 4. मीरा की कविता का शिल्प-विधान
- इकाई –13 तुलसी के काव्य में युग संदर्भ**
1. तुलसी के काव्य में तत्कालीन समाज
 2. तुलसी की विचारधारा
 3. तुलसी की राजनीतिक चेतना और राम राज्य की परिकल्पना
- इकाई –14 एक कवि के रूप में तुलसीदास**
1. कविता के बारे में तुलसीदास के विचार
 2. मर्मस्पर्शी जीवन प्रसंगों का चित्रण
 3. तुलसी के काव्य में चित्रित विस्तृत जीवन फलक
 4. तुलसी की काव्य कला
- खण्ड-4 रीति काव्य**
- इकाई –15 बिहारी के काव्य का महत्व**
1. समकालीन परिवेश
 2. श्रृंगार निरूपण
 3. प्रकृति चित्रण
 4. भक्ति और नीति
 5. मुक्तक काव्य परंपरा और बिहारी
 6. बिहारी की भाषा
- इकाई –16 घनानंद के काव्य में स्वच्छंद चेतना**
1. रीति काव्य परंपरा में घनानंद का महत्व
 2. घनानंद का प्रेम संबंधी दृष्टिकोण
 3. भौतिक प्रेम का आध्यात्मिक प्रेम में विकास
 4. घनानंद का काव्य कौशल
 5. घनानंद की काव्य भाषा
- इकाई –17 पद्माकर की कविता**
1. पृष्ठभूमि
 2. श्रृंगार वर्णन
 3. प्राकृतिक वर्णन
 4. लोकजीवन का चित्रण
 5. काव्य शिल्प
 6. काव्य भाषा

- नोट: 1. MAHI-07 में व्याख्यात्मक प्रश्न आदि काव्य को छोड़कर शेष भक्तिकाव्य एवं रीतिकाव्य के पाठ्यक्रम में निहित सभी कवियों की रचनाओं से पूछे जाएँगे, जिनका सन्दर्भ, प्रसंग एवं काव्यशास्त्रीय टिप्पणियों सहित उत्तर देना होगा।
2. व्याख्या के पाठ्यक्रम हेतु रीडर – 'हिन्दी काव्य विविधा' का अवलोकन करें।

MAHI - 08

हिन्दी उपन्यास

1- प्रेम चन्द का विशेष अध्ययन

- खण्ड-1** प्रेमचन्द : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
- इकाई -01** प्रेमचन्द का व्यक्तित्व एवं जीवन दृष्टि
1. प्रेमचन्द का व्यक्तित्व 2. प्रेमचन्द की जीवन दृष्टि
- इकाई -02** प्रेम चन्द का साहित्य
1. प्रेम चन्द का कथा-साहित्य 2. प्रेमचन्द के नाटक 3. विविध साहित्य 4. वैचारिक साहित्य
- इकाई -03** प्रेमचन्द की साहित्यिक मान्यताएँ
- इकाई -04** प्रेमचन्द के उपन्यास और हिन्दी आलोचना
1. प्रेमचन्द की समकालीन आलोचना 2. परवर्ती आलोचना (1936-60) 3. सन साठ के बाद क आलोचना 4. सन अस्सी के बाद की आलोचना
- खण्ड-2** सेवासदन
- इकाई -05** सेवासदन : अंतर्वस्तु का विश्लेषण
1. 'सेवासदन' युगीन भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य
2. भारतीय समाज की वर्ग संरचना और मध्यवर्ग की स्थिति
3. प्रेमचन्द की सामाजिक चिन्ता : नारी मुक्ति के संदर्भ में
4. 'सेवासदन' में विवाह-संस्था 5. विधवा-समस्या 6. वेश्या-समस्या
7. 'सेवासदन'में अभिव्यक्त अन्य समस्याएँ
- इकाई -06** सेवासदन : शिल्प संरचना (औपन्यासिक शिल्प)
1. वस्तु और रूप का संबंध 2. शिल्प की तलाश का प्रश्न
3. 'सेवासदन' का वस्तु संगठन और उसकी औपन्यासिकता 4. पात्र संरचना और भाषा की समस्या 5. प्रभावान्विती का प्रश्न और शीर्षक की सार्थकता 6. प्रेमचन्द की रचना-दृष्टि
- इकाई -07** सेवासदन की नायिका (सुमन)
1. सुमन : दरोगा कृष्णचन्द्र की कन्या के रूप में 2. सुमन : पं. गजाधर की पत्नी के रूप में 3. सुमन : वेश्या के रूप में 4. सुमन : विधवाश्रम की सेविका के रूप में 5. सुमन : परिवार की सदस्या के रूप में 6. सुमन : सेवासदन की संचालिका के रूप में 7. सुमन के चरित्रांकन में निहित प्रेमचंद का उद्देश्य

- इकाई –08 प्रेमाश्रम और कृषि-समस्या**
1. प्रेमाश्रम के रचनाकाल में खेतिहर समाज की स्थिति और गति
 2. समस्या का अवलोकन बिन्दु
 3. समस्या के विभिन्न पहलुओं की शिनाख्त
 4. समस्या का समाधान
- इकाई –09 प्रेमाश्रमयुगीन भारतीय समाज और प्रेमचन्द का आदर्शवाद**
1. प्रेमचन्द की उपन्यास दृष्टि : आदर्शोन्मुख यथार्थवाद
 2. प्रेमाश्रम में तत्कालीन समाज की तस्वीर
 3. कथाकार का आदर्शवाद
- इकाई –10 'प्रेमाश्रम' का औपन्यासिक शिल्प**
1. 'प्रेमाश्रम' की कथावस्तु एवं कथा संयोजन
 2. 'प्रेमाश्रम' में सामाजिक-सांस्कृतिक चित्रण
 3. 'प्रेमाश्रम' की पात्र योजना
 4. भाषिक-योजना
- इकाई –11 ज्ञानशंकर का चरित्र**
1. ज्ञानशंकर के चरित्र : विधान में प्रेमचंद की दृष्टि
 2. प्रमुख पारिवारिक सदस्यों के साथ ज्ञानशंकर का संबंध
 3. ज्ञान शंकर : एक जमींदार के रूप में
 4. ज्ञान शंकर की चारित्रिक विशेषताएँ
 5. ज्ञान शंकर की जीवन-दृष्टि
- खण्ड-4 रंगभूमि**
- इकाई –12 'रंगभूमि' और औद्योगीकरण की समस्या**
1. औद्योगीकरण तथा भारत में उसका महत्व
 2. उपन्यास की मुख्य विषय-वस्तु
 3. अंग्रेजी राज की भूमिका
- इकाई –13 'रंगभूमि' पर स्वाधीनता आंदोलन और गाँधीवाद का प्रभाव**
1. स्वाधीनता आंदोलन का स्वरूप एवं पृष्ठभूमि
 2. 'रंगभूमि' में अंग्रेज
 3. अंग्रेजों के समर्थकों की स्थिति
 4. 'रंगभूमि' में स्वाधीनता आंदोलन
 5. सूरदास और असहयोग
- इकाई –14 'रंगभूमि' का औपन्यासिक शिल्प**
1. 'रंगभूमि' में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद
 2. प्रेमचन्द की वर्णन कला
 3. रंगभूमि का ढांचा
 4. रंगभूमि के पाठक
 5. भाषिक संरचना
- इकाई –15 सूरदास का चरित्र**
1. 'रंगभूमि' में सूरदास का स्थान एवं महत्व
 2. सूरदास और गाँधीजी
 3. सूरदास की विशिष्टता
- इकाई –16 'गबन' और राष्ट्रीय आन्दोलन**
1. प्रेमचन्द की रचना का उद्देश्य और 'गबन'
 2. 'गबन' में राष्ट्रीय आन्दोलन के चित्रण का ऐतिहासिक संदर्भ
 3. 'गबन' और

राष्ट्रीय आन्दोलन में मध्यवर्ग की भूमिका 4. 'गबन' और राष्ट्रीय आन्दोलन में निम्न वर्गों की दृष्टि 5. 'गबन' में चित्रित राष्ट्रीय आन्दोलन और महिलाएँ 6. राष्ट्रीय आन्दोलन में पुलिस तथा नौकरशाही की भूमिका का चित्रण

इकाई -17 'गबन' और मध्यर्गीय समाज

1. 'गबन' का रचनात्मक उद्देश्य 2. मध्यवर्गीय परिवार की कथा 3. 'गबन' के पात्र

इकाई -18 'गबन' का औपन्यासिक शिल्प

1. उपन्यास का ढाँचा : कथानक 2. 'गबन' का कथानक : घटना प्रधान, चरित्र प्रधान या नाटकीय 3. शिल्प की प्रविधियाँ 4. आदर्शान्मुख यथार्थवाद 5. 'गबन' की भाषा।

हिन्दी उपन्यास

II प्रेमचन्दोत्तर

खण्ड-1 झूठा सच

इकाई -01 यशपाल का उपन्यास साहित्य और 'झूठा सच'

1. दादा कॉमरेड 2. देशद्रोही 3. दिव्या 4. पार्टी कॉमरेड 5. मनुष्य के रूप 6. अमिता 7. झूठा सच 8. 'झूठा सच' के बाद के तीन लघु उपन्यास बारह घंटे, अप्सरा का श्राप और क्यों फँसे 9. मेरी तेरी उसकी बात

इकाई -02 देश का विभाजन और झूठा सच

1. विभाजन और ब्रिटिश सरकार की साम्राज्यवादी नीति 2. विभाजन की राजनैतिक पृष्ठभूमि 3. विभाजन सम्बन्धी अन्य उपन्यास और 'झूठा सच' 4. विभाजन से प्रभावित पंजाब और उसके सामाजिक जन जीवन का अंकन 5. सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, साझा संस्कृति की विरासत

इकाई -03 देश का भविष्य और 'झूठा सच'

1. मोहभंग की व्यापकता 2. सत्ता की राजनीति और कांग्रेसी अवसरवाद 3. पुनर्वास का संघर्ष और प्रक्रिया 4. राजनैतिक मूल्यहीनता के अन्य रूप 5. सरलीकृत आशावाद के अरोप पर विचार 6. उपन्यास के धारावाहिक प्रकाशन के प्रभाव की पड़ताल

इकाई -04 औपन्यासिक महाकाव्य के रूप में 'झूठा सच'

1. औपन्यासिक महाकाव्य की अवधारणा: युगाभिव्यक्ति 2. व्यापकता

का संदर्भ 3. जीवन का विस्तार, वैविध्य और सघनता 4. जनजीवन का अंकन 5. कवि दृष्टि के अभाव का आरोप 6. युग की अभिव्यक्ति और समय की कसौटी

खण्ड-2 जिन्दगीनामा

इकाई -05 कृष्णा सोबती का कथा साहित्य और 'जिन्दगीनामा'

1. कृष्णा सोबती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व 2. कृष्णा सोबती का कथा साहित्य 3. कृष्णा सोबती का जिन्दगीनामा

इकाई -06 'जिन्दगीनामा' उपन्यास की अन्तर्वस्तु और कथा-शिल्प

1. अन्तर्वस्तु और कथाशिल्प का महत्व 2. 'जिन्दगीनामा' : अन्तर्वस्तु 3. 'जिन्दगीनामा' कथा-शिल्प

इकाई -07 'जिन्दगीनामा' : प्रमुख पात्र एवं चरित्र चित्रण

1. चरित्र सृष्टि और जीवन-दृष्टि का महत्व 2. 'जिन्दगीनामा' में चरित्र-सृष्टि 3. 'जिन्दगीनामा' जीवन-दृष्टि

इकाई -08 परिवेश और भाषा

1. परिवेश चित्रण और भाषा सृजन का महत्व 2. जिन्दगीनामा में परिवेश चित्रण 3. जिन्दगीनामा : भाषा सृजन

खण्ड-3 सूरज का सातवाँ घोड़ा

इकाई -09 धर्मवीर भारती का कथा साहित्य और 'सूरज का सातवाँ घोड़ा'

1. सूक्ष्म अनुभवपरक धारा के उपन्यास 2. धर्मवीर भारती का कथा साहित्य

इकाई -10 औपन्यासिक शिल्प : 'सूरज का सातवाँ घोड़ा'

1. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' की अन्तर्वस्तु एवं शिल्प संबंधी पृष्ठभूमि 2. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' का वस्तु संगठन 3. पात्र योजना और उसका यथोचित निर्वाह 4. भाषिक शिल्प

इकाई -11 सूरज का सातवाँ घोड़ा : चरित्र सृष्टि

1. चरित्र-चित्रण की प्रविधियाँ 2. स्त्री-पुरुष संबंध और 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' 3. माणिक मुल्ला और कथानक 4. नारी चरित्र-सृष्टि 5. नारी चरित्रों का विद्रोह

इकाई -12 भारतीय की लेखकीय दृष्टि

1. जीवन दृष्टि (समाज और व्यक्ति के प्रति) 2. अन्य रचनाओं में व्यक्त लेखकीय दृष्टि 3. किशोर सुलभ रोमानी (भावुक) दृष्टि की सीमाएँ एवं संभावनाएँ 4. विचार और रचना का समायोजन 5. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' उपन्यास की अंतःप्रेरणा 6. वर्णन

प्रधानता और अनुभवपरकता के सामंजस्य में नवीनता 7. नये शैली-शिल्प का प्रयोग

इकाई -13 स्वातंत्र्योत्तर भारत और 'राग दरबारी'

1. श्रीलाल शुक्ल के अन्य उपन्यास 2. स्वातंत्र्योत्तर भारत का समाज : राजनीतिक परिदृश्य 3. 'राग दरबारी' और स्वातंत्र्योत्तर भारत का यथार्थ

इकाई -14 'राग दरबारी' में व्यंग्य

1. व्यंग्य की परिभाषा और उसकी विभिन्न छायाएँ 2. 'राग दरबारी' में प्रयुक्त व्यंग्य का स्वरूप 3. 'राग दरबारी' का यथार्थ और व्यंग्य शैली की सार्थकता 4. 'राग दरबारी' में प्रयुक्त व्यंग्य की सीमाएँ

इकाई -15 'राग दरबारी' की अन्तर्वस्तु, संरचना-शिल्प और उसकी भाषा

1. 'राग दरबारी' की अन्तर्वस्तु 2 'राग दरबारी' का संरचना-शिल्प 3. व्यंग्य शैली और भाषिक भंगिमा 4. भाषा प्रयोग के विविध रूप

इकाई -16 'राग दरबारी' के पात्र'

1. 'राग दरबारी' एक सामान्य चरित्रोपाख्यान 2. 'राग दरबारी' के विशिष्ट पात्र 3. चरित्रों की प्रतिनिधिकता और अन्य चरित्र 4. 'राग दरबारी' का चरित्र विधान : रचनाकार की मूल्य दृष्टि

MAHI - 09

भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा एवं लिपि

- खण्ड-1 भाषा विज्ञान**
- इकाई -01 भाषा और सम्प्रेषण**
1. सम्प्रेषण क्या है? 2. सम्प्रेषण का स्वरूप 3. सम्प्रेषण साधना
 4. सम्प्रेषण का सामाजिक परिप्रेक्ष्य 5. सम्प्रेषण के बढ़ते चरण
 6. भाषा शिक्षण में सम्प्रेषण का उपागम
- इकाई -02 भारत में भाषा-चिन्तन**
1. वाक् 2 वाक्य 3. क्रिया की संकल्पना 4 पद विचार 5. ध्वनि विवेचन
- इकाई -03 भाषा विज्ञान की पाश्चात्य परंपरा**
1. भाषा विज्ञान का सूत्रपात 2.. तुलनात्मक भाषा विज्ञान
 3. ऐतिहासिक भाषा विज्ञान 4. भाषा परिवर्तन
- इकाई -04 संरचनात्मक भाषाविज्ञान**
1. फर्दिनांद द सस्यूर (1857-1913) 2. लियोनार्ड ब्लूमफील्ड (1887-1949) 3. संरचनात्मक भाषाविज्ञान में विश्लेषण की प्रक्रिया
 4. टैग्मीमिक्स और सिस्टिमिक व्याकरण
- इकाई -05 चॉम्स्की तथा रूपांतरण - निष्पादन व्याकरण**
1. भाषा और व्याकरण की संकल्पना 2. रूपांतरण निष्पादन व्याकरण के अध्ययन की प्रविधि 3. रूपांतरण निष्पादन व्याकरण के दो चरण 4. रूपांतरण निष्पादन व्याकरण की अद्यतन स्थिति
- इकाई -06 समाजभाषाविज्ञान : भाषा और समाज**
1. समाजभाषाविज्ञान 2. सम्पर्क में भाषाएँ 3. भाषा : क्षरण अनुरक्षण और संघर्ष 4. भाषा और सामाजिक सदर्थ 5. हिन्दी में भाषा-वैविध्य
- इकाई -07 हिन्दी भाषा क्षेत्र**
1. हिन्दी भाषा और उसका क्षेत्र 2. हिन्दी की उपभाषाएँ और बोलियाँ 3. हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी 4. हिन्दी के विविध संदर्भ
- खण्ड-2 हिन्दी संरचना**
- इकाई -08 ध्वनि संरचना : हिन्दी की समस्याएँ**
1. ध्वनिविज्ञान 2. खंडेतर ध्वनियाँ 3. स्वनिम विज्ञान तथा निष्पादक स्वनिम विज्ञान 4. हिन्दी की स्वनिमिक समस्याएं
- इकाई -09 रूप, शब्द और पद**
1. रूप की संकल्पना 2. रूपिम की संकल्पना 3. शब्द 4. शब्द के प्रकार 5. शब्द वर्ग 6. पद की संकल्पना
- इकाई -10 वाक्य संरचना - ।**

1. वाक्य विज्ञान 2. वाक्य का स्वरूप 3. वाक्य की संरचना
4. वाक्यात्मक युक्तियाँ
- इकाई -11 वाक्य संरचना - I I**
1. वाक्य विश्लेषण के स्तर 2. वाक्य सांचे 3. आधारभूत वाक्य
4. व्युत्पन्न वाक्य सांचे
- इकाई -12 अर्थ-संरचना**
1. अर्थ की प्रकृति 2. पर्यायता 3. अनेकार्थता 4. विलोमता
5. वाक्य-स्तर पर अर्थ विवेचन
- इकाई -13 प्रोक्ति विश्लेषण**
1. भाषा प्रकार्य 2. प्रोक्ति 3. प्रोक्ति प्ररूप 4. प्रोक्ति विश्लेषण
5 पाठ 6. संसक्ति 7. पाठ्य विश्लेषण
- खण्ड-3 अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान**
- इकाई-14 भाषा आधारित विज्ञान**
1. मनोभाषाविज्ञान 2. बालक में संज्ञानात्मक विकास 3. भाषा अर्जन
4. भाषा अधिगम 5. वाक् विकार
- इकाई -15 भाषा शिक्षण - I**
1. भाषा शिक्षण और भाषा 2. भाषा शिक्षण की प्रमुख विधियाँ
3. भाषा शिक्षण और सामग्री निर्माण 4. भाषा शिक्षण की अधुनातन भूमिका
- इकाई -16 भाषा शिक्षण - II**
1. उद्देश्य केन्द्रित भाषा शिक्षण 2. भाषा शिक्षण और त्रुटि विश्लेषण
3. परीक्षण और मूल्यांकन 4. अभ्यास सामग्री 5. दृश्य-श्रव्य सामग्री
- इकाई -17 अनुवाद**
1. अनुवाद से तात्पर्य 2. भाषाविज्ञान और अनुवाद 3. अनुवाद :
प्रकृति, क्षेत्र, प्रकार तथा उपयोगिता 4. अनुवाद की प्रक्रिया 5. हिन्दी में अनुवाद से संबद्ध समस्याएँ तथा निदान 6. साहित्यिक अनुवाद
- इकाई -18 भाषा तुलना**
1. व्यतिरेकी विश्लेषण 2. भाषा त्रुटि विश्लेषण 3. भाषा तुलना का
भाषावैज्ञानिक पक्ष 4. भाषा तुलना और अनुप्रयोग के क्षेत्र
- इकाई -19 शैली विज्ञान**
1. शैली क्या है? 2. शैली विज्ञान क्या है?
- इकाई -20 कोश -विज्ञान**
1. कोश के विविध नाम 2. कोश विज्ञान और शब्दार्थ विज्ञान 3.
कोशों के प्रकार 4. कोश-निर्माण की प्रक्रिया 5. कोशीय प्रविष्टि की संरचना

MAHI - 10

साहित्य सिद्धान्त और समालोचना

खण्ड-1 साहित्य की अवधारणा

इकाई -01 काव्य लक्षण अथवा काव्य की परिभाषा

1. कवि कर्म से तात्पर्य
2. 'लक्षण' का लक्षण अर्थात् परिभाषा कैसी हो
3. संस्कृत आचार्यों द्वारा दिये गये काव्य लक्षण
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र में काव्य लक्षण
5. आधुनिक हिन्दी साहित्य लक्षण
6. कविता क्या है? नयी बहस का आरम्भ

इकाई-02 काव्य प्रेरणा और काव्य हेतु

1. काव्य सृजन किसी न किसी प्रेरणा और हेतु के परिणाम
2. संस्कृत काव्यशास्त्र में काव्य हेतु पर चर्चा
3. प्रतिभा
4. प्रतिभा और कल्पना
5. पश्चिम और काव्य प्रेरणा संबंधी चर्चा
6. हिन्दी में काव्य प्रेरणा और काव्य हेतु चिन्तन परम्परा
7. समाहार और निष्कर्ष

इकाई -03 काव्य प्रयोजन

1. संस्कृत के आचार्यों कवियों द्वारा निरूपित काव्य प्रयोजन
2. पाश्चात्य चिंतकों रचनाकारों द्वारा निरूपित काव्य प्रयोजन
3. हिन्दी के रचनाकारों आलोचकों के काव्य प्रयोजन से संबंधित विचार
4. मूल्यांकन

इकाई -04 शब्द शक्ति विवेचन

1. व्यापार का अर्थ
2. अभिधा शब्द - शक्ति
3. लक्षणा शब्द - शक्ति
4. व्यंजना शब्द - शक्ति
5. तात्पर्य - वृत्ति

खण्ड-2 भारतीय काव्यशास्त्र : विकास के चरण

इकाई -05 भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख सम्प्रदाय - ।

संस्कृत काव्यशास्त्र की चिन्तन दृष्टि, रस सिद्धान्त (रस संप्रदाय), अलंकार-सिद्धान्त (अलंकार संप्रदाय), रीति-सिद्धान्त (रीति सम्प्रदाय),

इकाई -06 भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख सम्प्रदाय - ।।

ध्वनि सिद्धान्त (ध्वनि सम्प्रदाय), वक्रोक्ति सिद्धान्त (वक्रोक्ति सम्प्रदाय), औचित्य सिद्धान्त (औचित्य सम्प्रदाय) ।

खण्ड-3 रस-चिन्तन के विविध आयाम

इकाई-07 रस की परिभाषा, स्वरूप और रस निष्पत्ति -

'रस' शब्द का अर्थ तथा रस-चिन्तन की परम्परा, रस की परिभाषा,

रस का स्वरूप, करुण रस का आस्वाद, रस की निष्पत्ति (भट्ट लोल्लट का उत्पत्तिवाद या आरोपवाद), शंकुक का अनुमितिवाद, भट्टनायक का भोगवाद, अभिनवगुप्त का अभिव्यक्तिवाद, अभिनवगुप्त के मत का महत्व, रस-सिद्धान्त की शक्ति और सीमाएं।

इकाई—08 साधारणीकरण —

भट्टनायक द्वारा 'साधारणीकरण' शब्द का प्रयोग, साधारणीकरण से भट्टनायक का तात्पर्य, 'भावकत्व व्यापार के स्वरूप' पर विचार, संस्कृत-आचार्यों द्वारा साधारणीकरण की व्याख्या और विवेचन (आचार्य अभिनवगुप्त, आचार्य विश्वनाथ, पण्डितराज जगन्नाथ), हिन्दी विद्वानों द्वारा साधारणीकरण सम्बन्धी चिन्तन और विवेचन (आचार्य रामचन्द्र शुक्ल बाबू गुलाबराय, डा. नगेन्द्र), रस चिन्तन पर नए सन्दर्भों में विचार और साधारणीकरण, पश्चिमी विद्वानों के काव्यानुभूति की प्रक्रिया सम्बन्धी सिद्धान्त, काव्यभाषा और साधारणीकरण, पश्चिम के काव्यानुभूति की प्रक्रिया संबंधी सिद्धान्तों से साधारणीकरण की तुलना।

इकाई—09 काव्य का अधिकारी —

काव्य के अधिकारी के विषय में चर्चा की आवश्यकता, काव्य का अधिकारी कौन?, काव्य के अधिकारी के लिए भारतीय काव्यशास्त्र में प्रयुक्त शब्द, भारतीय काव्यशास्त्र में सहृदय सम्बन्धी चिन्तन, पश्चिमी काव्यशास्त्र में 'काव्य का अधिकारी' काव्य का अधिकारी और आलोचक।

खण्ड—4 पाश्चात्य काव्यशास्त्र —।

इकाई—10 प्लेटो का काव्य चिन्तन —

युग परिचय, व्यक्तित्व, काव्य प्रेरणा और काव्य सत्य, काव्यसत्य और अनुकरण, प्रत्ययवाद से तात्पर्य।

इकाई—11 अरस्तू का साहित्य चिन्तन

अरस्तू का व्यक्तित्व, प्लेटो के आक्षेप और अरस्तू के उत्तर, अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त, त्रासदी, विवेचन सिद्धान्त।

इकाई—12 लॉजाइनस : उदात्त की अवधारणा —

लॉजाइनस और उनका 'पेरिइप्सुस' लॉजाइनस का उदात्त-विवेचन, उदात्त के प्रसंग और पहलू, लॉजाइनस का अवदान।

इकाई—13 जॉन ड्राइडन : युग परिवेश और आलोचना सिद्धान्त

- इकाई—14 स्वच्छन्दतावादी काव्य चिन्तन : वर्ड्सवर्थ और कॉलरिज**
 स्वच्छन्दतावाद की पूर्वपीठिका, आभिजात्यवाद और स्वच्छन्दतावाद, विलियम वर्ड्सवर्थ (कविता की परिभाषा, काव्य भाषा: अर्थ और विकास, वर्ड्सवर्थ की काव्यभाषा विषयक अवधारणा और उसकी आलोचना), सैमुअल टेलर कॉलरिज (कविता की परिभाषा, कल्पना सिद्धान्त)।
- इकाई—15 मैथ्यू आर्नल्ड : कला और नैतिकता**
 काव्य के सम्बन्ध में मैथ्यू आर्नल्ड की धारणा, उनका अवदान एवं उनकी आलोचना दृष्टि का मूल्यांकन
- खण्ड—5 पाश्चात्य काव्यशास्त्र— II**
- इकाई—16 क्रोचे का अभिव्यंजनावाद —**
 वैचारिक पृष्ठभूमि, बेनेदितो क्रोचे का व्यक्तित्व, चेतना तथा उसकी क्रियाएं, अभिव्यंजना सिद्धान्त, सम्बद्ध मान्यताएं, अभिव्यंजनावादी समीक्षा पद्धति, अभिव्यंजनावाद तथा वक्रोक्ति सिद्धान्त की तुलना।
- इकाई—17 टी. एस. इलियट का साहित्य-चिन्तन —**
 युग परिवेश, व्यक्तित्व, रोमांटिक काव्य-मूल्यों का विरोध (प्रभाववादी समीक्षा का विरोध, आलोचना का मूल प्रयोजन : रूचि-परिष्कार, आलोचना रचना केन्द्रित होनी चाहिए रचनाकार केन्द्रित नहीं), परम्परा और व्यक्तिगत प्रज्ञा, निर्व्यक्तकता सिद्धान्त की व्याख्या, मूर्तविधान, इलियट के काव्य चिन्तन के अन्य महत्वपूर्ण पक्ष।
- इकाई—18 आई. ए. रिचर्ड्स का साहित्य चिन्तन —**
 व्यक्तित्व तथा युग परिवेश, मूल्य सिद्धान्त, भाषा सिद्धान्त, अर्थ-मीमांसा-चिन्तन, लच और छन्द।
- इकाई—19 नयी समीक्षा (न्यू क्रिटिसिज्म) के प्रमुख सिद्धान्त —**
 नयी समीक्षा का प्रारम्भ, नामकरण की उपयुक्तता, नयी समीक्षा — प्रमुख स्रोत, युग परिवेश की भूमिका, प्रमुख समीक्षक, विशेष पारिभाषिक शब्द, नयी समीक्षा की प्रमुख प्रवृत्तियां, शक्ति और सीमाएं।
- खण्ड—6 साहित्य सिद्धान्त और विचारधाराएं**
- इकाई—20 आभिजात्यवाद एवं स्वच्छन्दतावाद —**
 अर्थ, परिभाषा, प्रमुख प्रवृत्तियां, इतिहास।
- इकाई—21 मनोविश्लेषणवादी आलोचना —**
 सिग्मण्ड फ्रायड, एल्फ्रेड एडलर, कार्ल गुस्ताफ युंग, सहमति के बिन्दु,

साहित्य, साहित्यालोचन और मनोविश्लेषण का सम्बन्ध, सृजन-प्रक्रिया के मनोरहस्य, प्रतिभा और उन्माद, वैयक्तिक प्रतिभा का मनोविश्लेषणात्मक रूप, मनोविश्लेषण और आलोचना, कला का लक्ष्य : आनन्द और भाव-परिष्कार या उदात्तीकरण, हिन्दी आलोचना पर मनोविश्लेषण का प्रभाव ।

इकाई-22 मार्क्सवादी आलोचना -

वैज्ञानिक विश्व दृष्टिकोण, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद, मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र, इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा, आधार और अधिरचना, पूंजीपति वर्ग और वैश्वीकरण, मार्क्सवादी समालोचना का सृजनात्मक विकास, हिन्दी में मार्क्सवादी समालोचना ।

इकाई-23 साहित्य चिन्तन के विविध वाद -

यथाथवाद, अतियथार्थवाद, आदर्शवाद, प्रतीकवाद, बिम्बवाद, कलावाद, अस्तित्ववाद - उदभव और विकास, प्रमुख प्रवृत्तियां तथा मान्यताएं, मूल्यांकन ।

इकाई-24 साहित्य अध्ययन की प्रमुख पद्धतियाँ -

मिथकीय समीक्षा पद्धति, रूपवादी समीक्षा पद्धति, संरचनावादी समीक्षा पद्धति, शैली वैज्ञानिक समीक्षा पद्धति, समाजशास्त्रीय समीक्षा पद्धति - भूमिका, उदभव और विकास, प्रमुख मान्यताएं एवं प्रवृत्तियां, मूल्यांकन ।

इकाई-25 अस्तित्ववाद, आधुनिकतावाद और उत्तर-आधुनिकतावाद अस्तित्ववाद -

अवधारणा, पृष्ठभूमि, अस्तित्ववाद की दो धाराएं, मूलविचार बिन्दु, अस्तित्ववाद और साहित्य आलोचना । आधुनिकतावाद - परिभाषा, आधुनिक, आधुनिकीकरण, आधुनिकता तथा आधुनिकतावाद, साहित्यिक, आधुनिकतावाद, अवांगार्ड और अन्य प्रवृत्तियां । उत्तर आधुनिकतावाद- तात्पर्य, पृष्ठभूमि और देशकाल, मूल तत्व और अवधारणाएं, विस्तार, आधुनिकतावाद बनाम उत्तर आधुनिकता, साहित्य में उत्तर-आधुनिकतावाद, वर्तमान परिदृश्य, उत्तर आधुनिकतावाद : पूर्वी परिदृश्य ।

खण्ड-7 हिन्दी आलोचना

इकाई-26 साहित्य की आधुनिक अवधारणा और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

हिन्दी आलोचना का आरम्भ और विकास, शुक्ल युग : विशुद्ध आलोचना, छायावादी आलोचना दृष्टि ।

इकाई-27 शुक्लोत्तर हिन्दी आलोचना-छायावाद युग :

आलोचना का स्वच्छंदतावादी पथ (छायावादी कवि- आलोचक,

प्रभाववादी आलोचना, शुक्लोत्तर आलोचना की बृहत्तर त्रयी, हिन्दी आलोचना में रोमांटिसिज्म विरोधी मोड़), प्रगतिवादी आलोचना तथा आधुनिकतावादी आलोचना दृष्टि, उत्तरशती की आलोचना (आलोचना की नई जमीन तैयार करने का प्रयास, कथा साहित्य और नाटक: आलोचना की दिशा), समकालीन आलोचना : परिवर्तन के बिन्दु।

इकाई-28 हिन्दी की मार्क्सवादी आलोचना और डॉ. रामविलास शर्मा

आलोचक व्यक्तित्व का निर्माण, प्रमुख पुस्तकें और उनमें निहित चिन्तन, मार्क्सवादी विचारधारा का नए ढंग से उपयोग, मूल्यांकनपरक निष्कर्ष ।

इकाई-29 साहित्य की विधाएं

साहित्य विधा से तात्पर्य, साहित्य विधाओं के वर्गीकरण के आधार, प्रबन्ध काव्य अथवा निबद्ध काव्य (महाकाव्य, खण्डकाव्य), मुक्तक, गद्य (गद्य-काव्य, उपन्यास, कहानी, निबन्ध, जीवनी, पत्र, रिपोर्टाज आदि), दृश्य काव्य, पश्चिमी नाटक (त्रासदी, कामदी, एकांकी)।

MAEC - 01

आर्थिक सिद्धान्त

- प्रथम खण्ड**
- इकाई –01 उपभोक्ता व्यवहार सिद्धान्त**
- विषय परिचय**
1. व्यक्तिगत एवं समष्टिगत विश्लेषण
 2. वास्तविक तथा आदर्श मूलक विश्लेषण
 3. पुस्तक की रूपरेखा एवं योजना
 4. पाठ्य सामग्री की प्रमुख विशेषताएं
- इकाई –02 मांग का नियम**
1. उपयोगिता की अवधारणा एवं मांग
 2. सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम
 3. सीमान्त उपयोगिता वक्र से मांग वक्र की व्युत्पत्ति
 4. मांग का नियम
 5. मांग में परिवर्तन एवं मांगी गई मात्रा में परिवर्तन
 6. मांग को प्रभावित करने वाले तत्व
 7. मांग के सिद्धान्त की व्याख्या – तटस्थता वक्र विधि
 8. तटस्थता वक्र से मांग वक्र की व्युत्पत्ति
 9. मांग के प्रकार
 10. मांग के नियम के सामान्य अपवाद
- इकाई –03 मांग की लोच**
1. मांग की लोच का अर्थ एवं परिभाषा
 2. मांग की लोच की श्रेणियां
 3. मांग की लोच की माप
 4. मांग की लोच के निर्धारक तत्व
 5. मांग की लोच की अन्य मापें
 6. मांग की लोच का महत्व
- इकाई –04 मांग आंकलन एवं पूर्वानुमान**
1. मांग पूर्वानुमान के तत्व
 2. मांग पूर्वानुमान के उद्देश्य
 3. मांग पूर्वानुमान की विधियाँ
 4. आदर्श पूर्वानुमान विधि के आवश्यक गुण
 5. मांग पूर्वानुमान का महत्व
- इकाई –05 निश्चितता तथा अनिश्चितता की दशाओं में उपभोक्ता व्यवहार**
- स्थायी तथा गैर स्थायी वस्तुओं की माँग**
1. निश्चितता की दशाओं में उपभोक्ता व्यवहार विश्लेषण
 2. अनिश्चितता की दशाओं में उपभोक्ता व्यवहार विश्लेषण
 3. वस्तुओं की सन्तुलन माँग

- इकाई –06 उपभोग फलन तथा अन्तर कालगत चयन**
1. समय क्षितिज की अवधारणा
 2. समय क्षितिज के आधार पर उपभोक्ता विश्लेषण
- द्वितीय खण्ड – उत्पादन**
- इकाई –07 फर्म के उद्देश्य लाभ अधिकतमकरण, विक्रय अधिकतमकरण**
1. फर्म
 2. फर्म की विशेषताएं
 3. फर्म के उद्देश्य
- इकाई –08 अल्पकाल एवं दीर्घकाल में फर्म के उद्देश्य**
1. अल्पकाल एवं दीर्घकाल का अर्थ
 2. अल्पकाल में फर्म के उद्देश्य
 3. अल्पकाल में क्या फर्म हानि उठाकर भी उत्पादन जारी रख सकती है।
 4. दीर्घकाल में फर्म का उद्देश्य
- इकाई –09 अल्पकाल में उत्पादन फलन-परिवर्तनशील अनुपात का नियम**
1. उत्पादन फलन का अर्थ
 2. एक परिवर्ती आदा सहित उत्पादन फलन
 3. दो परिवर्ती आदाओं सहित उत्पादन फलन
- इकाई –10 दीर्घकाल में उत्पादन फलन पैमाने के प्रतिफल**
1. पैमाने के प्रतिफल सभी परिवर्ती आदाएं
 2. एक ही उत्पादन फलन में पैमाने के बदलते हुए प्रतिफल
 3. न्यूनतम लागत संयोग का निर्धारण
- इकाई –11 लागत रेखाएं और उनका परिमाणांकन**
1. लागत की धारणा
 2. अल्पकालीन लागत विश्लेषण
 3. दीर्घकालीन लागत विश्लेषण
- इकाई –12 पैमाने की मितव्ययताएं**
1. बड़े पैमाने पर उत्पादन एवं मितव्ययताएं
 2. आन्तरिक मितव्ययताएं
 3. बाह्य मितव्ययताएं
 4. आन्तरिक तथा बाह्य मितव्ययताओं में सम्बन्ध
 5. पैमाने की अमितव्ययताएं
- खण्ड तीन कीमत निर्धारण**
- इकाई –13 पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत कीमत एवं उत्पादन निर्धारण**
1. बाजार की विभिन्न श्रेणियाँ
 2. कीमत निर्धारण की प्रक्रिया
 3. पूर्ण प्रतियोगिता का अर्थ एवं विशेषताएं
 4. प्रतियोगी बाजार में कीमत निर्धारण का सामान्य माडल

5. अल्पकाल में कीमत निर्धारण एवं फर्म का साम्य
 6. पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत दीर्घकालीन कीमत निर्धारण
- इकाई –14 एकाधिकार के अन्तर्गत कीमत एवं उत्पादन निर्धारण**
1. एकाधिकार का अर्थ, उदय एवं विशेषताएं
 2. एकाधिकार बाजार में मांग व पूर्ति वक्र
 3. एकाधिकार के अन्तर्गत कीमत निर्धारण
 4. दीर्घकाल में एकाधिकारी फर्म की स्थिति
 5. एकाधिकार का आर्थिक कल्याण पर प्रभाव
 6. सरकार द्वारा एकाधिकारिक फर्म पर नियंत्रण
- इकाई –15 विभेदकारी एकाधिकार के अंतर्गत कीमत एवं उत्पादन का निर्धारण**
1. विभेदकारी एकाधिकार, विभेदकारी एकाधिकारी एवं कीमत विभेदीकरण की धारणा
 2. कीमत विभेदीकरण के विभिन्न स्वरूप
 3. कीमत विभेदीकरण के प्रकार
 4. कीमत विभेदीकरण के संभव होने एवं लाभकारी होने की शर्तें
 5. विभेदीकरण एकाधिकार के अंतर्गत कीमत एवं उत्पादन का निर्धारण
 6. कीमत विभेदीकरण का औचित्य
- इकाई –16 एकाधिकार प्रतियोगिता के अन्तर्गत कीमत एवं उत्पादन निर्धारण**
1. एकाधिकारिक प्रतियोगिता का अर्थ
 2. एकाधिकारिक प्रतियोगिता की विशेषताएं
 3. एकाधिकारी प्रतियोगिता तथा दो मांग वक्रों की अवधारणा
 4. अल्पकाल में एकाधिकारिक प्रतियोगिता के अन्तर्गत फर्म का साम्य
 5. फर्म का दीर्घकालीन संतुलन
 6. समूह साम्य की अवधारणा
 7. एकाधिकारिक प्रतियोगिता एवं आर्थिक कल्याण
 8. अपूर्ण प्रतियोगिता तथा एकाधिकारिक प्रतियोगिता में अन्तर
- इकाई –17 गैर सन्धिपूर्ण अल्पाधिकार के विभिन्न स्वरूप**
1. अल्पाधिकार का अर्थ
 2. अल्पाधिकार के विभिन्न स्वरूपों के निर्धारक तत्व
 3. अल्पाधिकार का कुरनों स्वरूप
 4. अल्पाधिकार का बरतरां स्वरूप
 5. अल्पाधिकार का चेम्बरलिन स्वरूप
 6. कुरनो, बरतरां तथा चेम्बरलिन स्वरूप
 7. अल्पधिकार का स्टेकलवर्ग स्वरूप
 8. किंकी मांग वक्र स्वरूप
- इकाई –18 सन्धिपूर्ण अल्पाधिकार के विभिन्न स्वरूप**
1. सन्धिपूर्ण अल्पाधिकार का अर्थ

2. सन्धिपूर्ण अल्पाधिकार के विभिन्न स्वरूपों के निर्धारक तत्व
 3. पूर्ण सन्धि तथा अपूर्ण सन्धि में भेद
 4. कार्टेल (पूर्ण सन्धि)
 5. मूल्य मार्गदर्शन (अपूर्ण सन्धि)
- इकाई -19 द्विपक्षीय एकाधिकार**
1. द्विपक्षीय एकाधिकार का अर्थ
 2. विक्रेता एकाधिकार विश्लेषण
 3. क्रेता एकाधिकार विश्लेषण
 4. द्विपक्षीय एकाधिकार विश्लेषण
 5. द्विपक्षीय एकाधिकार विश्लेषण
 6. अनधिमान वक्रों द्वारा द्विपक्षीय एकाधिकार विश्लेषण
 7. द्विपक्षीय एकाधिकार : यदि एक ही फर्म क्रेता और विक्रेता दोनो ही
- इकाई -20 एकाधिकार तथा केन्द्रीयकरण का अंश**
1. एकाधिकार अंश के निर्धारक तत्व
 2. फर्मों की संख्या
 3. नियंत्रण का केन्द्रीयकरण
 4. लाभ दर
 5. मूल्य तथा सीमान्त लागत में अन्तर
 6. फर्म तथा उद्योग के मांग वक्रों के ढलानों का अनुपात
 7. प्रतिलोच मांग
 8. अन्य माप
- इकाई -21 फर्म की वृद्धि एवं विलय**
1. फर्म की वृद्धि की धारणा
 2. फर्म की वृद्धि के सिद्धान्त
 3. पेनरोज सिद्धान्त
 4. वृद्धि की विधियों
- इकाई -22 क्षमता उपयोग की धारणा**
1. क्षमता उपयोग और लागतें
 2. क्षमता उपयोग और बाजार के प्रकार
 3. पूँजी उपयोग का सिद्धान्त
 4. अतिरिक्त क्षमता पुनरावलोकन
- इकाई -23 मूल्य विभेदीकरण एवं मार्क अप मूल्य निर्धारण**
1. मूल्य विभेद का अर्थ
 2. मूल्य विभेद की दशाएं
 3. मूल्य विभेद की श्रेणियाँ
 4. मूल्य विभेदक फर्म का सन्तुलन
 5. अन्य सन्तुलन परिस्थितियाँ
 6. मूल्य, मांग लोच, सीमान्त आय तथा विभेदी मूल्य

7. मार्क अप मूल्य निर्धारण प्रवेश
8. मार्क अप का अर्थ
9. मार्क अप मूल्य निर्धारण तथा आधुनिक लागत सिद्धान्त
10. मार्क अप मूल्य निर्धारण की व्यवहारिकता
11. मार्क अप तथा मूल्य विभेदक फर्म

इकाई –24 सीमान्त लागत मूल्य निर्धारण

1. सीमान्त लागत मूल्य निर्धारण का अर्थ
2. सीमान्त लागत मूल्य निर्धारण नियम का औचित्य
3. सीमान्त लागत मूल्य निर्धारण नियम की व्यवहारिक कठिनाइया।

खण्ड चार साधन कीमत निर्धारण

इकाई –25 सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत

1. साधन कीमत निर्धारण – प्रारम्भिक स्पष्टीकरण एवं मान्यताएं
2. सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त
3. प्रतियोगी बाजार में साधन कीमत निर्धारण
4. यूलर प्रमेय तथा योगीकरण की समस्या अथवा उत्पाद निःशेषण प्रमेय

इकाई –26 सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त – अपूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत

1. साधन कीमत निर्धारण अपूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत सीमान्त उत्पादकता।
2. उत्पादन बाजार में एकाधिकार की स्थिति में साधन कीमत निर्धारण
3. क्रेता एकाधिकार के अन्तर्गत साधन कीमत निर्धारण जब निर्धारण जब फर्म उत्पादन बाजार में विक्रेता एकाधिकारी भी हो और साधन बाजार के क्रेता एकाधिकारी हो।
4. द्विपक्षी एकाधिकार में साधन कीमत निर्धारण

इकाई –27 लागत के सिद्धान्त –। रिकार्डों का सिद्धान्त

1. लगान का अर्थ
2. लगान के प्रकार
3. लगान के सिद्धान्त (लगान का निर्धारण)
4. रिकार्डों का लगान सिद्धान्त
5. रिकार्डों के सिद्धान्त के मुख्य तत्व
6. रिकार्डों के सिद्धान्त की आलोचना

इकाई –28 लगान के सिद्धान्त – II : आधुनिक सिद्धान्त

1. आधुनिक सिद्धान्त का आधार
2. आधुनिक सिद्धान्त के अनुसार लगान का अर्थ
3. आधुनिक सिद्धान्त की व्याख्या
4. लगान की उत्पत्ति
5. आधुनिक सिद्धान्त के मुख्य तत्व
6. रिकार्डों के सिद्धान्त से तुलना

7. लगान तथा मूल्य
 8. आभास लगान की धारणा
 9. योग्यता का लगान
- इकाई –29 ब्याज के सिद्धान्त । : कीन्स पूर्व**
1. ब्याज
 2. ब्याज के सिद्धान्त
- इकाई –30 ब्याज के सिद्धान्त : कीन्स का सिद्धान्त**
1. सिद्धान्त का प्रतिपादन
 2. सिद्धान्त से सम्बन्धित अन्य बिन्दु
 3. सिद्धान्त की आलोचना
- इकाई –31 मजदूरी सिद्धान्त**
1. मजदूरी निर्धारण के सिद्धान्त : परम्परागत अर्थशास्त्रीय विचारधाराएं
 2. मजदूरी निर्धारण का सीमान्त उत्पादकता सिद्धान्त
 3. मजदूरी निर्धारण की आधुनिक व्याख्या
 4. पूर्ण प्रतियोगिता दशाओं में मजदूरी निर्धारण
 5. कृय एकाधिकार अवस्था में मजदूरी निर्धारण
 6. श्रम संघ, सामूहिक सौदेबाजी तथा मजदूरी निर्धारण
- इकाई –32 लाभ के सिद्धान्त**
1. लाभ के प्रकार
 2. लाभ के सिद्धान्त
- खण्ड पाँच कल्याणकारी अर्थशास्त्र**
- इकाई –33 सामान्य साम्य की अवधारणा उपभोक्ता का साम्य**
1. सामान्य साम्य का अर्थ
 2. सामान्य साम्य की अवधारणा का विकास
 3. सामान्य साम्य में निहित मान्यताएं
 4. उपभोक्ता की साम्य स्थिति
 5. विनिमय की साम्य स्थिति
- इकाई –34 सामान्य साम्य की अवधारणा : उत्पादकों का साम्य**
1. उत्पादन में सामान्य साम्य का अर्थ
 2. उत्पादक की साम्य स्थिति
 3. उत्पादक संभावना वक्र का निरूपण
 4. वस्तुओं व साधनों की कीमत
- इकाई –35 कल्याण अर्थशास्त्र**
1. कल्याण अर्थशास्त्र का अर्थ
 2. व्यक्तिगत कल्याण एवं सामाजिक कल्याण
 3. अन्तः व्यक्ति उपयोगिताओं की तुलना एवं कल्याण अर्थशास्त्र
 4. कल्याण अर्थशास्त्र की मान्यताएं व शर्तें
 5. व्यक्तिगत कल्याण एवं सार्वजनिक निर्णय प्रक्रिया

6. कल्याण अर्थशास्त्र की सीमाएं
- इकाई –36 अधिकतम कल्याण हेतु परेटो की इष्टतम शर्तें**
1. संख्या सूचक व क्रम सूचक उपयोगिता, उपयोगिताओं की अन्तः व्यक्ति तुलना एवं सामाजिक आर्थिक कल्याण
 2. विल्फ्रेडो परेटो एवं कल्याण अर्थशास्त्र
 3. परेटो श्रेष्ठता, परेटो इष्टतमता तथा सहमति सिद्धान्त
 4. परेटो की इष्टतम शर्तें
 5. उत्पादन संभाव्यता वक्र एवं इष्टतम विनिमय स्थिति
 6. इष्टतम विनिमय तथा उपयोगिता संभावना वक्र
 7. परेटो इष्टतम शर्तें एवं पूर्ण प्रतियोगिता
 8. क्या परेटोकी इष्टतम शर्तें पूरी हो सकती हैं?
 9. द्वितीय श्रेष्ठ प्रमेय
- इकाई –37 नव कल्याण अर्थशास्त्र**
1. नव कल्याण अर्थशास्त्र का अर्थ
 2. पीगू के आदर्श उत्पादन की विलियम बॉमोल द्वारा विवेचना
 3. परम्परागत कल्याण अर्थशास्त्र की अव्यावहारिकता
 4. वैयक्तिक कल्याण तथा सार्वजनिक निर्णय प्रक्रिया
- इकाई –38 क्षतिपूर्ति सिद्धान्त**
1. क्षतिपूर्ति का अर्थ एवं आवश्यकता
 2. क्षतिपूर्ति मापदण्ड
 3. क्षतिपूर्ति सिद्धान्तों की आलोचना
 4. आय में समानता की समस्या तथा राल्स का “न्याय का सिद्धान्त”

MAEC - 02

आर्थिक सिद्धान्त – द्वितीय

प्रथम खण्ड राष्ट्रीय आय – I

इकाई –01 राष्ट्रीय आय की अवधारणा

1. राष्ट्रीय आय का अवधारणा : ऐतिहासिक विवेचन
2. राष्ट्रीय आय की अवधारणा : आधुनिक दृष्टिकोण
3. सकल राष्ट्रीय उत्पाद
4. शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद
5. राष्ट्रीय आय
6. व्यक्तिगत आय
7. प्रयोज्य आय
8. वास्तविक सकल राष्ट्रीय उत्पाद बनाम नामिक सकल राष्ट्रीय उत्पाद

इकाई –02 राष्ट्रीय आय की संरचना

1. सकल राष्ट्रीय उत्पाद की संरचना
2. सकल राष्ट्रीय आय की संरचना
3. सकल राष्ट्रीय उत्पाद में सम्मिलित नहीं होने वाले घटक
4. राष्ट्रीय आय अनुमानों का महत्व

इकाई –03 राष्ट्रीय आय के माप की विधियाँ

1. राष्ट्रीय आय लेखांकन
2. राष्ट्रीय आय के माप की विधियाँ
3. उत्पादन, आय और व्यय की समानिका
4. विकासशील देशों में राष्ट्रीय आय के माप में कठिनाइयाँ

इकाई –04 राष्ट्रीय आय के संतुलन स्तर का निर्धारण

1. केन्ज का दृष्टिकोण एवं वैचारिक कान्ति
2. आय के संतुलन स्तर का निर्धारण
3. समग्र मांग वक्र

इकाई –05 बचत विनियोग व आय में सम्बन्ध

1. बचत व विनियोग की परम्परावादी संकल्पना
2. परम्परावादी बचत व विनियोग मॉडल की आलोचना
3. केन्जियन मॉडल में बचत व विनियोग
4. समग्र व्यय फलन व आय
5. समकालिक गुणक विश्लेषण व आय में वृद्धि
6. समयावधि गुणक व साम्य आय
7. स्वायत्त विनियोग में सतत स्थिर वृद्धि व साम्य आय

इकाई –06 सरकारी घाटे का बजट भुगतान समतोलन घाटा तथा राष्ट्रीय आय का सम्बन्ध

1. आय की सरलीकृत निर्धारण प्रक्रिया
2. आय निर्धारण में सरकारी क्षेत्र का समावेशन
3. नीतियों का अनुकूलतम मिश्रण

द्वितीय खण्ड राष्ट्रीय आय – II

इकाई –07 आय तथा उत्पाद संतुलन में परिवर्तन गुणक

1. आय तथा उत्पाद संतुलन का निर्धारण
2. गुणक के सिद्धान्त
3. काहन का रोजगार गुणक
4. केन्स का निवेश गुणक
5. स्थैतिक बनाम प्रावैगिक गुणक
6. प्रावैगिक विदेशी व्यापार गुणक
7. करों का तथा सरकारी व्यय का गुणक पर सम्मिलित प्रभाव
8. मैट्रिक्स गुणक
9. गुणक सिद्धान्त का महत्व
10. गुणक सिद्धान्त की आलोचनाएं
11. आय प्रवाह में रिसाव और उसका गुणक पर प्रभाव

इकाई –08 संतुलित बजट गुणक

1. संतुलित बजट गुणक का अर्थ
2. कार्य प्रणाली
3. समीकरण द्वारा संतुलित बजट गुणक के मूल्य की गणना
4. रेखाचित्र द्वारा निरूपण
5. संतुलित बजट गुणक : आनुपातिक कर

इकाई –09 मुद्रा की माँग

1. मुद्रा का अविष्कार
2. मुद्रा की परिभाषा
3. मुद्रा की माँग

इकाई –10 IS-LM वक्र विश्लेषण

1. IS वक्र की व्युत्पत्ति
2. LM वक्र की व्युत्पत्ति
3. सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के दोनों क्षेत्रों में साम्य की स्थिति

इकाई –11 विदेशी व्यापार एवं राष्ट्रीय आय

1. खुली अर्थव्यवस्था में आय का साम्य स्तर
2. निर्यात फलन
3. आयात फलन
4. विदेशी व्यापार गुणक
5. भुगतान शेष में घाटा तथा पूंजी प्रवाह

6. भुगतान शेष की संरचना
7. भुगतान शेष : बही खाता अवधारणा
8. व्यापार शेष, चालू खाते का शेष तथा भुगतान शेष
9. व्यापार शेष की बाकी
10. भुगतान शेष में संतुलन एवं असंतुलन
11. पूंजी प्रवाह
12. स्वायत्त पूंजी प्रवाह
13. अनुग्रहीय पूंजी : अन्तःप्रवाह

इकाई -12 आन्तरिक एवं बाह्य संतुलन

1. आन्तरिक एवं बाह्य संतुलन की अभिधारणा
2. लोचपूर्ण आय तथा लोचपूर्ण कीमतों के साथ बाह्य तथा आन्तरिक संतुलन की प्राप्ति
3. आन्तरिक एवं बाह्य असंतुलनों का वर्गीकरण तथा उनको संतुलित करने के प्रयत्न
4. पूंजी के आवागमन की स्थिति में आन्तरिक एवं बाह्य संतुलन की प्राप्ति

तृतीय खण्ड कीमतें एवं रोजगार

इकाई -13 उत्पादन फलन, श्रम बाजार और राष्ट्रीय आय का पूर्ति पक्ष

1. उत्पादन फलन
2. श्रम बाजार में संतुलन एवं श्रम का मांग फलन
3. पूर्ति पक्षीय आय स्तर
4. राजकोषीय नीति एवं रोजगार तथा आय स्तर

इकाई -14 वास्तविक मजदूरी प्रतिरूप, मौद्रिक मजदूरी प्रतिरूप और अनम्य मजदूरी , समग्र पूर्ति फलन

1. वास्तविक मजदूरी प्रतिरूप और समग्र पूर्ति फलन
2. मौद्रिक मजदूरी प्रतिरूप,
3. युक्तिसंगत प्रत्याशाओं का प्रसंविदा प्रतिरूप

इकाई -15 मुद्रा का परिमाण सिद्धान्त

1. मुद्रा के परिमाण सिद्धान्त का नव प्रतिष्ठित रूप
2. नकद कोष अथवा केम्ब्रिज समीकरण
3. नकद सौदा समीकरण एवं नकद कोष समीकरण की तुलना

इकाई -16 मिल्टन फ्रीडमैन का मुद्रा परिमाण सिद्धान्त

1. फ्रीडमैन का परिमाण सिद्धान्त
2. सिद्धान्त की आलोचनाएं

इकाई -17 मुद्रा स्फीति के सिद्धान्त – मांग प्रोत्साहित एवं लागत जनित स्फीति

1. मुद्रा स्फीति का अर्थ
2. विभिन्न देशों में मुद्रास्फीति
3. मुद्रा स्फीति के प्रकार

4. मुद्रा स्फीति के प्रभाव
- इकाई -18 समग्र मांग, समग्र पूर्ति तथा मूल्य स्फीति**
1. मांग प्रेरित एवं लागत प्रेरित स्फीति की व्याख्या
 2. समग्र मांग तथा मूल्य स्फीति
 3. समग्र पूर्ति एवं मूल्य स्फीति
 4. संरचनात्मक विसंतुलन तथा स्फीति
 5. स्फीति निरोधक नीतियाँ
- इकाई -19 मंदी स्फीति, स्फीति प्रत्याशाएँ एवं स्फीति विरोधी नीतियाँ**
1. मंदी स्फीति
 2. स्फीति प्रत्याशाएं
 3. स्फीति विरोधी नीतियाँ
- इकाई -20 मौद्रिक नीति के यंत्र**
1. मौद्रिक नीति का अर्थ
 2. मौद्रिक नीति के उद्देश्य
 3. मौद्रिक नीति तथा आर्थिक विकास
 4. मौद्रिक नीति के उपकरण अथवा यंत्र
 5. विकासशील अर्थव्यवस्था तथा मौद्रिक नीति
- चतुर्थ खण्ड विकास एवं उच्चावन**
- इकाई -21 विकास का प्रतिष्ठित सिद्धान्त**
1. एडम स्मिथ
 2. डेविड रिकार्डो
 3. जॉन स्टुअर्ट मिल
- इकाई -22 कार्लमार्क्स का आर्थिक विकास मॉडल**
1. इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या
 2. द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद
 3. वर्ग संघर्ष
 4. अतिरिक्त मूल्य का सिद्धान्त
 5. पूंजी संचय
 6. पूंजीवादी संकट
 7. मार्क्स के पूंजीवादी आर्थिक विकास के मॉडल का आलोचनात्मक परीक्षण
 8. विकासशील देशों में मार्क्स मॉडल की उपादेयता
- इकाई -23 नवसंस्थापक मॉडल**
1. मान्यताएं
 2. विकास सिद्धान्त का विश्लेषण
 3. आर्थिक विकास की दर में परिवर्तन
 4. नवसंस्थापक मॉडल व तकनीकी परिवर्तन
 5. स्थिर प्रगति की दशाएं

6. नवसंस्थापक अर्थशास्त्रियों के सिद्धान्त का मूल्यांकन
- इकाई -24 विकास का हेरोड - डोमर मॉडल**
1. मॉडल का अर्थ
 2. डोमर का मॉडल
 3. आर्थिक विकास की दर में परिवर्तन
 4. हेरोड-डोमर मॉडल की सीमाएं
 5. हेरोड-डोमर मॉडल और विकासशील देश
- इकाई -25 जोन राबिन्सन का आर्थिक विकास का मॉडल**
1. मॉडल की मान्यताएं
 2. मॉडल की व्याख्या
 3. स्वर्णावस्था
 4. सन्तुलन के निर्धारक
 5. समीक्षात्मक मूल्यांकन
 6. मॉडल की प्रमुख कमजोरियों
 7. विकासशील अर्थव्यवस्था में मॉडल की व्यावहारिकता
- इकाई -26 आर्थिक विकास का महालनोबिस मॉडल**
1. महालनोबिस मॉडल
 2. द्विक्षेत्रीय मॉडल
 3. चार क्षेत्रीय मॉडल
 4. महालनोबिस मॉडल की मान्यताएं
 5. महालनोबिस मॉडल का मूल्यांकन
- पंचम खण्ड उत्पादन उच्चावचन**
- इकाई -27 सैम्युल्सन का व्यापारिक चक्र सिद्धान्त**
1. सैम्युल्सन का सिद्धान्त
 2. सैम्युल्सन के सिद्धान्त की मान्यताएं
 3. सिद्धान्त की समीकरणी अभिव्यक्ति
 4. गुणक त्वरक की अन्योन्य क्रिया प्रदर्शक तालिका
 5. व्यापार चक्रीय विविध रूप
 6. पांचो नमूनों का एक साथ चित्रण
 7. वास्तविकता के आधार पर नमूनों पर विचार
 8. सैम्युल्सन के सिद्धान्त का सारांश
 9. सिद्धान्त की समीक्षा
- इकाई -28 हिक्स का व्यापारिक चक्रीय सिद्धान्त**
1. सैम्युल्सन और हिक्स की व्याख्याओं में अन्तर
 2. हिक्स का सिद्धान्त
 3. हिक्स के सिद्धान्त की मान्यताएं
 4. सिद्धान्त का समीकरण रूप
 5. सिद्धान्त का रेखाचित्रीय निरूपण

6. सिद्धान्त का सारांश
 7. सिद्धान्त की समीक्षा
- इकाई –29 काल्डॉर का व्यापार चक्र सिद्धान्त**
1. व्यापार चक्रों का आशय
 2. काल्डॉर का व्यापार चक्र सिद्धान्त
 3. I और S फलनों की रेखीयता और आय स्तर
 4. विविध आय स्तर एवं गैर रेखीय I फलन
 5. विविध फलन स्तर एवं गैर रेखीय S फलन
 6. निवेश और बचत फलनों की अन्योन्य क्रिया
- इकाई –30 व्यापार चक्र विरोधक नीतियाँ**
1. समष्टिगत आर्थिक नीतियों का आधार
 2. नीतियों के उद्देश्य
 3. मौद्रिक नीति
 4. मौद्रिक नीति के औजार
 5. मौद्रिक नीति की सीमायें
 6. राजकोषीय नीति का आशय
 7. चक्रीयता विरोधी राजकोषीय नीति
 8. चक्रीयता विरोधी नीति और अन्तरालों का समस्या
 9. राजकोषीय नीति के उपकरण
 10. राजकोषीय नीति की सीमायें
- इकाई –31 मौद्रिक नीति की प्रभावकता**
1. प्रभावकता के सम्बन्ध में सामान्य धारणाएँ
 2. मौद्रिक नीति की प्रभावकता से आशय
 3. मन्दी में मौद्रिक नीति की प्रभावकता
 4. तेजीकाल से मौद्रिक नीति की प्रभावकता
 5. तेजी काल में मौद्रिक नीति की उपयोगिता
 6. मुद्रा की मात्रा में परिवर्तन के प्रभाव
- इकाई –32 विकासशील देशों में मौद्रिक नीति की भूमिका**
1. विकासशील देशों के संदर्भ में मौद्रिक नीति का आशय
 2. मौद्रिक नीति का विकासशील देशों में औचित्य
 3. विकासशील देश और मौद्रिक नीति के उद्देश्य
 4. मौद्रिक नीति की कार्यशीलता
 5. मौद्रिक नीति और उसके उपकरण
 6. साख नियंत्रण के उपकरण
 7. मौद्रिक नीति की विकासशील देशों में सीमायें
 8. मौद्रिक नीति की प्रभावकता में वृद्धि के उपाय
- इकाई –33 राजकोषीय नीति की प्रभावकता**
1. प्रभावकता सम्बन्धी सामान्य धारणाएँ

2. मन्दी के दौर में राजकोषीय नीति की प्रभावकता
 3. भीड़ जनित बहिर्गत प्रभाव
 4. तेजी में राजकोषीय नीति की प्रभावकता में सीमायें
- इकाई –34 विकासशील देशों में राजकोषीय नीति की भूमिका**
1. विकासशील और विकसित देशों में राजकोषीय नीति का अन्तर
 2. राजकोषीय नीति की सापेक्षिक भूमिका
 3. पूंजी निर्माण और राजकोषीय उपाय
 4. आर्थिक विषमता में कमी और राजकोषीय नीति
 5. आर्थिक स्थिरता और राजकोषीय नीति
 6. विदेशी विनिमय और राजकोषीय नीति
 7. विकासोन्मुख राजकोषीय नीति की सीमायें

MAEC - 03

सार्वजनिक अर्थशास्त्र

प्रथम खण्ड प्रारम्भिक

इकाई -01 विभिन्न राजकोषीय प्रणालियों में राज्य की आर्थिक क्रियाओं का विश्लेषण

1. राज्य की आर्थिक क्रियाओं में वृद्धि के कारण
2. विभिन्न आर्थिक प्रणालियों में राज्य की आर्थिक भूमिका

इकाई -02 लोक अर्थशास्त्र के उद्देश्य व अंग

1. लोक वित्त के उद्देश्य
2. बजट नीति के तीन मुख्य अंग
3. बजट उसकी संरचना व अवधारणाएं
4. राजकीय आय के स्रोत
5. वित्तीय प्रवाह व वास्तविक अर्थव्यवस्था के बीच सम्बन्ध

इकाई -03 सामाजिक वस्तुओं का सिद्धान्त

1. वस्तुओं का वर्गीकरण तथा विशेषताएं
2. वस्तुओं का मूल्य निर्धारण
3. कुशल साधन आवंटन के सामान्य संतुलन मॉडल
4. विशुद्ध सामाजिक वस्तुओं का सामान्य मॉडल

इकाई -04 बाह्यताएं एवं मिश्रित वस्तुएं

1. बाह्यताएं एवं मिश्रित वस्तुएं
2. गुणाधारित वस्तुएं कुशल मूल्य निर्धारण
3. अवगुणाधारित वस्तुएं कुशल मूल्य निर्धारण
4. छोटे वर्ग में सौदा करना
5. सामाजिक कल्याण फलन
6. कुशलता एवम् उत्तमता

इकाई -05 लोक चयन

1. विक्सेल की सामाजिक अधिमान प्रकटीकरण की अवधारणा
2. प्रजातांत्रिक मत की राजनीतिक अंतःक्रिया लागतें
3. बहुमत द्वारा सामाजिक सम्बन्ध व्यक्त करना
4. अनिश्चितता की स्थिति में सामाजिक अधिमानों की अभिव्यक्ति
5. अनिश्चितता की दशाओं में सूचनात्मक लागत एवं राजनीतिक परिणाम
6. लोक चयन के अन्य उपागम
7. राजनैतिक संविधान तथा वित्तीय नियम

- द्वितीय खण्ड सार्वजनिक व्यय एवं सार्वजनिक उपक्रम**
- इकाई –06 सार्वजनिक व्यय**
1. सार्वजनिक व्यय में वृद्धि एवं विस्तार
 2. सार्वजनिक व्यय में वृद्धि के कारण
 3. वैगनर का बढ़ती हुई राज्य की क्रियाओं का नियम
 4. वाइजमेन एवं पीकाक की परिकल्पना
- इकाई –07 सार्वजनिक व्यय मूल्यांकन एवं बजटीय रूप**
1. सार्वजनिक व्यय मूल्यांकन की कसौटी
 2. सामाजिक लाभ लागत विश्लेषण
 3. प्रायोजना के मूल्यांकन का सिद्धान्त
 4. बट्टा दर का चुनाव
 5. प्रोग्राम बजटिंग
 6. शून्य आधारित बजट पद्धति
- इकाई –08 सार्वजनिक उपक्रम : मिश्रित अर्थव्यवस्था के विकास एवं स्वरूप में भूमिका, चुनाव कसौटियाँ**
1. सार्वजनिक उपक्रम का अर्थ
 2. मिश्रित अर्थव्यवस्था में सार्वजनिक उपक्रमों की भूमिका
 3. भारत में सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों का विकास व स्वरूप
- इकाई –09 भारत में सार्वजनिक उपक्रमों में कीमत नीति, प्रबन्धित कीमतें एवं आधिक्य सृजन, सैद्धान्तिक पहलू और कल्याणकारी प्रभाव**
1. सार्वजनिक उपक्रमों में कीमत नीति
 2. सार्वजनिक उपक्रमों के कीमत सिद्धान्त
 3. प्रबन्धित कीमतें
 4. आधिक्य सृजन
 5. सैद्धान्तिक पहलू
 6. कल्याणकारी प्रभाव
- तृतीय खण्ड करारोपण**
- इकाई –10 करारोपण के सिद्धान्त एवं वर्गीकरण**
1. करारोपण के सिद्धान्त
 2. एडम स्मिथ के करारोपण सिद्धान्त
 3. करारोपण के अन्य सिद्धान्त
 4. अच्छी कर प्रणाली की विशेषता
 5. करों का वर्गीकरण
 6. प्रत्यक्ष एवं परोक्ष कर
 7. आनुपाती, प्रगतिशील प्रतिगामी एवं अधोगामी कर
 8. विशिष्ट कर एवं मूल्यानुसार कर
 9. एकल एवं बहुकर प्रणाली
 10. वस्तुओं एवं सेवाओं पर कर

- इकाई -11 करारोपण में न्याय**
1. करारोपण में न्याय के सिद्धान्त
 2. वित्तीय सिद्धान्त
 3. लाभ का सिद्धान्त
 4. करदान योग्यता का सिद्धान्त
- इकाई -12 आवंटन कुशलता**
1. आवंटन कुशलता
 2. पैरेटो उत्तमावस्था अथवा कुशलता
 3. साधन आवंटन पर प्रभाव
 4. उपभोक्ता के अतिरेक पर प्रभाव
 5. प्रत्यक्ष कर
- इकाई -13 करापात एवं कर विवर्तन**
1. प्रस्तावना
 2. करापात में सन्तुलन
 3. करापात में सन्तुलन
 4. करापात के वैकल्पिक तथ्य
 5. करापात एवं कर विवर्तन के सिद्धान्त
 6. करापात एवं कर विवर्तन के तत्व
- इकाई -14 राजकोषीय आपात**
1. राजकोषीय आपात के प्रकार
 2. राजकोषीय नीति के विभिन्न आपात
 3. कर भार का स्वरूप
 4. राजकोषीय आपात की विभिन्न समस्याएं
 5. राजकोषीय आपात के विभिन्न रूप
- चतुर्थ खण्ड भारतीय कर प्रणाली**
- इकाई -15 भारतीय सार्वजनिक वित्त- I : भारतीय कर प्रणाली**
1. भारत में कराधान की भूमिका
 2. भारतीय कर प्रणाली की प्रमुख विशेषताएं
 3. भारतीय कर प्रणाली का ढाँचा
- इकाई -16 भारतीय सार्वजनिक वित्त - II**
1. प्रमुख कर
 2. कराधान की प्रवृत्तियाँ
 3. वर्तमान प्रवृत्तियाँ
- इकाई -17 निजी आयकर - कर योग्य आय, कर आधार, कर मुक्त आय तथा अन्य कर छूटें**
1. कर का आधार
 2. आय का सैद्धान्तिक प्रत्यय
 3. करदाता का निवास स्थान

4. कर प्रोत्साहन
- इकाई –18 निजी आय कर : दर का ढांचा तथा वर्द्धमानता**
1. निजी आयकर के ढांचे में परिवर्तन
 2. निजी करों की वर्द्धमानता
 3. निजी करों की नीची वर्द्धमानता के लिये जिम्मेदार घटक
- इकाई –19 निगम आय कर –प्रमुख विशेषतायं तथा दर का ढांचा**
1. कंपनी की परिभाषा तथा प्रकृति
 2. निगमों पर कर क्यों लगाया जाना चाहिए?
 3. निगमों पर किस प्रकार लगाया जाना चाहिए?
 4. भारत में निगम कर
 5. निगमों पर लगने वाली करों की दरों में परिवर्तन
 6. भारत में निगम कर की कुछ प्रमुख विशेषताएं
 7. निगम करका सम्पूर्ण आय कर से प्राप्त आय में बढता महत्व
- इकाई –20 निगम आय कर कम्पनी का वर्गीकरण मूल्य ह्रास सम्बन्धी नियम इत्यादि**
1. कम्पनियों का वर्गीकरण
 2. दायित्व की दृष्टि से कम्पनियों का विभाजन
 3. सदस्य संख्या के आधार पर वर्गीकरण
 4. प्राइवेट कम्पनी को पब्लिक कम्पनी के रूप में परिवर्तित करने की विधि
 5. कम्पनियों के अन्य प्रकार
 6. भारतीय आयकर अधिनियम, 1961 के अन्तर्गत कम्पनियों का वर्गीकरण
 7. मूल्य ह्रास
 8. मूल्य ह्रास का प्रावधान करने के तरीके
 9. आय कर अधिनियम 1961 में मूल्य ह्रास सम्बन्धी प्रावधान
- पंचम खण्ड सार्वजनिक ऋण एवं घाटा**
- इकाई –21 सार्वजनिक ऋण का अर्थशास्त्र**
1. सार्वजनिक ऋण का अर्थ, आवश्यकता एवं महत्व
 2. सार्वजनिक ऋण का वर्गीकरण
 3. सार्वजनिक ऋण संमंधी अन्य मुद्दे
 4. सार्वजनिक ऋण व आर्थिक विकास
 5. सार्वजनिक ऋण एवं स्फीति
- इकाई –22 सार्वजनिक ऋण संस्थापित सिद्धान्त, क्रियात्मक एवं क्षतिपूरक वित्त**
1. संस्थापित सिद्धान्त
 2. सार्वजनिक ऋण एवं क्रियात्मक क्षतिपूरक वित्त
- इकाई –23 आन्तरिक व बाह्य सार्वजनिक ऋणों के मुद्दे**

1. सार्वजनिक ऋण भार
 2. सार्वजनिक ऋण भार व भावी संतति
 3. सार्वजनिक ऋण व्यवस्था
 4. सार्वजनिक ऋण शोधन पद्धतियाँ
- इकाई –24 विकास के लिए राजकोषीय नीति : साधन गतिशीलता विकास, वितरण तथा मूल्यों पर प्रभाव**
1. राजकोषीय नीति का अर्थ
 2. राजकोषीय नीति का आधारभूत तर्क
 3. राजकोषीय नीति के उद्देश्य
 4. साधन गतिशीलता
 5. राजकोषीय नीति तथा साधन गतिशीलता
 6. विकास पर प्रभाव
 7. वितरण पर प्रभाव
 8. मूल्यों पर प्रभाव
- इकाई –25 पंचवर्षीय योजनाओं का वित्त पोषण**
1. वित्तीय तथा वस्तुगत संसाधनों का अंतर्सम्बन्ध
 2. योजना वित्त पोषण तथा सार्वजनिक क्षेत्र
 3. आयोजना व्यय तथा आयोजना भिन्न व्यय में अंतर
 4. सरकार की वित्तीय प्राप्तियों तथा आयोजना व्यय का अंतर्सम्बन्ध
 5. वित्तीय स्रोतों का विवरण
 6. वित्तीय स्रोतों का प्रयोग
- इकाई –26 भारत में बजटीय घाटे की नीति**
1. लोक वित्त में बजटीय घाटे का अर्थ
 2. भारत सरकार की देयताओं के स्रोत एवं रूप
 3. बजटीय घाटे के प्रमापण का चयन
 4. भारत में बजटीय घाटे के विभिन्न प्रमापण
 5. भारत में बजटीय घाटे का स्तर

MAEC - 04

अर्थशास्त्र

प्रथम खण्ड समुच्चय, सम्बन्ध व फलन

इकाई -01

- 1.2 समुच्चय का अर्थ एवं इसके संकेतन
- 1.3 समुच्चयों के परस्पर सम्बन्ध
- 1.4 समुच्चयों के संक्रियाएं व उनके नियम
- 1.5 सम्बन्ध व फलन
 - 1.5.1 अमित युग्म व जोड़े
 - 1.5.2 सम्बन्ध व कलन का अर्थ व इनमें अन्तर
 - 1.5.3 फलनों की विभिन्न किस्में
- 1.6 दो या अधिक स्वतंत्र चरों के फलन

इकाई -02 आर्थिक सिद्धान्त में फलन तथा रेखाचित्र

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. मांग फलनपूर्ति फलन व संतुलन कीमत तथा संतुलन उत्पत्ति एवं वक्र
4. कुल आगम फलन, सीमान्त आगम फलन व औसत आगम फलन एवं वक्र
5. लागत फलन एवं वक्र : कुल लागत, सीमान्त लागत एवं औसत लागत
6. उत्पादन फलन एवं वक्र कुल उत्पत्ति, सीमान्त उत्पत्ति एवं औसत उत्पत्ति
7. उत्पादन सम्भावना वक्र एवं फलन
8. उपयोगिता फलन गणनावाचक रूप तथा क्रमवाचक रूप में तटस्थता वक्र व उनके फलनों की किस्में
9. राष्ट्रीय आय का निर्धारण उपयोग फलन, विनियोग सरकारी व्यय तथा संतुलन आय
10. सारांश
11. शब्दावली
12. विविध प्रश्न
13. प्रश्नों के उत्तर
14. कुछ उपयोगी पुस्तकें

इकाई -03 सीमान्त तथा निरंतरता

1. उद्देश्य
2. प्रस्तावना

3. सीमान्त
4. सीमान्त की मूलभूत धारणा का सरल परिचय
5. एक फलन की सीमा के उदाहरण
6. सीमा की परिभाषा : बांयी ओरकी सीमाव दायी ओर की सीमा का अर्थ
7. सीमा के प्रमेय के भ्रुण
8. निरंतरता का सांतत्व
9. अर्थ एवं इसकी तीन शर्तें
10. फलनों की निरंतरता के उदाहरण
11. अनिरंतरता या असांतत्व की स्थिति
12. निरंतरता अवकलनीयता व सीमा
13. सारांश
14. शब्दावली
15. विविध प्रश्न
16. प्रश्नों के उत्तर
17. कुछ उपयोगी पुस्तकें

इकाई -04 अवकलन एवं इसका निर्वचन

1. अवकलन का अर्थ
2. अवकलन के प्रमुख सूत्र
3. घातांक फलन का अवकलन
4. स्थिरांक का अवकलन
5. गुणन क्रिया में अवकलन
6. भागफल का अवकलन
7. फलन का फलन : श्रृंखला नियम
8. विलोम फलन
9. अस्पष्ट (अनिश्चित) फलन का अवकलन
10. उच्चतर अवकलन
11. सारांश
12. शब्दावली
13. अभ्यासों के उत्तर
14. कुछ उपयोगी पुस्तकें

इकाई -05 लघुगुणकीय अवकलन व लोच की माप

1. लघुगुणक अवकलन के सूत्र
2. लघुगुणक अवकलन के आर्थिक प्रयोग
3. मांग की लोच का लघुगुणकीय अवकलन
4. सारांश
5. शब्दावली
6. अभ्यासों के उत्तर

7. कुछ उपयोगी पुस्तकें
- इकाई –06 आंशिक अवकलन एवं इसका अर्थशास्त्र में प्रयोग**
1. आंशिक अवकलन:अर्थ व उनकी संक्रियाएं
 2. द्वितीय एवं उच्चतर क्रम के आंशिक अवकलन
 3. विविध प्रश्न
 4. प्रश्नों के उत्तर
 5. आंशिक अवकलन तथा मांग विश्लेषण
 7. आंशिक अवकलन तथा उत्पादन विश्लेषण
 8. समरूप फलन
 9. ओयलर का प्रमेय
 10. आंशिक अवकलनों के प्रयोग के कुछ और सामान्य उदाहरण
 11. सारांश
 12. शब्दावली
 13. प्रश्नों के उत्तर
 14. कुछ उपयोगी पुस्तकें
- इकाई –07 अवकलज के आर्थिक प्रयोग**
1. कतिपय सूत्र
 2. सीमान्त एवं औसत ज्ञान
 3. अवकलनका चिन्ह एवं फलनकी प्रकृति
 4. रेखाओं की प्रकृति
 5. करारोपण व उत्पादन निर्धारण
 6. सारांश
 7. हल का उत्तर
 8. शब्दावली
 9. कुछ उपयोगी पुस्तकें

MAEC - 04

द्वितीय खण्ड

- इकाई -08 इकाई अनुकूलतमीकरण की धारणा : अप्रतिबन्धित एवं प्रतिबन्धित**
1. बर्द्धमान एवं ह्रासमान फलन
 2. एक चर के फलनों में उच्चिष्ठ एवं निम्निष्ठ
 3. दो या अधिक चर के फलनों में उच्चिष्ठ एवं निम्निष्ठ
 4. विकल्प चरों के क्रान्तिक मूल्य ज्ञात करना
 5. प्रतिबन्धित अनुकूलतमीकरण की द्वितीय कोटि की शर्तें
- इकाई -09 अनुकूलतमीकरण की धारणा के अर्थशास्त्र में सरल प्रयोग**
1. अर्थशास्त्र में प्रयोग
- इकाई -10 समाकलन की अवधारणा एवं इसका अर्थशास्त्र में प्रयोग**
1. समाकलन का अर्थ
 2. समाकलन के नियम
 3. निश्चित समाकलन
 4. उत्पादन के क्षेत्र में समाकलन का प्रयोग
 5. उपभोग बचत व विनियोग या पूंजी निर्माण
 6. नकद प्रवाह का वर्तमान मूल्य
 7. उपभोक्ता की बचत व उत्पादक की बचत
- इकाई -11 आव्यूह (मैट्रिक्स) बीजगणित का परिचय**
1. बुनियादी परिभाषाएं
 2. मैट्रिक्सों पर संक्रियायें
 3. मैट्रिक्स का पक्षान्तरण
 4. मैट्रिक्स का प्रतिलोम
 5. युगपत समीकरणों का हल
 6. मैट्रिक्स (आव्यूह) पृथक्करण
 7. मैट्रिक्स का अनुस्थित या कोटि
- इकाई -12 सारणिक**
1. सारणिक की कल्पना
 2. सारणिक का मूल्यांकन
 3. सारणिक के गुणधर्म
 4. कैमर के नियम द्वारा युगपत समीकरणों का हल
- इकाई -13 आगत निर्गत सारणी विश्लेषण का परिचय**
1. आगत-निर्गत विश्लेषण
 2. आगत निर्गत प्रतिरूप (मॉडल) की संरचना
 3. खुला प्रतिरूप
- इकाई -14 रैखिक प्रोग्रामिंग : आलेख विधि**
1. रैखिक प्रोग्रामिंग की मुख्य विशेषताएं एवं समस्या का गणितीय रूप

MAEC - 04

तृतीय खण्ड

इकाई -15 आंकड़ों के संकलन की विधियाँ

1. आंकड़ों का संकलन
2. आंकड़ों के संकलन की विधि
3. आंकड़ों का प्रदर्शन

इकाई -16 प्रतिचयन एवं प्रतिचयन की विधियाँ

1. सांख्यिकी अनुसंधान
2. प्रायिकता प्रतिचयन
3. गैर प्रायिकता प्रतिचयन
4. मिश्रित प्रतिचयन

इकाई -17 आंकड़ों के प्रस्तुतिकरण की विधियाँ

1. प्रारम्भिक
2. चित्रमय निरूपण की सीमाएं
3. चित्र संरचना के सामान्य नियम
4. चित्रों के प्रकार

इकाई -18 केन्द्रीय प्रवृत्ति की मापें । : औसत

1. माध्यों के प्रकार
2. समान्तर माध्य
3. सामूहिक आंकड़ों का प्रयोग करके समान्तर माध्य
4. माध्य के गुण
5. प्रकृति एवं सार्थकता
6. स्वयं के अध्ययन के लिए प्रश्न

इकाई -19 केन्द्रीय प्रवृत्ति की मापें - II : माध्यिका, चतुर्थक, दशमर्थक एवं शतमर्थक बहुलक

1. अवर्गीकृत आंकड़ों से माध्यिका की गणना
2. वर्गीकृत आंकड़ों से माध्यिका की गणना
3. माध्यिका के गुण
4. माध्यिका की प्रकृति एवं महत्व
5. चतुर्थक, दशमर्थक एवं शतमर्थक
6. चतुर्थक
7. दशमर्थक
8. शतमर्थक
9. चतुर्थक, दशमर्थक एवं शतमर्थक की गणना
10. बहुलक
11. बहुलक के गुण
12. बहुलक की प्रकृति एवं महत्व

13. औसत का चयन
- इकाई –20** **विक्षेपण की मापें । परिसर माध्य एवं चतुर्थक विचलन**
1. विक्षेपण अथवा अपकिरण की मापें
 2. माध्य विचलन
 3. प्रसरण
 4. सामूहिक प्रसरण
- इकाई –21** **विक्षेपण की मापें –।। प्रमाप विचलन एवं विषमता**
1. प्रमाप विचलन एवं प्रसरण गुणांक
 2. सामूहिक प्रमाप विचलन
 3. समान्तर माध्य एवं प्रमाप विचलन
 4. अशुद्धियों का सुधार
 5. विक्षेपण की अन्य मापें
 6. लारेंज वक्र
 7. ऋणात्मक विषम वक्र
 8. ककुरता शीर्षक
- चतुर्थ खण्ड**
- इकाई –22** **द्विचर समकों का विश्लेषण – अवर्गीकृत समंक**
1. द्विचर समंक
 2. प्रतीपगमन एवं सहसंबंध
 3. न्यूनतम वर्ग रीति
 4. प्रतीपगमन समीकरण का निर्धारण
 5. सहसम्बन्ध विश्लेषण
 6. सहसम्बन्ध विश्लेषण से सम्बन्धित कुछ सावधानियाँ
 7. कोटिक्रम समकों में सहसम्बन्ध
- इकाई –23** **द्विचर समकों का विश्लेषण वर्गीकृत समंक**
1. वर्गीकृत सारणियाँ
 2. प्रतीपगमन समीकरण का निर्धारण
 3. सह सम्बन्ध विश्लेषण
 4. अनुमान की प्रमाप त्रुटि
- इकाई –24** **द्विचर समकों का विश्लेषण–।।। : बहुगुणी प्रतीपगमन– दो स्वतंत्र चर**
1. बहुगुणी प्रतीपगमन – दो स्वतंत्रचर
- इकाई –25** **प्रतिचयनों की विभ्रम एवं सार्थकता परीक्षण**
1. प्रतिचयन सिद्धान्त
 2. प्रतिचयन से सम्बन्धित प्रमुख अवधारणाएँ
 3. प्रतिचयन बंटन
 4. प्रतिचयन बंटन एवं प्रमाण विभ्रम के उपयोग

- इकाई –26 सूचकांक**
1. अवधारणा
 2. विशेषताएं
 3. सूचकांक रचना करते समय प्रयुक्त सावधानियां
 4. सूचकांक निर्माण
 5. समय उत्काम्यता परीक्षण व्याख्या तथा उदाहरण
 6. तत्व उत्काम्यता परीक्षण
- इकाई –27 उपभोक्ता मूल्य सूचकांक**
1. अवधारणा
 2. मान्यताएं
 3. उपभोक्ता मूल्य सूचकांक
 4. उपभोक्ता मूल्य सूचकांकों की रचना में कठिनाइयां
 5. उपभोक्ता मूल्य सूचकांक समूही व्यय रीति
 6. उपभोक्ता मूल्य सूचकांक: पारिवारिक बजट रीति
 7. महत्व तथा उपयोग
 8. भारत में थोक मूल्य सूचकांक
 9. भारत में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक
- इकाई –28 काल श्रेणी विश्लेषण**
1. काल श्रेणी
 2. काल श्रेणी के संघटक
 3. अल्पकालीन संघटक
 4. काल श्रेणी का विघटन या विश्लेषण
 5. प्रवृत्ति व विकास दर
 6. प्रवृत्ति का निर्धारण व विकास दर की गणना
- खण्ड पाँच**
- इकाई –29 समष्टि आंकड़ों की प्रकृति एवं स्रोत: राष्ट्रीय आय**
1. भारत में राष्ट्रीय आय की गणना
 2. राष्ट्रीय आय समकों की प्रकृति
 3. विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय आय समकों के स्रोत
 4. राष्ट्रीय आय अनुमान श्रृंखलाएं
- इकाई –30 समष्टि आंकड़ों की प्रकृति एवं स्रोत : मूल्य स्तर एवं मुद्रा पूर्ति**
1. थोक मूल्य सूचकांक
 2. थोक मूल्य सूचकांक की नई श्रृंखला

3. उपभोक्ता मूल्य सूचकांक
4. औद्योगिक श्रमिक उपभोक्ता मूल्य
5. मुद्रा पूर्ति समंक – प्रकृति व स्रोत
6. मुद्रा स्टाक में परिवर्तन के कारण
7. रिजर्व मुद्रा के घटक एवं उसमें परिवर्तन

इकाई –31 जनगणना सर्वेक्षण

1. जनगणना के लिये अधिनियम
2. जनगणना की विधियाँ
3. जनगणना संघटन
4. जनगणना 1951
5. जनगणना 1961
6. जनगणना 1971
7. जनगणना 1981
8. जनगणना 1991

इकाई –32 राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण

1. सामाजिक – आर्थिक सर्वेक्षण
2. वार्षिक उद्योग सर्वेक्षण
3. फसल अनुमान सर्वेक्षण

MAEC - 05

अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र

प्रथम खण्ड अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धान्त

इकाई -01

1. तुलनात्मक लागतों का प्रतिष्ठित सिद्धान्त
2. तुलनात्मक लागत सिद्धान्त की मान्यताएं, व्याख्या
3. रिकार्डों द्वारा व्यापार लाभ का विश्लेषण
4. रिकार्डों के सिद्धान्त की आलोचना एवं आनुभाविक प्रमाणीकरण

इकाई -02 मिल के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रतिपूरक मांग का सिद्धान्त

1. मिल का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धान्त
2. संक्षिप्तीकरण
3. स्वतंत्र व्यापार पर मिल के विचार
4. संरक्षण पर मिल के विचार
5. मिल के सिद्धान्त का आलोचनात्मक मूल्यांकन

इकाई -03 टॉजिंग का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धान्त

1. मान्यताएं और तीन तरह की लागतें
2. लागतों में निरपेक्ष व समान अन्तर
3. तुलनात्मक लागतें और कीमतें
4. भिन्न भिन्न देशों में मजदूरियाँ
5. मजदूरियाँ समरूप नहीं, गैर प्रतिस्पर्द्धी समूह

इकाई -04 हेबरलर का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार सिद्धान्त

1. उत्पादन सम्भावना वक्र
2. अवसर लागत, अवसर लागत वक्र

इकाई -05 हैक्शचर ओहलिन का सिद्धान्त तथा साधन कीमत समानीकरण प्रमेय

1. सिद्धान्त की मान्यताएं
2. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के मानदण्ड
3. हैक्शचर ओहलिन मॉडल, सिद्धान्त एवं आलोचनाएं
4. साधन कीमत समानीकरण सिद्धान्त की आलोचना

इकाई -06 अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मॉडलों का प्रमाणीकरण

1. तुलनात्मक लागत सिद्धान्त का प्रमाणीकरण
2. प्रमाणीकरण जांचों का आलोचनात्मक अध्ययन
3. रिकार्डों सिद्धान्त के प्रमाणीकरण जांचों के निष्कर्ष
4. हैक्शचर ओहलीन सिद्धान्त का प्रमाणीकरण
5. टोटेमोटो इचीमूरा का अध्ययन
6. वाहल का अध्ययन
7. स्टालपर व रोसकेम्प का अध्ययन

8. आर भारद्वाज का अध्ययन
 9. हैक्शचर ओहलिन प्रमेय के प्रमाणीकरण जॉर्जों के निष्कर्ष
- इकाई –07 व्यापार स्वरूप के निर्धारक नवीन सिद्धान्त**
1. आधुनिक पूर्ति मांग सिद्धान्त
 2. नवीन सिद्धान्त
- खण्ड तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार नीति**
- इकाई –14 तटकर : तटकर के प्रभाव, तटकर की लागतें, लाभ एवं प्रभावी संरक्षण दर**
1. तटकर के प्रभाव, लागतें एवं लाभ
 2. प्रभावी संरक्षण दर एवं अनुकूलतमतटकर
- इकाई –15 अनुकूलतम प्रशुल्क**
1. अनुकूलतम प्रशुल्क से अभिप्राय
 2. अनुकूलतम प्रशुल्क का चित्र द्वारा निरूपण
 3. अनुकूलतम प्रशुल्क व अर्पण वक्र की लोच
 4. इकाई लोच व अनन्त लोच का महत्व
 5. अनुकूलतम प्रशुल्क की अवधारणा का मूल्यांकन
- इकाई –16 आयात अभ्यंश**
1. प्रमुख बिन्दु
 2. आयात अभ्यंशों के प्रकार
 3. आयात अभ्यंश और प्रशुल्क में अन्तर और अभ्यंश के प्रभाव
- इकाई –17 व्यापार में हस्तक्षेप की आवश्यकता – शिशु उद्योग, बाजार विकृतियाँ और बाह्य मितव्ययिताएं**
1. तटकर के लिए शिशु उद्योग तर्क
 2. बाह्य मितव्ययिताएं
 3. बाजार अपूर्णताएं / घरेलू विकृतियां
- इकाई –18 विकासशील देशों की व्यापारिक नीति**
1. व्यापारिक नीति
 2. विदेशी सहायता
 3. आयात नीति आयात प्रतिबन्ध और प्रतिस्थापन
 4. आयात प्रतिस्थापन
 5. निर्यात नीति
 6. आयात प्रतिस्थापन अथवा निर्यात सम्वर्द्धन
- इकाई –19 चुंगीसंघ का सिद्धान्त एवं आर्थिक एकीकरण**
1. स्वतंत्र व्यापार क्षेत्र, चुंगी संघ, साझा बाजार, आर्थिक समुदाय व आर्थिक एकीकरण
 2. प्रतियोगी व पूरक अर्थव्यवस्थाएं
 3. सामान्य साम्य विश्लेषण
 4. चुंगी संघ के गत्यात्मक प्रभाव

- चतुर्थ खण्ड भुगतान संतुलन एवं विनिमय दरें**
- इकाई –20 भुगतान संतुलन, व्यापार संतुलन व भुगतान संतुलन खाता**
1. भुगतान संतुलन की अवधारणा
 2. भुगतान संतुलन खाता
 3. भुगतान संतुलन एवं व्यापार संतुलन
 4. क्या भुगतान संतुलन सदैव संतुलित रहता है
 5. भुगतान असंतुलन के कारण व प्रकार
 6. समायोजन प्रक्रिया
- इकाई –21 भुगतान संतुलन में असाम्यता**
1. भुगतान संतुलन में असाम्यता के प्रकार, कारण
 2. भुगतान संतुलन की असाम्यता को दूर करने के उपाय व दूर करने के मौद्रिक उपाय, दूर करने के गैर मौद्रिक उपाय एवं अन्य उपाय
- इकाई –22 विदेशी विनिमय दर निर्धारण के सिद्धान्त**
- इकाई –23 स्थिर एवं लचीली विनिमय दरें**
1. विदेशी विनिमय दर प्रणालियां एवं नीतियाँ
 2. लचीली विनिमय दरें
 3. नियंत्रित विनिमय दरें
 4. प्रबन्धकीय लचीली दरें
- इकाई –24 अवमूल्यन लोचविधि, अवशोषण विधि एवं मौद्रिक नीतियों का समन्वय**
1. अवमूल्यन के उद्देश्य और सफलता की शर्तें
 2. अवमूल्यन के प्रभाव का विश्लेषण
 3. आन्तरिक एवं बाह्य संतुलन मौद्रिक व राजकोषीय नीतियों का समन्वय
- इकाई –25 विदेशी सहायता एवं ऋण सेवा भार**
1. विदेशी सहायता प्रदान करने के उद्देश्य
 2. विदेशी सहायता की आवश्यकता की गणना
 3. विदेशी सहायता से सम्बन्धित मुद्दे
 4. विदेशी सहायता नीति में अकुशलताएं
 5. विदेशी ऋण सेवा भार की समस्या
 6. ऋण जाल में फंसे राष्ट्र के समक्ष विकल्प
 7. भारतवर्ष की विदेशी ऋण समस्या
- पंचम खण्ड अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं एवं भारत**
- इकाई –26 अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष**
1. अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के लक्ष्य, कोष के अभ्यंश, कार्य, कोष और समता मूल्य, कोष एवं विनिमय प्रतिबन्ध
 2. कोष के कुछ अन्य विशिष्ट प्रावधान
 3. अन्तर्राष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था में सुधार

4. अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की सीमाएं
- इकाई -27 विश्व बैंक तथा सम्बद्ध संस्थाएं**
1. विश्व बैंक के उद्देश्य बैंक की ऋण क्रियाएं
 2. विश्व बैंक की सम्बद्ध संस्थाएं
 3. विश्व बैंक द्वारा किये गये कार्यों की समीक्षा
- इकाई -28 यूरोपीय मुद्रा बाजार**
1. यूरोपीय मुद्रा बाजार, यूरो डालर
 2. यूरोपीय मुद्रा बाजार का उदभव तथा विकास
 3. यूरो मुद्रा बाजार की कार्य प्रणाली, प्रमुख विशेषताएं
 4. अन्तर्राष्ट्रीय वित्त प्रणाली में भूमिका
 5. यूरोपीय मुद्रा बाजार के विकास से उत्पन्न समस्याएं
- इकाई -29 अल्पकालीन व दीर्घकालीन पूँजी अन्तरण**
1. पूँजी अन्तरणों के प्रकार
 2. अन्तर्राष्ट्रीय पूँजी अन्तरणों के विभिन्न प्रकार
 3. अन्तर्राष्ट्रीय पूँजी अन्तरणों को प्रभावित करने वाले तत्व
 4. अन्तर्राष्ट्रीय पूँजी प्रवाहों के प्रभाव
- इकाई -30 भारत का विदेशी व्यापार**
1. भारत में विदेशी व्यापार की संरचना
 2. भारत के विदेशी व्यापार की दिशा
- इकाई -31 विश्व के प्रमुख आर्थिक क्षेत्रों के साथ भारत का विदेशी व्यापार**
1. विश्व व्यापार के महत्वपूर्ण आर्थिक क्षेत्र
 2. भारतीय विदेशी व्यापार के विश्व में प्रमुख आर्थिक क्षेत्र
 3. विश्व के प्रमुख क्षेत्रों के साथ भारतीय व्यापार की संरचना

MAEC - 06

भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास

प्रथम खण्ड भारतीय अर्थव्यवस्था

इकाई -01 भारतीय अर्थव्यवस्था में वृद्धि की प्रवृत्तियाँ

1. स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारतीय अर्थव्यवस्था
2. 1951 के बाद आर्थिक नियोजन तथा आर्थिक वृद्धि
3. नियोजन अवधि के दौरान वृद्धि दर, प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि की दर
4. 1951 के बाद से भारतीय अर्थव्यवस्था में क्षेत्रवार वृद्धि
5. अवर संरचनात्मक सुविधाओं में वृद्धि दर

इकाई -02 भारत में नियोजन एवं विकास प्रक्रिया नियोजित विकास की समीक्षा

1. पंचवर्षीय योजनाओं के उद्देश्य
2. नियोजित आर्थिक विकास की विशेषताएं , प्रमुख उपलब्धियां
3. नियोजन के कुछ महत्वपूर्ण सबक
4. नियोजित विकास के अप्राप्त उद्देश्य
5. नियोजित विकास की विफलताएं

इकाई -03 विकास की व्यूहरचनाएं – भारी उद्योग बनाम मजदूरी वस्तुएं उद्देश्य की उपलब्धियां

1. भारी उद्योगों का आशय तथा उनको व्यूहरचना में प्राथमिकता देने के उद्देश्य
2. भारी उद्योग मॉडल की कमियाँ
3. मजदूरी वस्तुओं का अर्थ व उनको उच्च प्राथमिकता देने से लाभ
4. भारत जैसी खुली अर्थव्यवस्था में मजदूरी वस्तु मॉडल की सीमाएं
5. क्या योजना काल में विकास की प्रारम्भिक आधारभूत व्यूहरचना में कोई परिवर्तन किया गया है?
6. भारी उद्योग मॉडल की उपलब्धियां व मूल्यांकन
7. भावी नियोजन की व्यूहरचना में इनका सापेक्ष स्थान क्या होना चाहिए।

इकाई -04 विकेन्द्रित नियोजन पद्धति

1. केन्द्रित व विकेन्द्रित नियोजन में मुख्य अन्तर
2. विकेन्द्रित नियोजन की कार्य पद्धति तथा पंचायती राज संस्थाओं से संबंध
3. विकेन्द्रित नियोजन की दिशा में प्रगति व अनुभव – कर्नाटक, पश्चिम बंगाल व गुजरात में विकेन्द्रित नियोजन
4. विकेन्द्रित नियोजन के मार्ग में बाधाएं व समस्याएं
5. विकेन्द्रित नियोजन की सफलता की आवश्यक शर्तें

6. भारत में विकेन्द्रित नियोजन का भविष्य व सुझाव
- इकाई –05 भारत में शिक्षा का विकास**
1. संरचना की विशेषताएं
 2. संरचना का विकास व शिक्षा, कृषि संरचना पर शिक्षा का प्रभाव
 3. औद्योगिक संरचना एवं शिक्षा
- द्वितीय खण्ड भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास**
- इकाई –06 जनसांख्यिकीय आयाम एवं आर्थिक विकास**
1. जनसंख्या वृद्धि का आर्थिक विकास पर प्रभाव
 2. जनसंख्या एवं पूंजी निर्माण
 3. जनसंख्या वृद्धि का अन्य आर्थिक चरों पर प्रभाव
 4. जनसंख्या वृद्धि एवं उत्पादन व बेरोजगारी
 5. मानवीय साधन तथा आर्थिक विकास
 6. प्रवासन का आर्थिक विकास पर प्रभाव
- इकाई –07 बचत एवं निवेश के प्रतिमान**
1. बचत का अर्थ और बचत के स्रोत
 2. विकासशील देशों में बचत सम्बन्धी समस्या
 3. घरेलू बचत बढ़ाने के उपाय
 4. बचतों का बाह्य स्रोत
 5. भारत में बचतों के स्रोत
 6. निवेश का अर्थ
 7. भारत की विभिन्न योजना काल अवधियों में बचत की प्रवृत्ति व निवेश प्रवृत्ति
- इकाई –08 पूंजी उत्पाद अनुपात एवं इसका प्रभाव**
1. पूंजी उत्पाद अनुपात का अर्थ एवं प्रकार
 2. पूंजी उत्पाद अनुपात की विशेषताएं
 3. अल्प विकसित राष्ट्रों में पूंजी उत्पाद अनुपात
 4. पूंजी उत्पाद अनुपात के अध्ययन व प्रयोग का महत्व
 5. भारत में पूंजी उत्पाद अनुपात
 6. विभिन्न योजना अवधियों में पूंजी उत्पाद अनुपात
- इकाई –09 भारत में निर्धनता व असमानता आकार, प्रकृति, कारण तथा इनको कम करने के उपाय**
1. निर्धनता का अर्थ, आकार व प्रकृति, कारण
 2. निर्धनता कम करने के सरकारी उपाय
 3. निर्धनता उन्मूलन के लिए सुझाव
 4. असमानता का अर्थ, आकार व प्रकृति
 5. आय की असमानता के कारण, कम करने के संबंध में सरकारी उपाय
 6. आय की असमानताओं को कम करने के लिए सुझाव

इकाई -10 बेरोजगारी स्वरूप तथा आकार – उद्योगीकरण तथा रोजगार एवं रोजगारनीति

1. बेरोजगारी का स्वरूप, कारण
2. भारत में बेरोजगारी के अनुमान, भारत सरकार की रोजगार सम्बन्धी नीति
3. भारत में शिक्षित वर्ग में बेरोजगारी
4. भारत में उद्योगीकरण तथा रोजगार

तृतीय खण्ड कृषि अर्थव्यवस्था

इकाई -11 कृषि भूमि सम्बन्ध एवं भूमि सुधार

1. कृषि भूमि सम्बन्ध
2. भारत में भूमि सुधार कार्यक्रम

इकाई -12 कृषि निविष्ट / कृषि आगत
कृषि निविष्ट (आगत)

इकाई -13 हरित क्रान्ति

इकाई -14 भारतीय कृषि विकास की उपलब्धियां तथा कमियाँ

1. कृषि विकास की उपलब्धियां
2. नियोजन और कृषि विकास
3. कृषि क्षेत्र में असन्तुलन व कमियां।

इकाई -15 खाद्यान्न आहरण तथा सुरक्षित भण्डार नीति

1. आहरण का अर्थ एवं प्रणाली
2. सुरक्षित भण्डार का अर्थ एवं उद्देश्य
3. भारत में खाद्यान्न नीति का प्रारम्भ एवं विकास
4. आहरण व भण्डार की प्रमुख प्रवृत्तियां
5. आहरण और सुरक्षित भण्डार नीति के लाभ
6. आहरण और भण्डार नीति के दोष

इकाई -16 सार्वजनिक वितरण प्रणाली

1. सार्वजनिक वितरण प्रणाली का अर्थ एवं उद्देश्य
2. भारत में सार्वजनिक वितरण प्रणाली का उदय एवं विकास व विशेषताएं
3. सार्वजनिक वितरण प्रणाली का क्षेत्र एवं सुधार तथा वितरण प्रणाली का क्रियान्वयन

चतुर्थ खण्ड भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना

इकाई -17 भारत में औद्योगिक विकास की प्रवृत्ति एवं समस्याएं

1. स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व औद्योगिक विकास : ऐतिहासिक सिंहावलोकन
2. विकास के मार्ग में बाधाएं

इकाई -18 कृषि व उद्योग के मध्य व्यापार शर्तें

1. व्यापार शर्तें प्रकार, कृषि उद्योग अन्तः श्रृंखलाएं
2. व्यापार शर्तों की क्रियात्मक उपयोगिता

3. व्यापार शर्तों की सीमायें
- इकाई -19 भारत में क्षेत्रीय विषमताएं**
1. प्रति व्यक्ति राज्य घरेलू उत्पादन से अन्तर्प्रान्तीय विभिन्नतायें
 2. औद्योगिक एवं आधारीक संरचना विकास का स्वरूप
 3. क्षेत्रीय विषमता में कृषि का योगदान
 4. क्षेत्रीय विकास के संयुक्त सूचक
- इकाई -20 भारत में संतुलित औद्योगिक विकास की नीतियाँ**
1. केन्द्रीय विनियोग
 2. संस्थागत वित्त का संवितरण स्वरूप
 3. औद्योगिक छितराव के लिए नीतियाँ एवं कार्यक्रम
 4. क्षेत्रीय विकास नीति की समीक्षा
- इकाई -21 भारतवर्ष में बहुराष्ट्रीय निगम**
1. बहुराष्ट्रीय निगमों की विशेषताएं
 2. बहुराष्ट्रीय निगमों में प्रवेश में बाधायें
 3. व्यवसाय विधि तथा तकनीकी
 4. अमेरिका की दशा बिगड़ना
 5. पूंजीगत तकनीकी
 6. कनाडा तथा भारत के अनुभव
- पंचम खण्ड विदेशी व्यापार एवं सार्वजनिक वित्त**
- इकाई -22 भारतवर्ष की समानान्तर अर्थव्यवस्था**
1. कालेधन की परिभाषा, स्रोत तथा क्षेत्र
 2. काली आय के अनुमान
 3. काले धन को रोकने के उपाय
 4. काले धन में वृद्धि के प्रभाव
- इकाई -23 भारत का भुगतान सन्तुलन**
1. भुगतान सन्तुलन का अर्थ , मर्दे
 2. स्वतंत्रता के पूर्व भुगतान सन्तुलन और उसके उपरान्त भुगतान सन्तुलन
 3. भुगतान सन्तुलन में घाटे के कारण
 4. भारत सरकार द्वारा प्रतिकूल भुगतान सन्तुलन के समाधान हेतु उपाय
 5. भुगतान सन्तुलनकी प्रतिकूलता को दूर करने के उपाय
- इकाई -24 निर्यात सम्वर्द्धनऔर आयात प्रतिस्थापन**
1. निर्यात सम्वर्द्धन का अर्थ, आवश्यकता
 2. निर्यात सम्वर्द्धन के लिए सरकारी प्रयत्न
 3. निर्यात सम्वर्द्धन के लिए सुझाव
 4. आयात प्रतिस्थापन का अर्थ, प्रगति
 5. आयात प्रतिस्थापन से लाभ हानियाँ

6. आयात प्रतिस्थापन के सम्बन्ध में सुझाव
- इकाई –25 भारतीय कर व्यवस्था**
1. कर की अवधारणा
 2. हमारी अर्थव्यवस्था में कराधान की भूमिका
 3. भारतवर्ष में कराधान के उद्देश्य
 4. केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकारों के बीच करों का बटवारा
 5. महत्वपूर्ण केन्द्रीय कर
 6. राज्य सरकारों के महत्वपूर्ण कर
 7. प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष कर
 8. भारतीय कर व्यवस्था के महत्वपूर्ण लक्षण
 9. कर सुधार की आवश्यकता
- इकाई –26 समाज के विभिन्न वर्गों पर करापात**
1. करापात की अवधारणा, व्यवहार में करापात
 2. करापात तथा समाज के विभिन्न वर्गों का सम्बन्ध
 3. कुछ महत्वपूर्ण प्रत्यक्ष करों का करापात
 4. समस्त प्रत्यक्ष करों का करापात
 5. अप्रत्यक्ष करों का करापात – अवधारणा सम्बन्धी विचार
 6. समाज के विभिन्न वर्गों पर अप्रत्यक्ष करों का करापात
- इकाई –27 भारत में सार्वजनिक व्यय की प्रवृत्तियाँ**
1. भारत में सार्वजनिक व्यय—कुछ सामान्य समालोचनाएं
 2. सार्वजनिक व्यय सकल राष्ट्रीय उत्पाद के सन्दर्भ में
 3. कुल सार्वजनिक व्यय केन्द्र व राज्यों की तुलनात्मक स्थिति
 4. विकासात्मक और गैर विकासात्मक व्यय
 5. योजना और गैर योजना व्यय
 6. उपभोग व पूंजी निर्माण
- इकाई –28 भारत में केन्द्र राज्य वित्त सम्बन्ध**
1. विषय के अध्ययन का उद्देश्य
 2. भारत में संघात्मक वित्तीय व्यवस्था का इतिहास
 3. भारतीय संघ में केन्द्र राज्य वित्तीय सम्बन्ध
 4. भारत में वित्त आयोगों का गठन व उनकी सिफारिशें

MAEC - 07

श्रम अर्थशास्त्र

प्रथम खण्ड श्रम बाजार

इकाई -01 श्रम की अवधारणा

1. श्रम का अर्थ
2. श्रम के प्रकार
3. श्रम की विशेषताएं
4. श्रम समस्याएं
5. श्रम का महत्व
6. श्रम व श्रम अर्थशास्त्र
7. कार्य की अवधारणा व क्षेत्र
8. रोजगार की अवधारणा व क्षेत्र
9. श्रम उत्पादन के साधन के रूप में
10. बेरोजगारी की समस्या

इकाई -02 श्रम अर्थशास्त्र अर्थ, क्षेत्र एव महत्व

1. श्रम अर्थशास्त्र का क्षेत्र
2. कार्यबल में महिलाएं
3. श्रम अर्थव्यवस्था का महत्व
4. बाल श्रम

इकाई -03 श्रम बाजार

1. श्रम बाजार के प्रतिरूप
2. श्रम बाजार की प्रगतिशीलता
3. विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में श्रम बाजार का द्वैतवाद
4. भारत में श्रम बाजार

इकाई -04 श्रम पूर्ति की अवधारणा

1. श्रम पूर्ति वक्र
2. एक फर्म के लिए श्रम पूर्ति वक्र
3. सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में श्रमपूर्ति
4. श्रम पूर्ति में महिलाएं
5. महिलाओं की मजदूरी में अन्तर के कारण
6. भारत में महिला श्रम का मुख्य कार्यक्षेत्र

इकाई -05 श्रम की मांग एवं श्रम की मांग के सिद्धान्त

1. श्रम की मांग
2. पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत संतुलन स्तर पर मजदूरी एवं रोजगार
3. अपूर्ण प्रतियोगी बाजार में संतुलन
4. न्यूनतम मजदूरी

- इकाई –06 श्रम उत्पादकता**
1. उत्पादकता का अभिप्राय
 2. उत्पादकता की माप
 3. श्रम की उत्पादकता को निर्धारित करने वाले तत्व
 4. श्रम की उत्पादकता में वृद्धि के उपाय, एवं सुझाव
- इकाई –07 विकासोन्मुख अर्थव्यवस्था में श्रम समस्याएं**
1. श्रम समस्याओं के कारण
 2. विकासोन्मुख अर्थव्यवस्था में श्रमिकों की विशेषताएं
- इकाई –08 बेरोजगारी एवं अर्द्धरोजगार**
1. बेरोजगारी का अर्थ
 2. दृश्य अर्द्धरोजगार का माप
 3. बेरोजगारी के अन्य माप
 4. भारत में बेरोजगारी के अनुमान
 5. बेरोजगारी के कारण
 6. बेरोजगारी दूर करने में सरकारी नीति
 7. मुख्य रोजगार कार्यक्रम
 8. छिपी हुई बेरोजगारी एवं पूंजी निर्माण
- द्वितीय खण्ड श्रमशक्ति संरचना एवं जनशक्ति नियोजन**
- इकाई –09 जनसंख्या संरचना और जनशक्ति नियोजन**
1. जनसंख्या का व्यावसायिक विभाजन
 2. भारत में व्यावसायिक संरचना
 3. व्यावसायिक ढांचे की स्थिति का विश्लेषण
 4. जनसंख्या व व्यावसायिक वितरण में अपरिवर्तनशीलता के कारण
- इकाई –10 भारतीय वैज्ञानिक पुनर्गठन और स्वचालिता के संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में तकनीकी परिवर्तन एवं रोजगार**
1. तकनीकी का अर्थ एवं अवधारणा
 2. वैज्ञानिक पुनर्गठन का अर्थ एवं अवधारणा
 3. स्वचालिता का अर्थ एवं अवधारणा
 4. भारत में रोजगार की स्थिति
 5. तकनीकी परिवर्तन एवं रोजगार
 6. वैज्ञानिक पुनर्गठन का प्रभाव
 7. स्वचालिता का प्रभाव
- इकाई –11 तकनीकी द्वैतवाद तथा ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में अनौपचारिक क्षेत्र का विकास**
1. तकनीकी द्वैतवाद
 2. अनौपचारिक क्षेत्र का परिमाण
 3. अनौपचारिक क्षेत्र की समस्याएं
 4. अनौपचारिक क्षेत्र उद्यमों की पहचान

- इकाई -12 श्रम की गतिशीलता एवं प्रवास**
1. श्रम शक्ति के प्रवास की प्रक्रिया
 2. श्रम के प्रवास के कारण
 3. भारत में आन्तरिक प्रवास के रूप
 4. प्रवास के परिणाम
- इकाई -13 नियोजन हेतु श्रम की मांग एवं आपूर्ति के प्रक्षेपण की विधियां**
1. प्रक्षेपण की विधियाँ
 2. आगत निर्गत मॉडल के मुख्य तत्व
- इकाई -14 रोजगार सृजन कार्यक्रम**
1. भारत में बेरोजगारी का स्वरूप
 2. भारत में बेरोजगारी के अनुमान
 3. भारत में रोजगार की उन्नतियाँ
 4. रोजगार संरचना
 5. भारत में बेरोजगारी संबंधी मुख्य लक्षण
 6. रोजगार बढ़ाने संबंधी सरकारी नीति
 7. समन्वित ग्राम विकास कार्यक्रम
 8. रोजगार प्रेरित विकास रणनीति
 9. ग्रामीण रोजगार के लिए नई पहल
 10. रोजगार नीति में परिवर्तन और जनशक्ति आयोजन हेतु सुझाव
- तृतीय खण्ड मजदूरी सिद्धान्त एवं नीति**
- इकाई -15**
1. पूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत मजदूरी निर्धारण
 2. अपूर्ण प्रतियोगिता के अन्तर्गत मजदूरी निर्धारण
 3. द्विपक्षीय एकाधिकार मॉडल
- इकाई -16 संस्थागत व सौदाकारी सिद्धान्त**
1. मजदूरी के सौदाकारी सिद्धान्त व संस्थागत सिद्धान्त
 2. सौदाकारी सिद्धान्त के बारे में जे.आर.हिक्स का मत
 3. सौदाकारी सिद्धान्त के बारे में शैकल के विचार
 4. सौदाकारी के बारे में पेन के विचार एवं उसका मॉडल
 5. सौदाकारी सिद्धान्त की आलोचनाएं
 6. सौदाकारी की सफलता की शर्तें
- इकाई -17 मजदूरी ढांचा और मजदूरी भिन्नता**
1. मजदूरी भिन्नता
 2. मजदूरी भिन्नता के प्रकार
 3. पुरुषों तथा स्त्रियों की मजदूरियों में अन्तर के कारण
- इकाई -18 मजदूरी भुगतान की पद्धतियाँ**
1. मजदूरी बनाम वेतन
 2. न्यूनतम मजदूरी, आजीविका मजदूरी एवं उचित मजदूरी

3. मजदूरी पद्धतियों एवं उनके प्रकार
 4. विभिन्न प्रेरणात्मक पद्धतियों
 5. बोनस
- इकाई -19 विकासशील देशों में मजदूरी नीति : न्यूनतम मजदूरी उचित मजदूरी एवं पर्याप्त मजदूरी**
1. मजदूरी नीति से आशय
 2. न्यूनतम मजदूरी , उचित मजदूरी, पर्याप्त मजदूरी
- इकाई -20 भारत में न्यूनतम मजदूरी**
1. न्यूनतम मजदूरी निर्धारण
 2. उच्च मजदूरी की अर्थव्यवस्था के निहितार्थ
 3. विभिन्न उद्योगों तथा राज्यों में श्रमिकों की मजदूरी
 4. राष्ट्रीय न्यूनतम समय मजदूरी
 5. भारत में न्यूनतम मजदूरी की आवश्यकता
 6. न्यूनतम मजदूरी कानून के उद्देश्य
 7. न्यूनतम मजदूरी अधिनियम
 8. भारत में बोनस की समस्या
- चतुर्थ खण्ड श्रम सम्बन्ध एवं श्रम संघवाद**
- इकाई -21 श्रम सम्बन्ध अर्थ एवं क्षेत्र : श्रम सम्बन्धों का बदलता प्रतिमान, औद्योगिक सम्बन्ध व्यवस्था**
1. श्रम सम्बन्धों का बदलता प्रतिमान
 2. औद्योगिक सम्बन्ध व्यवस्था
 3. भारत में श्रम सम्बन्धों की आधुनिक प्रवृत्तियाँ
- इकाई -22 भारत में कृषि श्रम**
1. कृषि श्रम के प्रकार
 2. ग्रामीण श्रम जाँच
 3. कृषि श्रम की मुख्य विशेषताएं
 4. ग्रामीण श्रमिकों को संगठित करने की योजनाएं
- इकाई -23 श्रम संघवाद**
1. श्रम संघ की परिभाषा एवं प्रकार, उद्देश्य कार्य
 2. भारत में श्रम संघ का उदगम एवं विकास
 3. श्रम संघ की वित्त व्यवस्था
 4. श्रम संघ के लाभ, हानि
 5. श्रम संघ आन्दोलन की कमियां एवं संघों को सुदृढ़ करने के उपाय
 6. उचित पारितोषण निर्धारणतार्यें एवं संघों का महत्त्व
- इकाई -24 भारत में श्रमिकसंघों का उदय संरचना एवं समस्याएं**
1. श्रमिक संघ का अर्थ, उदय एवं संघों का इतिहास
 2. श्रमिक संघों की वर्तमान स्थिति
 3. श्रमिक संघों के कार्य एवं उद्देश्य

4. उद्देश्यों को प्राप्त करने की विधियाँ
 5. भारतीय श्रमिक संघों की संरचना और समस्याएं
- इकाई –25 औद्योगिक शान्ति बचाव और समझौते**
1. औद्योगिक विवादों से बचाव के उपाय
 2. औद्योगिक विवादों का निपटारा
- इकाई –26 औद्योगिक सम्बन्ध तंत्र**
1. औद्योगिक सम्बन्धों की कुशलता
 2. श्रमिकों की भागीदारी वाला व्यवस्थापक मण्डल
- इकाई –27 सामूहिक सौदेबाजी**
1. सामूहिक सौदेबाजी की सफलता के लिए आवश्यकता शर्तें , आवश्यकता और महत्त्व
 2. सामूहिक सौदेबाजी के प्रकार, विधियां एवं सामूहिक सौदेबाजी में आने वाली बाधाएं
 3. भारत में सामूहिक सौदेबाजी, सामूहिक सौदेबाजी के विरुद्ध तर्क एवं तत्व ।
- इकाई –28 अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन**
1. अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के मूलभूत सिद्धान्त
 2. सदस्यता प्राप्त करने की प्रक्रिया वित्त व्यवस्था
 3. अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की संरचना, संगठन के कार्य एवं गतिविधियां, अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन एवं भारत आई. एल. ओ. के कार्य का आंकलन
- पंचम खण्ड श्रम कल्याण एवं सामाजिक सुरक्षा**
- इकाई –29 श्रम कल्याण अवधारणा एवं संरचनात्मक ढाँचा**
1. श्रमिक कल्याण के सिद्धान्त एवं श्रम कल्याण के प्रति दृष्टिकोण
- इकाई –30 सामाजिक सुरक्षा सामाजिक सहायता एवं सामाजिक बीमा**
1. सामाजिक सुरक्षा, प्रकार, सामाजिक बीमा के लाभ एवं सामाजिक सुरक्षा के माप, सामाजिक सुरक्षा का क्षेत्र, सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमों का मूल्यांकन
- इकाई –31 भारत में सामाजिक सुरक्षा**
1. भारत में सामाजिक सुरक्षा के विचार का विकास,
 2. भारत में सामाजिक सुरक्षा के उपाय, सामाजिक सुरक्षा के विचारणीय बिन्दु
- इकाई –32 श्रम कल्याण योजनाएं एवं संस्थाएं**
1. औद्योगिक श्रमिकों की आवास व्यवस्था स्वास्थ्य योजनाएं,
 2. कल्याणकारी संस्थाएं, ऐच्छिक संस्थाएं

इकाई —33 भारत में महिला एवं बालश्रम

बाल श्रम, महिला श्रम

इकाई —34 भारत में ग्रामीण श्रम

1. ग्रामीण रोजगार के प्रकार, ग्रामीण श्रम शक्ति का परिमाण, मुख्य मजदूरों (ग्रामीण) का वर्गीकरण।
2. ग्रामीण बेरोजगारी का विस्तार, वर्तमान प्रवृत्ति और आठवीं योजना के अनुमान
3. ग्रामीण श्रम और गरीबी, कृषि श्रम, कृषि मजदूरी, बंधुआ मजदूरी
4. बेरोजगारी और अल्परोजगार के उन्मूलन के लिए प्रारम्भ की गई योजनाएं एवं इनके प्रभाव।

MAEC - 08

क्षेत्रीय आर्थिक विकास एवं नियोजन

- प्रथम खण्ड स्थानिक सिद्धान्त**
- इकाई -01 अंचल क्षेत्रीय अर्थशास्त्र : महत्व तथा आर्थिक विश्लेषण में स्थान क्षेत्रीय महत्व**
1. अंचल क्षेत्रीय अर्थशास्त्र की परिभाषा, अंचल क्षेत्रीय अर्थशास्त्र एवं अंचल क्षेत्रीय समस्याएं
 2. आर्थिक विकास में स्थान क्षेत्रीय तत्वों का महत्व व उनसे सहसम्बन्ध, अंचल क्षेत्रीय क्रियाओं को निर्धारित करने वाले घटक व तत्व
- इकाई -02 एकाधिकृत बाजार एवं मूल्य निर्धारण**
1. अपूर्ण प्रतियोगिता के कारण, प्रकार, एकाधिकृत प्रतियोगिता का अर्थ, विशेषताएं
 2. एकाधिकृत प्रतियोगिता के अन्तर्गत कीमत एवं उत्पादन निर्धारण,
 3. अल्पकाल में फर्म का सन्तुलन तथा कीमत निर्धारण
 4. दीर्घकाल में फर्म का साम्य, एकाधिकृत प्रतियोगिता का आलोचनात्मक मूल्यांकन, पूर्ण प्रतियोगिता और एकाधिकृत प्रतियोगिता में अन्तर, एकाधिकार और एकाधिकृत प्रतियोगिता में अन्तर
- इकाई -03 स्थानीयकरण के सिद्धान्त**
1. स्थानीयकरण का अर्थ, घटक, लाभ हानि, सिद्धान्त
- इकाई -04 बाजार के आकार एवं स्वरूप के सिद्धान्त**
1. बाजार के निर्धारक तत्व, बाजार के आकार एवं प्रारूप का निर्धारण, बाजार का आकार एवं प्रारूप और भारत का बाजार विस्तार
- इकाई -05 साम्यावस्था और असाम्यावस्था सिद्धान्त लौश मॉडल व उसकी आलोचना**
1. बाजार दशाए एवं साम्यावस्था, साम्यावस्था पर सैद्धान्तिक व सामान्य विचार वर्णन, क्षेत्रीय नियोजन और साम्यावस्था सिद्धान्त।
- इकाई -06 केन्द्रीयकरण की मितव्ययताएं व अमितव्ययताएं विकास ध्रुव का विचार**
1. मितव्ययताएं और अमितव्ययताएं, विकास ध्रुव और आइसोडापेन, व्यवहार में एकत्रीकरण विश्लेषण

- द्वितीय खण्ड अन्तराल का समष्टि अर्थशास्त्र**
- इकाई –07 क्षेत्र अवधारणा, प्रकार और पहचान**
1. क्षेत्र की अवधारणा, प्रकार, औपचारिक क्षेत्रों की पहचान या चिन्हित करना, कार्यात्मक क्षेत्रों की पहचान
- इकाई –08 प्रादेशिक आय लेखा : प्रादेशिक आदा-प्रदा विश्लेषण**
1. प्रादेशिक आय लेखा, लेखा निर्माण, प्रादेशिक इनपुट-आउटपुट विश्लेषण ।
- इकाई –09 वस्तुएं एवं पूंजी का अन्तर्प्रादेशिक प्रवाह / चालू एवं पूंजी खातों का सन्तुलन**
- प्रस्तावना, प्रादेशिक स्तर पर आय लेखे
- इकाई –10 प्रादेशिक विकास के सिद्धान्त**
- प्रादेशिक विकास के सिद्धान्त
- इकाई –11 क्षेत्रीय संवृद्धि के सिद्धान्त मिर्डल और हर्षमैन के सिद्धान्तों का समीक्षात्मक मूल्यांकन**
- मिर्डल का स्प्रेड और बैंकवाश प्रभावों का सिद्धान्त, हर्षमैन का ध्रुवीकरण और नीचे रिवास प्रभाव सिद्धान्त मिर्डल और हर्षमैन के सिद्धान्तों में समानताएं और असमानताएं, सिद्धान्तों की समालोचना
- इकाई –12 केन्द्रीय स्थल सिद्धान्त**
- केन्द्रीय स्थल सिद्धान्त, मॉग एवं आपूर्ति, वस्तुओं तथा सेवाओं की सीमा, प्रभाव सीमा एवं क्रम वरीयता, बाजार की ज्यामिति, श्रेणी श्रृंखला के कार्य, केन्द्रीय स्थलों का भौगोलिक मॉडल, केन्द्रीय स्थल तथा योजना
- तृतीय खण्ड क्षेत्रीय नियोजन मॉडल एवं अनुप्रयोग**
- इकाई –13 प्रादेशिक आगत – निर्गत विश्लेषण**
- इनपुट-आउटपुट सारिणी, प्रादेशिक स्तर की इनपुट आउटपुट सारणियाँ ।
- इकाई –14 अन्तर अंचल क्षेत्रीय व्यापार एवं अंचल क्षेत्रीय गुणक**
- अन्तर अंचल क्षेत्रीय व्यापार, गुणक सूत्र व चित्र निरूपण
- इकाई –15 औद्योगिक काम्पलेक्स विश्लेषण**
- औद्योगिक काम्पलेक्स का अर्थ, कार्यकारीकरण, स्थापना के पक्ष व विपक्ष में तत्त्व, औद्योगिक काम्पलेक्स तथा फैलाव की नीतियाँ, अंचलक्षेत्रीय उत्पादन काम्पलेक्स के स्थानों की पहचान तथा स्थापना, 'ग्रोथपोल' तथा विकास केन्द्र तथा औद्योगिक काम्पलेक्स

- इकाई –16 बहुस्तरीय नियोजन : इंटेरेटिव प्रकम का उपयोग लांगे के माडल का परिचय**
नियोजन, लांगे का मॉडल।
- इकाई –17 गुरुत्वाकर्षण मॉडल तथा अन्तर अंचल क्षेत्रीय प्रवाह का निर्धारण**
ग्रेविटी मॉडल, अन्तर अंचलक्षेत्रीय वस्तु बहाव, अन्तर अंचल क्षेत्रीय सेवाओं के प्रवाह।
- चतुर्थ खण्ड भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना**
- इकाई –18 क्षेत्रीय विकास के सूचक – आंकड़ों के स्रोत एवं बाधाएं**
1. क्षेत्रीय विकास के सूचक
 2. विकास के सूचकों के बनाने की क्रिया विधि
- इकाई –19 भारत के प्रमुख प्राकृतिक संसाधन एवं उनका प्रादेशिक वितरण**
1. भारत के प्राकृतिक संसाधन : प्रादेशिक विश्लेषण
 2. मिट्टी
 3. वन संसाधन
 4. खनिज
 5. जल व शक्ति संसाधन
- इकाई –20 औपनिवेशिक काल में भारतीय प्रादेशिक संरचना का विकास**
1. भारत का आधुनिकीकरण एवं भारत का उपनिवेशीकरण
 2. अठारहवीं शताब्दी में भारतीय अर्थव्यवस्था
 3. उपनिवेशवाद के चरण
 4. राजस्व प्रणाली व प्रादेशिक अर्थव्यवस्थाएं
 5. कृषि का व्यावसायिककरण
- इकाई –21 कृषि विकास परिवर्तनशील क्षेत्रीय संरचना**
1. कृषि उत्पादन क्षमता
 2. कृषि क्षेत्रफल
 3. कृषि उत्पादन का प्रादेशिक स्वरूप
 4. मूल्य उत्पादकता
 5. नयी कृषि नीति
 6. भारत में कृषि क्षेत्र
 7. भारत में फसलों के ढाँचे में परिवर्तन
 8. सिंचाई साधनों का विकास
- इकाई –22 औद्योगिक विकास परिवर्तनशील क्षेत्रीय संरचना**

1. औद्योगिक विकास एवं क्षेत्रीय संरचना
2. क्षेत्रीय विकास के लिए औद्योगीकरण
3. क्षेत्रीय औद्योगिक विकास का स्वरूप एवं संरचना

इकाई –23 सामाजिक आर्थिक आधारभूत ढांचे के विकास में क्षेत्रीय असंतुलन

1. आधार ढांचा
2. क्षेत्रीय असंतुलन
3. स्वयं के द्वारा सीखने के अभ्यास प्रश्न

इकाई –24 राज्यों के अन्तर्गत अंतःक्षेत्रीय विषमताएं, राजस्थान के विशेष संदर्भ में

1. भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में राजस्थान की स्थिति
2. राजस्थान में अन्तःक्षेत्रीय विषमता के सूचक
3. क्षेत्रीय असमानताओं के कारण और असमानताओं को कम करने के सुझाव

इकाई –25 भारत में नियोजन प्रक्रिया के क्षेत्रीय आयाम

1. क्षेत्रीय असंतुलन के सूचक
2. कृषि क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, सेवा क्षेत्र
3. आयोजन एवं क्षेत्रीय असंतुलन
4. प्रादेशिक असमानताएं कम करने के लिए किये गये उपाय
5. संतुलित विकास के उपाय

इकाई –26 भारत में बहु स्तरीय नियोजन (राज्य स्तर तथा जिला स्तर नियोजन के विशेष संदर्भ में)

1. विश्व अर्थव्यवस्थाओं में पायी जाने वाली विभिन्न प्रकार की नियोजन व्यवस्थायें अथवा प्रणालियाँ
2. पिछड़े क्षेत्रों और अर्द्धविकसित अर्थव्यवस्थाओं के लिए नियोजन तकनीक
3. भारत में नियोजन की विधियाँ और संगठन

इकाई –27 नगर एवं महानगर नियोजन

1. महानगरों की मुख्य समस्याएं व नियोजन
2. समन्वित अंचल क्षेत्रीय नियोजन
3. अध्ययन व समस्याओं का सारांश

इकाई –28 ग्रामीण शहरी समन्वय के लिए नियोजन ग्रामीण शहरी प्रवास प्रवृत्ति: उपलब्ध स्थान में अधिकतम आवासीय संरचनाओं में सम्बन्ध कडियाँ

1. ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर प्रवास की प्रवृत्ति के कारण
2. गांवों से शहरों की ओर प्रवासी प्रवृत्ति के गुण
3. गांवों से शहरों की ओर प्रवास करने की प्रवृत्ति के दोष व कमियाँ
4. ग्रामीण शहरी जनसंख्या के अन्तर्गमन के प्रभाव
5. ग्रामीण शहरी जनसंख्या के अन्तर्गमन प्रवास के कारण नई भूमि की खोज
6. ग्रामीण शहरी समन्वय के लिए नियोजन
7. स्व पाठ अभ्यास अथवा स्व-शिक्षण प्रयोग

इकाई –29 अंचल क्षेत्रीय साधन विकास की योजनाएं

1. साधन विकास के लिए योजनाएं
2. क्षेत्रीय नियोजन
3. आयोजना क्षेत्रों का विभाजन
4. नदी घाटी परियोजनाएं
5. वाटर शैड प्रबन्धन कार्यक्रम

इकाई –30 जिला स्तर का विकेन्द्रित नियोजन

1. जिला नियोजन तथा पंचायत राज
2. जिला नियोजन व परियोजना नियोजन नगर नियोजन

इकाई –31 भारत में क्षेत्रीय विकास योजनाएं

1. सूखा आशंकित क्षेत्र कार्यक्रम, मरुस्थल विकास-कार्यक्रम
2. पर्वतीय क्षेत्र विकास योजनाएं जनजाति क्षेत्रीय विकास योजनाएं

MAST - 01
एम0 ए0 संस्कृत (पूर्वाद्ध)
वैदिक वाङ्मय

1. निम्नलिखित सूक्तों का हिन्दी अनुवाद तथा देवता परिचय –
ऋग्वेदीय सूक्त – इन्द्र – 1 – 32
सवितृ – 1 – 35
मरुत् – 1 – 85
अग्नि IV. 7
अक्ष सूक्त X. 34
विश्वामित्र – नदी संवाद
अथर्ववेदीय सूक्त : राष्ट्रभिर्वर्धन – 1 – 29
पृथिवी XII (प्रारंभिक 1 से 10 मंत्र तक)
2. निरुक्तः – प्रथम अध्याय
एक से पांच पाद तक व्याख्या प्रश्न एवं निर्वचन
3. केनोपनिषद् (सम्पूर्ण) – व्याख्या एवं प्रश्न
4. वैदिक संहिताओं, प्रमुख ब्राह्मण ग्रन्थों, आरण्यकों, उपनिषदों, एवं वेदांगों का सामान्य परिचय।

MAST - 02

एम0 ए0 संस्कृत (पूर्वाद्ध)

पालि-प्राकृत, अपभ्रंश एवं भाषा विज्ञान

1. निम्नलिखित पाठों से अनुवाद, संस्कृत रूपान्तर तथा व्याकरणात्मक टिप्पणी –
 - अ. वालेरुजातकम्
 - ब. महाभिनिक्खमन्
 - स. मयादिविमा सुपिनं
 - द. महापरिनिष्वान सुत्तं
 - य. धम्मपद संग्गधे
2. अनुवाद, व्याकरण तथा संस्कृत रूपान्तर
 - अ. गाहासत्तसई
 - ब. रावणवधे
 - स. वाणपंचमी कहाओ
3. अपभ्रंश एवं समीक्षात्मक प्रश्न
 - अ. अपभ्रंश मुक्तक संग्गधे
 - ब. संन्देशरासकम्
 - स. पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषाओं का विकास एवं विशेषताएं
4. भाषा-विज्ञान-परिभाषा एवं विषय क्षेत्र
 - अ. भाषा विज्ञान की परिभाषा एवं विविध रूप
 - ब. ध्वनि विज्ञान
 - स. पद विज्ञान
 - द. वाक्य विज्ञान
 - य. अर्थ विज्ञान
 - र. प्रमुख भारतीय भाषा शास्त्रियों का परिचय, यास्क, पाणिनि, कात्यायन, पतञ्जलि और भर्तृहरि ।

MAST - 03

एम0 ए0 संस्कृत (पूर्वाद्ध)

व्याकरण तथा अलंकार

1. लघु सिद्धान्त कौमुदी से – रूप सिद्धी
सुबन्तः अजन्त प्रकरण – पुलिंगः राम, सर्व, हरि
स्त्रीलिंग : रमा, नदी
नपुंसकलिंगः ज्ञान
हलन्त प्रकरण – पुलिंगः राजन्, इदम्
स्त्रीलिंगः मातृ
नपुंसकलिंगः अहन्
तिङ्न्त प्रकरण – भू, एध् (रूप सिद्धी दसों लकारों में)
कृदन्त तथा तद्धित (केवल प्रकृति प्रत्यय निरूपण)
2. समास – सामान्य परिचय
3. अलंकार – काव्यप्रकाश (नवम् एवं दशम् उल्लास)
 - शब्दालंकार – अनुप्रास, यमक, श्लेष
 - अर्थालंकार – पूर्णोपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, दृष्टान्त,
अर्थान्तरन्यास, अतिशयोक्ति,
अपहनुति, भ्रान्तिमान, दीपक, विभावना,
तुल्योगिता, विशेषोक्ति, सन्देह, निदर्शना,
काव्यलिंग ।

MAST - 04
एम0 ए0 संस्कृत (पूर्वाद्ध)
दर्शन

1. सांख्यकारिका : कारिका 1 से 20 तक
कारिकाओं की व्याख्या तथा प्रश्न
2. तर्कभाषा : अनुमान प्रमाण पर्यन्त – परिचय (प्रत्यक्ष तथा अनुमान)
व्याख्या तथा प्रश्न
3. वेदान्तसार : परिचय, अधिकारी, अज्ञान का स्वरूप एवं उनकी शक्तियों
सूक्ष्म शरीर, पंचीकरण एवं मोक्ष ।
व्याख्या तथा प्रश्न
4. योग दर्शन – योग की परिभाषा, समाधि और उसके भेद, ईश्वर तथा
अष्टांगयोग
व्याख्या तथा प्रश्न ।

MAST - 05
एम0 ए0 संस्कृत (पूर्वाद्ध)
नाटक

1. मृच्छकटिकम् (सम्पूर्ण)
कवि परिचय, नाटकों का उद्भव तथा विकास, नाटक का परिचय, पात्रों का चरित्र चित्रण, श्लोकों का अनुवाद, तथा संस्कृत व्याख्या एवं सूक्तियों की व्याख्या ।

MAST - 06
एम0 ए0 संस्कृत (पूर्वाद्ध)
काव्य

काव्यों का सामान्य परिचय, कवि परिचय, अनुवाद, संस्कृत व्याख्या, चरित्र
चित्रण तथा प्रश्न –

- 1– नैषधीयचरितम् – प्रथम सर्ग
- 2– विक्रमांकदेव चरितम् – प्रथम निःश्वास
- 3– शिवराजविजयम् – प्रथम निःश्वास

MAST - 07
एम0 ए0 संस्कृत (पूर्वाद्ध)
काव्यशास्त्र

1. काव्यप्रकाश – प्रथम से चतुर्थ उल्लास तक
कारिकाओं की व्याख्या, काव्यप्रकाश का सामान्य परिचय तथा प्रश्न ।
2. काव्यशास्त्र के प्रमुख सम्प्रदायों का सामान्य परिचय ।

MAST - 08

एम0 ए0 संस्कृत (पूर्वाद्ध)
नाट्य एवं नाट्यशास्त्र

1. वेणीसंहार – प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय अंक
2. रत्नावली नाटिका (सम्पूर्ण)
3. दशरूपक – प्रथम तथा तृतीय प्रकाश
(अवलोक सहित)

श्लोकों तथा कारिकाओं का अनुवाद, संस्कृत व्याख्या, पात्रों का चरित्र चित्रण, कवि परिचय, ग्रन्थों का परिचय तथा प्रश्न।

MAST - 09
एम0 ए0 संस्कृत (पूर्वाद्ध)
लौकिक संस्कृत साहित्य का इतिहास
एवं
निबन्ध

1. उपजातीय काव्य – रामायण एवं महाभारत
महाकाव्य
नाट्यसाहित्य
गद्यकाव्य
चम्पूकाव्य
नीति कथा साहित्य
2. निबन्ध

MAEN -01

British Drama

First Block Christopher Marlowe : Doctor Faustus

Unit -01

1. Christopher Marlowe
2. Elizabethan Drama : Religions Beginnings
3. Miracle and Mystery Plays
4. Morality Plays
5. Rise of Elizabethan Comedy and Tragedy
6. The Growth of the Elizabethan Theatre
7. Elizabethan Comedy
8. Elizabethan Tragedy : the senecan Influence
9. Greek origins of Tragedy.
10. Aristotle's definition of Tragedy
11. The Elizabethan Formulations of Tragedy.
12. Summing up : The Modernity of Elizabethan Tragedy

Unit -02 The Tragic Drama of Doctor Faustus

1. Doctor Faustus as a tragedy.
2. Doctor Faustus and the Christian Morality Tradition
3. The heroic character of Doctor Faustus
4. The tragic Premise in Doctor Faustus
5. The Strength of tragedy
6. Act I Doctor Faustus : The Unscholarly attitude
7. Act II The Unfolding of Faustus tragedy.
8. Act III & IV The Comic diversion of tragedy.
9. Act V : The tragic denouement of doctor Faustus
10. Marlowe's achievement in Doctor Faustus
11. Doctor Faustus : Appeal to 20th Century.

Unit -03 Irony and the Tragic Dilemma in Doctor Faustus

1. Marlowe : An ironist
2. Irony of Faustus aspirations.
3. Faustus tragic dilemma
4. Self-multiplicative irony in Doctor Faustus
5. Summing up : Tragic irony and dilemma in Doctor Faustus.

Unit -04 Renaissance and Reformation in Doctor Faustus

1. Introduction : Transcending medieval christianity
2. Renaissance aspirations
3. Renaissance Scepticism
4. The Historical character of Doctor Faustus
5. Doctor Faustus : Catholic and Protestant Schism
6. Doctor Faustus : The Renaissance aspirations & rhetoric
7. Doctor Faustus : Renaissance Tragedy
8. Doctor Faustus Catholic Faith and Protestant despair
9. Summing up : Doctor Faustus : A tragedy of the Renaissance and Reformation.

Unit -05 Dramatic Poetry in Doctor Faustus

1. Introduction : Fusion of Drama and Poetry.
2. Marlowe's indifference to dramatic art
3. Doctor Faustus : Dramatic rhetoric rather than art
4. Marlowe's 'Mighty line'
5. Blank Verse in England
6. The Poetry of Doctor Faustus
7. Marlowe's Poetry an Estimate
8. Summing up

Unit -06 The Performance of Doctor Faustus

1. Introduction : Doctor Faustus and the Elizabethan stage

2. Textual diversity of Doctor Faustus
3. Twentieth Century Productions of Doctor Faustus
4. William Poet and Nugent Monk
5. Post Second World War Productions
6. Nevill Coghill
7. Michael Benthall
8. John Barton
9. Christopher Fettes
10. Production of Specific Scenes in Doctor Faustus
11. Problems of Productions of Doctor Faustus
12. Doctor Faustus and the Postmodern Theatre
13. Jerzy Grotowski

Second Block – William Shakespeare : A Midsummer Night’s Dream

Unit -01 Background Performance

1. Dating the First Performance
2. Conditions of Performance
3. Reading and Performance Texts
4. Let us Sum up

Unit -02 Romantic Comedy and the Language of the Play

1. Romantic Comedy and Shakespeare’s Innovations
2. Language Varieties

Unit -03 A Midsummer Night’s Dream – I

1. The Athenian Aristocrats
2. The Lovers or Court and Country

Unit -04 A Midsummer Nights Dream – II

1. The Fairies
2. Dreams
3. The Women

Unit -05 The Mechanicals

1. Identities of the Mechanicals
2. The Mechanicals and the Forest
3. The Play – Within - the Play.

Third Block - William Shakespeare : Hamlet

Unit -01 Background

1. The date of the first performance of Hamlet
2. The sources of the Hamlet Story.
3. The text of the play.
4. Tools of Scholarship textual criticism; emendation, historical criticism, new criticism, others.

Unit -02 Interpretations

1. Hamlet as a revenge play
2. Theatre as a theme in Hamlet.
3. Hamlet as a Tragedy
4. Hamlet as a Religious play.

Unit -03 Language of Literature

1. Words
2. Rhetorical Devices
3. Imagery

Unit -04 Hamlet : Other Dimensions

1. Hamlet's Soliloquies
2. The question of subjectivity
3. Osric
4. Claudius
5. Horatio

Unit -05 “The World as Stage” : Wider perspective

1. King Lear and Hamlet
2. Reinventing Hamlet

3. Privatisation of Hamlet
4. Universalization

Unit -06 Current Critical Approaches to Hamlet

1. Twentieth Century Approaches upto the Sixties
2. Modern Literary Theory : Structuralism
3. Feminism
4. Marxism
5. Psychological Criticism
6. New Literary Theory and Hamlet

Fourth Block- The Alchemist : A Study Guide

Unit -01 The Dramatic Career of Ben Jonson

1. Life and Works of Ben Jonson
2. Chronology
3. Critical Extracts

Unit -02 Jonsonian Comedy and the Alchemist

1. Jonsonian Comedy and the Alchemist
2. Critical Extracts

Unit -03 The Structure of the Alchemist

1. Structure
2. Glossary of Alchemical Terms
3. Critical Extracts

Unit -04 The Alchemist in the theatre

1. The Alchemist in the Theatre
2. Performance and Stagecraft
3. Critical Extracts

Unit -05 Characterization and Language

1. Characterization
2. Language

3. Critical Reception of Ben Jonson

Fifth Block J.M. Synge : The Playboy of the Western World

Unit -01 Background to the Playboy

1. Biographical Note on Synge
2. Modern Comedy.

Unit -02 Critical Annotations to the Playboy

1. How to use the Study material
2. Key Questions
3. Study notes

Unit -03 Close Analysis of the Playoy

1. Germ of the play
2. Title
3. Actwise analysis

Unit -04 The Playboy : A Discussion

1. Major Critical Perspectives on the play
2. Themes/ Genres
3. Characters
4. Comic Strategies

Unit -05 The Playboy : A Discussion (Contd.)

1. Some other Important aspects of the play
2. Language
3. The playboy as a Performance Text

Sixth Block: Bernard Shaw : Pygmalion

Unit -01 Background of English Drama from the Restoration Period to Bernard Shaw

1. English Drama from 1660 to Shaw and its European background
2. Shaw's Ideological Background
3. the Life and plays of Shaw

Unit -02 Pygmalion : Theses and Issues

1. Pygmalion as a Play about Phonetics
2. Class distinction, Snobbery, kinds of manners, middle class, morality and the character of Doolittle
3. Man-woman relationships in the play : Higgins's mother Fixation and Oedipus complex, Higgins – Eliza equaton, Eliza, the fighter and the Feminist.

Unit -03 Dramatic Structure and Mingling of Genres

1. The Dramatic Structure of Pygmalion
2. The genre of the play, Elements of Romance, Comedy and Novel

Unit -04 Language and Style

1. Shaw's Prose Style and dialogues "effectiveness of assertion" recreation of actual speeches, Speech rhythms of characters, literary and musical allusions verbal humour.
2. Critical approaches to shaw and screen Responses of Pygmalion
3. Passages from the play for Annotation

Unit -01 Seventh Block TS Eliot : Murder in the Cathedral

- 1, Dramatic Experiments : Sweeney Agonistes and the Rock
2. Eliot's essays relevant to his plays
3. Eliot's Poetic dramas

Unit -02 Background, Production and Perfrmance History

1. Historical background to the play
2. General Summary of the play
3. Production History of Murder in the Cathedral
4. Explanation and critical comments of the lines from the 1st choric entrance upto Becket's arrival in Part-1 of the play.

Unit -03 Critical Approaches to the play Part – I

1. Explanatory and critical notes on Part I of the Play from Becket's First appearance upto the temptation scene in Part –I.
2. The Significance of Becket's silence in Part I
3. Important aspects of Part I

Unit -04 Critical Approaches to the Play Part –II

1. Eliot's Christian perspective
2. Becket's Christmas sermon : Explanatory and Critical Notes
3. Murder in the Cathedral as a Christian History Drama
4. Explanatory and Critical Notes on the section from the Entrance of the Knights upto their exit.

Unit -05 General Comments and other Readings

1. Critical Explanation of the choric outburst after Becket Exits upto his Murder.
2. Critical Explanation of the Knights, Prose Passages upto the end of the Play.
3. The Chorus in Development in Eliot's Play's
4. Plays by other Dramatists on Thomas Becket.
5. Greek /Medieval Models for Eliot's Play, Murder in the Cathedral.
6. Different Readings of Eliot's Murder in the Cathedral
7. Select Bibliography with critical comments.

Eighth Block – John Osborne : Look Back in Anger

Unit -01 Background to the Play

1. Britain in the 1950s
2. British Drama from 1890 to 1956.

3. Osborne

Unit -02 The characters

1. Different models for character study
2. The Angry young man – reality or cliché?
3. Class, gender and character.

Unit -03 Language and Speech in Look Back in Anger

1. Language in Drama
2. The title of the Play
3. Kinds of writing and speech in the text
4. Imagery and Symbolism in the Play

Unit -04 Critical Approaches to look Back in anger

1. Different Critical approaches to the play
2. Let us sum up.

Unit -05 Anger and after : The Play's Subsequent Importance

1. Osborne's place in 20th Century British Drama
2. Common themes in the plays

Ninth Block – Waiting for Godot

Unit-01 Waiting for Godot : An avant garde play

1. Tragicomedy
2. Waiting for Godot and the theatre of the Absurd
3. Samuel Beckett (1906 – 1989) Life and Important works
4. History of Godot : In Print and Performance
5. Different Artistic Forms of Godot
6. Godot in Indian Languages

Unit -02 Godot : A Critical analysis – I

1. Brief comments and key questions
2. Critical Analysis : Act I

Unit -03 Critical Analysis – II

1. Brief comments and Important questions
2. Critical Analysis : Act II

Unit -04 Themes and Issues – I

1. Godot as a Tragicomedy
2. Tragic, Comic, Absurdist and Godot
3. Godot as an Existentialist play
4. Structure of Godot.

Unit -05 Themes and Issues – II

1. Waiting for Godot and time
2. Godot as a Christian play.
3. Godot and use of Language
4. Godot and Theatricality
5. Contribution of Godot to theatre and Drama

MAEN -02

British Novel

First Block TOMJONES

Unit -01 Some Aspects of fiction

- 1.2 The Novel
- 1.3 The Evolution of the novel

Unit -02 As we first read : Tom Jones

- 2.2 A Reading of Tom Jones
- 2.3 Relationships in the novel

Unit -03 Important thematic areas in Tom Jones

- 3.2 Varieties of female Representation – From low to high strata.
- 3.3 Fieldings Narrative strategies

Unit -04 Characters as characterizations

- 4.2 Problems of characterization
- 4.3 Realistic and comic characters

Unit -05 Artistic Unity or Socio-Cultural concerns Structure

- 5.2 Introductory chapters : Their Relevance
- 5.3 The Many episodes in Tom Jones

Unit -06 Feminist Concerns in Fieldings

- 6.2 Marriage and Female Sexuality
- 6.3 Pregnancy in Tom Jones

Unit -07 Some Critical opinions on Tom Jones

- 7.2 The problem with Modern Criticism
- 7.3 Changing Appreciation over centuries

Unit -08 Narration in fiction and third world preferences.

- 8.2 How do we understand Narration?
- 8.3 Relevance of Tom Jones to us.

MAEN -02

British Novels

Second Block Prime and Prejudice

Unit -01 The Novel in its context

1.2 The Eighteenth Century in Europe

1.3 Jane Austen's life and works

Unit -02 Main themes in pride and prejudice -1

2.2 Pride and prejudice

2.3 Love and Marriage

Unit -03 Main Themes in pride and prejudice -2

3.2 Women

3.3 Money and property

3.4 Marriage

Unit -04 Characters in Novel

4.2 Eighteenth Century ideas about characters

4.3 Fictional characters

4.4 The main characters in pride and prejudice

4.5 Gender and character in pride and prejudice

Unit -05 The Narrative of pride and prejudice

5.2 Narrative Techniques in pride and

5.3 Use of Wit and irony

Unit -06 Critical Perspectives

6.2 The feminist Approach

6.3 Postcolonial Readings

6.4 The Marxist perspective

MAEN -02

British Novel

Third Block Wuthering heights

Unit -01 Background to wuthering heights

- 1.1 Dates
- 1.2 Location of Wuthering heights
- 1.3 Industrial revolution
- 1.4 The changing society
- 1.5 Romanticism
- 1.6 Rebellion

Unit -02 The Problem of narrative

- 2.2 What is narrative?
- 2.3 Narrative scheme in the novel
- 2.4 Who is the narrator
- 2.5 Narrative techniques
- 2.6 Comparison with cinema

Unit -03 Gift of God, healthcliff

- 3.2 The Hero : Byronic and Romantic
- 3.3 Health Cliff dudedged : Secular or Religious

Unit -04 You look like a lady now. Significance of Catherine

- 4.2 Wild and Domestic
- 4.3 Marriage
- 4.4 Prisons

Unit -05 Wuthering heights : One hundred and fifty years later

- 5.2 Criticism of Wuthering heights : An Assessment
- 5.3 The Disruption

Block Fourth - Great Expectations

Unit -01 Back Ground

- 1.2 Upward social mobility and mid Victorian society
- 1.3 From Social history to the history of form.
- 1.4 Great expectations and the fairytale

Unit -02 Great Expectations and self-improvement

- 2.2 The Self-Improving hero and the problem of gentlemantiness.
- 2.3 The self improving hero and the problem of his past.
- 2.4 Gentlemanliness and love

Unit -03 Improvement or disintegrations?

- 3.2 The progressive educative plot and self Integration.
- 3.3 Great expectations and the Integrative method
- 3.4 Improvement or disintegration? A closer look at book 3.

Unit -04 Great expectations and the fairytale

- 4.2 The fairytale as a historically complex mode
- 4.3 Realism and the fairytale
- 4.4 Deforming the conventional fairytale

Unit -05 Crime and respectability

- 5.2 Dickens and crime
- 5.3 The respectability and the criminal in great expeculations.
- 5.4 Criminal wealth and respectability.

Fifth Block

Unit -01 Middle March

- 1.2 The creation of middlemarch
- 1.3 The prelude to middle march.

Unit -02 Themes characters, techniques

- 2.1 Themes in middlemarch
- 2.2 The prime of miss brooke

2.3 The unsuitable suitor

2.4 The world Beyond

2.5 The Authors in the text

Unit -03 Philosophical underpinnings

3.1 In the lengthening shadow

3.2 The springs of love

3.3 The author and the reader

3.4 Philosophical influences

Unit -04 Eliot's perspectives

4.1 Conflicts in ideology

4.2 The community as moral voice

4.3 George Eliot and the woman Question

4.4 Using the gothic

4.5 A Critical change

Unit -05 The finale

5.1 Reforms

5.2 Figurality

5.3 Minor characters

5.4 The finale

MAEN -02
British Novel

Fifth Block Middle March

Unit -01 Approaching the novel

1.2 The creation of Middle March

1.3 The prelude to middlemarch

Unit -02 Themes, characters, Techniques

2.1 Themes in middlemarch

2.2 The prime of Miss Brooke

2.3 The unsuitable suitor

2.4 The world beyond

2.5 The author in the text

Unit -03 Philosophical Underplannings

3.1 In the lengthening shadow

3.2 The springs of love.

3.3 The author and reader

3.4 Philosophical influence

Unit -04 Eliot's perspectives

4.1 Conflicts in ideology

4.2 The community as moral voice

4.3 George Eliot and the woman Question

4.4 Using the Gothic

4.5 A Critical change

Unit -05 The finale

5.1 Reforms

5.2 Figuality

5.3 Minor characters

5.4 The finale

MAEN -02

British Novel

Sixth Block Heart of darkness

Unit -01 His Story and History

- 1.2 Joseph Conrad
- 1.3 King Leopold and the Congo
- 1.4 The White man in the heart of darkness
- 1.5 The title of the text

Unit -02 Literary analysis – I

- 2.2 Time and distance
- 2.3 No boys adventure

Unit -03 Literary analysis – II

- 3.2 An approach to the meaning
- 3.3 Marlow : From his point of view
- 3.4 Delayed Decoding

Unit -04 Race, Empire, Gender in heart of darkness

- 4.2 Kipling's squint
- 4.3 Race
- 4.4 Gender

Unit -05 The lengthening shadow

- 5.2 Ambiguities and Ambivalence
- 5.3 Apocalyptic / mythic

Block Sixth Heart of Darkness

Unit -01 His Story and History

- 1.2 Joseph Conrad
- 1.3 King Leopold and the Congo
- 1.4 The white man in the heart of darkness.
- 1.5 The title of the text.

Unit -02 Literary analysis

2.2 Time and distance

2.3 No boys' adventure

Unit -03 Literary Analysis – II

3.2 An Approach to the meaning

3.3 Marlow : From his point of view

3.4 Delayed decoding.

Unit -04 Race, Empire, Gender in heart of darkness

4.2 Kipling's squint

4.3 Race

4.4 Gender

Unit -05 The Lengthening shadow

5.2 Ambiguities and Ambivalence

5.3 Apocalyptic / mythic

Seventh Block – A Portrait of the artist as a young man

Unit -01 Contexts

1.2 Ireland and Parnell

1.3 Jayee's life

1.4 The European Literacy context

1.5 English – language modernism

Unit -02 Genre, Overall structure and point of view.

2.2 Genre

2.3 Overall structure

2.4 Point of view

Unit -03 Stephen's growth and personality

3.2 A Section-by-section mapping

3.3 Stephen's Aesthetic theory

3.4 Stephen and women.

Unit -04 Technique

- 4.2 Variety of styles
- 4.3 Repetition / Symbolism
- 4.4 Stream of consciousness and epiphany
- 4.5 Linguistic features

Unit -05 Critical perspectives : A brief selective overview

- 5.2 Early Critical Reception
- 5.3 Subsequent criticism
- 5.4 The Advantages of a psychomalytic approach to a portrait.

Block Eight - A passage to India

Unit -01 Passage to India

- 1.2 Title of the Text
- 1.3 Earlier passages to India
- 1.4 Forster's attitude before his first passage to India.

Unit -02 Representation of India (A) approaches to the novel

Structure:

- 2.2 Kinds of writing in the text
- 2.3 Kinds of writing about the text.

Unit -03 History and a passage to India.

- 3.2 1912 - 1913
- 3.3 1921 – 1922
- 3.4 1945 and after
- 3.5 Philosophy and history.

Unit -04 Race, Class and gender in a passage to India

- 4.2 Race
- 4.3 Class
- 4.4 Gender

Unit -05 Representations of India (B) Religions in novel

5.2 Christianity

5.3 Islam

5.4 Hinduism

Unit -06 Passages from India

6.2 Landscapes

6.3 Motifs

6.4 Conclusions

Ninth Block - The Prime of Miss Jean Brodie

Unit -01 The English Novel : Modernism and after

1.2 Modes of narration

Unit -02 Muriel Spark – Her life, her works and the text

2.1 The life of Muriel Spark

2.2 The works of Muriel Spark

2.3 The text – A summary of the Prime of Miss Jean Brodie

Unit -03 Analysing the Text – I

3.1 Muriel Spark's narrative technique

Unit -04 Analysing the Text – II

4.1 The Elements of Autobiography

4.2 Perspectives on faith

4.3 The issue of morality

4.4 The issue of fascism

Unit -05 The Novel : 1960s and after

5.1 The novel in the 1960s.

5.2 The novel in the 1970s.

5.3 The novel since the 1980s.

MAEN - 03

Aspect of Language

First Block What is Language

Unit -01 The Nature of Language

1. What is language?
2. How and why did language originate?
3. Characteristics of human language.

Unit -02 Looking at data – 1

1. Structural functional linguistics : The saussurean Principles
2. Structural Linguistics : The saussurean Heritage
3. American structuralism

Unit -03 Looking at data – 2

1. Formal Linguistics – An Introduction
2. Generative Grammar
3. Generativists and structuralists
4. Transformational Generative Grammar

Unit -04 Language and Thought

1. The linguistic sign
2. Sapir-Whorf Hypothesis
3. Language independent thought

Second Block - A History of English Language

Unit 01

1. Approaches and sources
2. Origin of English
3. Emergence to consolidation
4. Three periods the Making of English

Unit -02 Changes in Sounds and Spelling

1. Changes in English Sounds

2. Changes in spelling

Unit -03 Changes in vocabulary

1. Borrowings
2. Word – formation
3. changes in the meaning of words.

Unit -04 Changes in Grammar

1. Changes in old English.
2. Grammatical changes in Middle English
3. Word Order
4. Grammatical changes in Modern English
5. Major Eighteenth century Grammarians

Third Block – English Phonetics and Phnology – I

Unit -01 The Speech Mechanism

1. The speech mechanism
- 2, Passive and Active Articulators
3. Describing and classifying speech sounds

Unit -02 The Description and classification of consonants and vowels.

1. Description and classifications of consonants
2. Description and classification of vowels
3. Monophthongs and Diphthongs

Unit -03 Phonetic Transcription and Phonology

1. Phonetic Transcription
2. The phoneme
3. Phonetics and phonology

Unit -04 The Consonants of English

1. The consonant phonemes of English
- 2 Detailed Description of consonants
3. Consonant clusters

4. The syllable
5. Initial and Final consonant clusters

Third (A) Block English Phonetics and Phonology – II

Unit -05 The vowels of English (R.P.)

1. The vowel phonemes of English.

Unit -06 Word Accent, Stress and Rhythm in connected Speech

1. Word Accent
2. Stress and Rhythm in connected speech

Unit -07 Intonation

1. The form of Intonation
2. Uses of tones

Fourth Block – English Morphology

Unit -01 The Study of Words

1. Kinds of words
2. Definition of word
3. Conclusion

Unit -02 Word formation in English -1

1. The process of word formation
2. The Inflectional Morphology of English

Unit -03 Work-Formation in English -02

1. Derivational Morphology
2. Classification of Derivational Affixes
3. Conversion
4. Compounding

Unit -04 Word formation in English – 3

1. Coining
2. Meaning change

Fifth Block – English Syntax

Unit -01 Basic Notions of syntactic constituency

1. The Identification of a syntactic constituent
2. Phrase Structure

Unit -02 Types of clauses and Sentences

1. Clause types
2. Sentence types
3. Conclusion

Unit -03 Grammatical Functions, Cases and Thematic Roles

1. Grammatical Functions
2. Case
3. Thematic roles

Unit -04 The Syntax of Inflectional Elements : Tense and Agreement.

1. Tense
2. Agreement

Unit -05 Pronouns, Reflexives, and other Bound Elements

1. Anaphors
2. Pronouns
3. Other Bound Elements

Unit -06 Syntax of Scope : Adverbs, Quantifiers and Negation

1. Adverbs
2. Quantifiers
3. Negation

Sixth Block – Language in Use -1

Unit -01

1. Dialectology : A progenitor in the early sociolinguistic work.
2. Sociolinguistics and the Sociology of language

3. The ethnography of communication
4. Variation studies
5. Social network and language maintenance
6. Acts of identity

Unit -02 Speech Community and multilingualism

1. On defining a speech community
2. Some problems relating to the definitions
3. Bi/multilingualism and the speech community

Unit -03 Bilingualism

1. On defining bilingualism
2. Becoming a bilingual
3. Functioning as a bilingual
4. Consequences of bilingualism

Unit -04 Language standardization

1. The need for standardisation
2. The process of standardization
3. The consequences of standardization
4. A socio-ethical critique of standardization

Seventh Block – Language in Use -2

Unit -01 Multilingual use of codes

1. Levels of multilingualism
2. Mixing codes
3. Switching codes

Unit -02 Language Planning

1. Planning in General
2. Language Planning : An Introduction
3. Towards defining Language Planning
4. History of Language Planning

5. Language problems
6. Types of language planning
7. Language planning process.
8. Ideology of language planning theory.
9. Goals of language planning.
10. Orientations in language planning
11. Factors influencing language planning.

Unit -03 Conversational Analysis

1. The Structure of conversations
2. The Cooperative Principle
3. Conversational Implicatures

Unit -04 Learner factors in second language Acquisition -1

1. Age
2. Sex
3. Intelligence
4. Aptitude

Unit -05 Learner factors in Second Language Acquisition -02.

1. Cognitive Style
2. Personality Factors
3. Attitude
4. Motivation

Eighth Block – The Spread of English

Unit -01 Variation and varieties

1. The Indo-European family of languages
2. English : Its origin and development
3. International varieties of English
4. Pidgins and creoles
5. Social varieties of language

6. Variation studies

Unit -02 Consolidation and standardization of English

1. Standard English
2. The Process of standardization of English

Unit -03 The Spread and rise of Englishes

1. Spread of English in Scotland
2. Spread of English in the celtic territories
3. Spread of English overseas
4. The Caribbean English
5. The rise of new standards
6. American English
7. The language of imperial rule

Unit -04 Indian English

1. The Arrival of English
2. The Establishment of English
3. Consolidation and Development
4. Post-Independence language policy
5. Cline of Bilingualism
6. The 'Indianness' in Indian English
7. Indian Writing in English

Ninth Block – Stylistics

Unit -01 Language variation – the context of situation

1. What is language?
2. Language variation

Unit -02 The connection between linguistics, literary Criticism and stylistics

1. Linguistics and literary criticism
2. Stylistics

Unit -03 Style and Content

1. Style

Unit -04 Analysing Texts –I

1. Literal versus figurative meaning
2. Foregrounding
3. Analysis of fiction
4. Analysis of poetry

Unit -05 Analysing Texts – II

1. Passages
2. Checklist to study texts
3. More passages

Unit -06 Analysing Texts – III

1. Extracts

MAEN - 04

Literary Criticism and Theory

First Block An Introduction

Unit -01

1. Background to the contemporary situation in theory
2. Theory before theory
3. Immediate contexts
4. From Criticism to theory
5. The communication chain

Unit -02 Overview of western critical thought

1. The English Tradition
2. Some Philosophical Foundations
3. Early Romanticism

Unit -03 Twentieth Century Developments

1. Northrop Frye and Myth Criticism
2. Marx and Marxism
3. Beginnings of structuralism
4. Russian Formalists
5. Mikhail Bakhtin
6. Post Structuralism
7. Derrida and Deconstruction
8. Michel Foucault
9. Deleuze and Guattari

Unit -04 The Function of Criticism

1. Literary Criticism Prior to Arnold
2. Arnold and Literary Criticism
3. Eliot's view of the Matter
4. Terry Eagleton's Argument

Unit -05 Indian Aesthetics

1. Religious Foundations
2. Non-spiritual Expressions
3. Mystic Function
4. Krishna
5. The concept of theory in India

Unit -06 Resistance to theory/How to Read a Reader

1. Resistance to theory
2. Paul De Man's Answer
3. Resistance at the Present time
4. How to Read a Reader

Second Block – Classical Criticism

Unit -01 Features of classical criticism

1. What do we mean by classical criticism
2. Oratory and Rhetoric
3. Poetry as Inspiration
4. Myth
5. Three Styles of Poetry
6. Music as Integral to Literary composition
7. The concept of Mimesis

Unit -02 Plato on Imitation and art

1. Platonic view of Mimesis
2. Plato's Definition of Truth
3. Platonic Idea of Social well being

Unit -03 Aristotle's theory of Imitation

1. The Aristoteliana view of Mimesis
2. The Media of Mimesis
3. Theatre as a unifier of arts

Unit -04 Aristotle's Theory of Tragedy – Part – I

1. The Six Elements of Tragedy
2. Myth (Plot) and Ethos (Character)
3. Dianoia and Lexis
4. Melopoiia or the Musical Element
5. Opsis or the Visual content

Unit -05 Aristotle's Theory of Tragedy Part – II

1. Pleasure Proper to Tragedy
2. Catharsis
3. Arousal of Emotion
4. European Interpretation of Aristotle

Unit -06 Criticism as Dialogue

1. Dialogue in Mimes
2. A Kind of Mimesis
3. Socratic Parlance
4. Later Tradition
5. Investigate versus Expository Dialogue

Third Block – Romantic Criticism

Unit -01 Romanticism

1. Defining Romanticism
2. The Romantic Epistemology
3. The Romantic Theory of Art
4. Imagination
5. Inspiration
6. Organicism
7. Forms of Poetry
8. Some Modernist and Post structuralist views of Romanticism

Unit -02 Wordsworth : Preface to the Lyrical Ballads

1. The Definition of Poetry
2. The Poet's Characteristics
3. The Value of Poetry
4. Poetic Diction
5. Coleridge's views on Poetic Diction
6. The Cultural concern of wordsworth's criticism

Unit -03 Coleridge : Biographia Literaria

1. Fancy and Imagination
2. Coleridge's view of Poetry and of 'The Poet'
3. The German Angle
4. A Comparison of wordsworth and Coleridge as Critics

Unit -04 P.B. Shelley : A Defence of Poetry

1. Defining Poetry : Imagination and the Ideal order
2. Poetry and Radical Moral Transformation : The Question of Value.

Fourth Block – New Criticism

Unit -01 I.A. Richards

1. Positivist Criticism
2. I.A. Richards : His life and work
3. Principles of Literary criticism
4. Richards on Language
5. Practical Criticism
6. The Achievement of Richards

Unit -02 T.S. Eliot

1. "Tradition and the Individual Talent"
2. "The Function of Criticism"
3. "The Dissociation of Sensibility" and "The Objective Correlative"
4. The Achievement of T.S. Eliot as a critic.

Unit -03 F.R Leavis

1. "introduction" From Revaluation
2. "Literary Criticism and Philosophy"
3. A Representative Essay, "Milton"
4. The Achievement of F.R. Leavis

Unit -04 Join Crowe Ransom and Cleanth Brooks

1. John Crowe Ransom : Introduction
2. "Criticism Inc"
3. Other Essays by J.C. Ransom
4. The Achievement of J.C. Ransom
5. Cleanth Brooks : Introduction
6. 'Irony as a Principle of Structure'
7. Other Essays by Cleanth Brooks
8. The Achievement of Cleanth Brooks

Unit -05 W.K. Wimsatt

1. "The Intentional Fallacy"
2. "The Affective Fallacy"
3. The Achievement of W.K. Wimsatt

Unit -06 Conclusion

1. Other New Critics
2. Later schools of criticism
3. The Achievement of the New Critics

Fifth Block – Marxist view of Literature**Unit -01 Marxism and Literature**

1. What is Marxism?
2. Marxism as a way of looking at Social Developments
3. Marxism as opposed both to Religious Moral Idealism and Mechanical Materialism.
4. Relevance of Marxism to literature.

5. Marxism and Literary criticism.

Unit -02 Society and History : Marxist view

1. View of society through history
2. Interpreting society : An Altogether new approach
3. What we Understand by Social Reality
4. Structure or Mode of Production
5. Relations of Production as Essential Part of the Mode
6. Social Nature of Mode of Production
7. The idea of Revolution change and Transformation in society.

Unit -03 Representing and critiquing society Superstructures

1. How to Interpret 'Superstructure'
2. Actual and Potential role of Philosophy as Superstructure
3. The Realm of culture and literature
4. Some conceptual difficulties

Unit -04 Commitment in Literature

1. Who is a committed writer?
2. The Committed view of Issues
3. The Committed and the other view of the same phenomenon.
4. Commitment and Tradition.
5. The Theoretical Base
6. Literature as Education : Direct Interaction with Public.

Unit -05 Autonomy in Literature

1. Materialist Parametres
2. Total Personality in Literature
3. Materiality in literature
4. How are Most Ideologies Deficient
5. Ideology in Operation in a Literary work : Theory
6. Ideology in operation in a literary work : Example

Sixth Block – Feminist, Theories

Unit -01 Features of Feminist Criticism

1. Working Definition
2. Concerns of Feminist Theories
3. Grey : Areas
4. Possible Application

Unit -02 Mary Wollstonecraft : Vindication of the Rights of Woman

1. Social and Cultural Background
2. The Text
3. Its Contribution
4. Possible Application

Unit -03 Virginia Woolf : A Room of one's own

1. Social and Cultural Background
2. The Text
3. Its Contribution
4. Possible Application

Unit -04 Simone De Beauvoir the Second Sex

1. Social and Cultural Background
2. The Text
3. Its contribution
4. Possible Application

Unit -05 Elaine Showaltr : Feminist Criticism in the Wilderness'

1. Social and Cultural Background
2. The Text
3. Is contribution
4. Possible Application

Unit -06 Feminist Concerns in India Today

1. Social and Cultural background

2. The Text
3. Its Contribution

Seventh Block – Deconstruction

Unit -01 Roots : New Criticism and Structuralism

1. New Criticism : A Brief Survey
2. From New Criticism to structuralism
3. Structuralism : An Introduction
4. Literary structuralism

Unit -02 Beginning Deconstruction

1. Defining Deconstruction
2. Deconstructing Definitions
3. Deconstructing Structuralism
4. Some operative strategies

Unit -03 Implications

1. 'From work to text'
2. The Death of the Author.

Unit -04 Deconstructing Poetry

1. William Wordsworth's 'Afterthought'
2. John Donne's 'The canonization'

Unit -05 Deconstructing Drama

1. Waiting for Godot. A Deconstructive analysis
2. The Problem of Godot
3. The problem of time
4. The problem of consciousness

Unit -06 Re-Assessing Deconstruction

1. The turn towards language
2. Deconstructing Deconstruction
3. Some Important Problems

4. The Rise of new historicism and cultural critique.

Eight Block Contemporary Literary theory

Unit -01 Some Basic Issues

1. An Era of 'Posts'
2. Subjectivity
3. Representation and Representability
4. Otherness
5. Where do we go from here.

Unit -02 Post Modernism : The basics

1. Departures from Modernism
2. Jean francois lyotard and Jean Baudrillard
3. The view from within Literary criticism
4. Midnights children as a Postmodernist text
5. Points of convergence with poststructuralism
6. Implications for us

Unit -03 Psychoanalysis : Freud and Lacan

1. Freud and Lacan : Introductory Remarks
2. Freud's main Ideas
3. Lacan's main ideas
4. The 'case' of Stephen Dedalus
5. The impact of Psychoanalysis

Unit -04 Postcolonial theory : Said, Spirak and Bhabha

1. 'The Holy Trinity'
2. Said on Heart of Darkness
3. The importance of Postcolonialism

Unit -05 Beginnings of cultural studies and new Historicism

1. The Beginnings of cultural studies
2. The beginnings of new historicism
3. Conclusion

Unit -06 Literary Criticism and theory : A Summing up.

1. Beginnings of Criticism in English.
2. Criticism in the eighteenth century
3. Romantic concerns in criticism and the nineteenth century emphases.
4. Emergence of modernist thought around the first world war.
5. Modernist criticism and new criticism
6. Deconstruction as an approach
7. Post modernism and after
8. Marxism and Feminism
9. The 'Post' in postcolonialism.

MAEN -05

American Literature

First Block Context of American Literature

Unit -01 The Puritan Context

1. Who were the new England Puritans?
2. The new England Puritans as they saw themselves and their mission in American.
3. The emergence of Puritanism as the hegemonies American ideology.

Unit -02 The Consolidation and Dispersal of the Puritan Utopia

1. Unanimity as the matif for an integrated community.
2. The emergence of trading interest as a faster undermining the unity with in the fold of Puritanism.
3. Puritans against themselves the beginning of dissent within the fold of Puritanism.

Unit -03 The Puritans as literary Artists

1. The literary style of the Puritans
2. The literary genres of the Puritans
3. Puritan Literature versus Puritan ideology or how Puritan ideology is some times subverted by Puritan literature.

Unit -04 Some “other” contexts of American Literature.

1. The Indian Context, or the context eliminated.
2. The Black Context or the context invisibilised.
3. The Poor white context or the context overshadowed.

Unit -05 From the colonial to the Federal The Contexts of the American English tennent

1. The Enlightenment in America
2. Slavery and Enlightenment
3. The American Women of the Eighteenth century.

Second Block – The scarlet Letter

Unit -06 Back Ground

1. Hawthorne's life and Works
2. American Fiction
3. Let us Sum up
4. Glossary
5. Questions
6. Suggested Reading

Unit -07 Reading The Text

1. The Threshold of the Narrative
2. Complications
3. A Turning Point
4. Temptation in the Forest
5. Towards the Climax

Unit -08 Characterization

1. Hester
2. Dimmesdale
3. Chillingworth
4. Pearl
5. Minor Characters

Unit -09 Narrative Technique and Structure

1. Symmetrical Design
2. Form and Content
3. Open endedness

Unit -10 Critical Perspective

1. Nineteenth century Response
2. Modern Response
3. Contemporary Response

Third Block – Huckleberry Finn

Unit -11 Background to Adventures of Huckleberry Finn

1. American Society During 1865-1914
2. **Mark Twain :**
 - a) Chronology of Important Dates
 - b) Some highlight of his career
 - c) A Note on Mark Twain's writings
3. **Negro Slavery in American**
 - a) A Historical view
 - b) Mark Twain and Slavery
 - c) Writing about and by African Americans before Huckleberry Finn (1885)
 - d) American Fiction : The Rise of realism.

Unit -12 Huckleberry Finn And its Narrative

1. **Preliminary Information about Huckleberry Finn**
 - a) Source
 - b) Composition
 - c) Time and Setting
 - d) Mississippi
 - e) St. Petersburg
 - f) Jackson's Island
2. Narrative Structure of American Huckleberry Finn.
3. **Distinctive Feature of Narrator**
 - a) Picaresque form
 - b) First person eye witness boy Narrator
 - b(i) The Spoken Idiom of the Narrative
 - (ii) Density of narration
 - c) Modes of Peresentain
 - d) Narrative Irony
 - e) Popular Element in theh Narrative

Unit -13 Themes and Characterization in Huckleberry Finn

1. Theme(s)
2. Twain's Art of Characterization
 - (i) The characterization of Huck
 - a(i) Huck in Tom Sawyer
 - b(ii) Source in Mark Twain's life
 - c) Jim
3. The Ending of Huckleberry Finn

Unit -14 Language in Huckleberry Finn

1. Mark Twain on writing
2. Language in Huckleberry Finn
 - 2(i) Contrast with the Scarlet letter
 - (ii) Identifying characters by their language.
 - (iii) Huck's Language
 - (iv) A Preliminary Note on African American Language.
 - (v) Jim Language
3. Language and Power
4. Use of Racist Language

Unit -15 Humour and other Issues in Huckleberry Finn

1. Humour
 - (i) Humour in character
 - (ii) Humour in situation
 - (iii) Humour in language
 - (iv) Force
 - (v) Burlesque
 - (vi) Defining the Limits of Fun
2. Intertextuality
3. Is Huckleberry Finn a Racist Book
4. Major Critical Approaches to Huckleberry Finn

- (i) Criticism during 1885-1950
- (ii) The Post – 1950 Criticism.

Fourth Block – American Prose

Unit -01 Revolutionary Prose in America

1. Introduction : The Context of Revolutionary Prose in America
2. The Evaluation of Revolutionary Prose in America.
3. Writing the Revolution – Some key revolutionary texts
4. The Literature of public Documents.

Unit -02 American Prose in the period of National Consolidation

1. Introduction: The literature of Constitutional Controversies and constitution confirmation.
2. Letters of the early Republic
3. The prose of American Romanticism –I
4. The prose of American Romanticism – II

Unit -03 The ‘other’ side of American Romanticism.

1. Introduction : The sense of American Mission in the Mid nineteenth century America.
2. The Indian Response to the American Mission.
3. The working class while response to the American Mission.
4. The Black Response to the American Mission.

Unit -04 American Prose Around the Civil War.

1. The Context of American Prose around the Civil War.
2. The Debates on slavery and other issues of North south confrontation.
3. The prose of the American civil War -1
4. The prose of American Civil War – II

Unit -05 American prose in the post Civil War Period 1865-1890.

1. The context of American Prose in the post civil war Period 1865-1890,
2. The prose of Samuel Longhorne elements and William Dean Howells.
3. The prose of Herry James and Edit Wharton.
4. The prose of some other late nineteenth century American writers.

Fifth Block – American Poetry – I

Unit -01 Back ground

1. Whiteman’s Life and Works
2. Dickenson’s life and works

Unit -02 The Text 1: Walt Whitman

1. Song of Myself
2. Crossing Brooklyn Ferry
3. When Lilaes Last in the dooryard Bloomed
4. Passage of India

Unit -03 The Text 2 : Emily Dickinson

1. The Soul selects her own society (303)
2. I am saying Every day (373)
3. It would Never Be Common More – I said (430).
4. I measures every grief I meet (561)
5. Because I could not stop for death (712).
6. My life had stood – A Loaded gun (751)
7. Rearrange a wife’s Affection (1737).

Unit -04 Structure and Style

1. Theme and Imagery in walt Whitman
2. Theme and Imagery in Emily Dickinson
3. Free Verse in walt whitman and Emily Dickinson.

Unit -05 Critical Perspective

1. Ninteenth century, Modern and Contemporary response to walt whitman
2. Ninteenth Century, Modern and Contemporary response to Emile Dickinson

Sixth Block – American Poetry

Unit – 26 Robert Frost (1874-1963)

1. Life and works of Robert Frost
2. Mending Wall
 - (i) “Mending Wall” Text of Poem
 - (ii) “Mending Wall” Critical Appreciation
 - (iii) “Mending Wall” Notes
3. “Birehes”
 - (i) “Birehes” Text of poem
 - (ii) “Birehes” Critical Appreciation
 - (iii) “Birehes” Notes

Unit -27 Wallace Stevens 1879-1955

1. Life and Works
2. Sunday Morning
 - (i) Text
 - (ii) Background
 - (iii) Critical Appreciation
 - (iv) Notes
3. The Emperor of Ice Cream
 - (i) Text
 - (ii) Background and Critical Appreciation
 - (iii) Notes

Unit -28 William Carlos Williams (1883-1963)

1. life and works
2. The Red Wheelbarrow

- (i) Text of the Poem VI
- (ii) Background and Critical Appreciation

Unit -29 Ezra Pound (1885-1972)

1. Life and Works
2. Hugh Selwyn Mauberley
 - (i) Text
 - (ii) Background and Critical Appreciation
 - (iii) Form and Metre
 - (iv) Notes
3. The Cantos
 - (i) Canto I : Text
 - (ii) Background and Critical Appreciation
 - (iii) Canto I : Notes
 - (iv) Canto XVII : Text
 - (v) Canto XVII : Critical Appreciation
 - (vi) Notes

Unit -30 A Drienne Rich (1920 –

1. Aunt Jennifer's Tigers
2. Text
3. Background and Critical Appreciation
4. Notes
3. "Snapshals of a Dauhter in Law"
 - (i) Text
 - (ii) Background and critical Appreciation
 - (iii) Notes

Seventh Block - American Short Story

Unit -01 The American Short Story.

1. Introduction the short story
2. Definitions : Their Inadequcies and usefulness.

3. The American Short Story
 - (i) Origins : The first phase
 - (ii) American Short Story after Poe
 - (iii) Rencusance in American short story.
 - (iv) Hemingway and Faulkner
 - (v) Contemporary American short story.

Unit -02 Heming waya : A Clean well Lighted Place

1. Ernest hemingway
 - (i) Chronology
 - (ii) Themes and Concerns
 - (iii) Modes of Writing
 - (iv) Autobiographical Element
 - (v) Objectivity
 - (vi) Code of Conduct
 - (vii) Symbolism
 - (viii) Irony
2. A clean well lighted place
 - (i) Introducing the story
 - (ii) Contrasted Characters
 - (iii) Narrative Technique
 - (iv) Them of Nothingness
 - (v) Auto geographical element
 - (vi) Objectivity

Unit -03 William Faulkner : The Bear

1. William Faulkner
 - (i) Chronology
 - (ii) Faulkner : Then and Now
 - (iii) Themas and Concerns

- (iv) Modes of Writing
- (v) The Yoknapatawpha county
- 2. The Bear
 - (i) The Relevance/Irrelevance of section four
 - (ii) Theme of growing up / Initiation
 - (iii) Modes of writing in The bear”
 - (iv) Men and Nature: Affinities and Palarities

Unit -04 Comparisons and Contrasts

- 1. Hemingway and Faulkner
 - (i) Themes and Concerns
 - (ii) Pepple and Place
 - (iii) Use of language
 - (iv) Narrative Techniques

Unit -04 Comparisons and Contrasts

- 1. Hemingway and Faulkner
 - (i) Themes and Concerns
 - (ii) People and Place
 - (iii) Use of Language
 - (iv) Narrative Technique
- 2. A clean well lighted place and the Bear

Eight Block – American Drama

Unit -01 American Drama : An Introduction

- 1. Beginings of American Drama
- 2. Puritan hostility to theoretical activity.
- 3. Theatre in early 18th century colleges
- 4. Calonical Drama
- 5. Drama of the American Revolution
- 6. Nationalistic Drama

7. Romantic and popular Drama
8. The American Meliodrama
9. The American Drama. The Actorly tradition
10. The Beginning of theatrical realism in America
11. The rise of realistic Drama

Unit -02 The Question of Identity in the Hairy ape

1. The Hairy Ape and the American of the 1920s.
2. The Tragic Problem of Identity in the Hairy Ape.
3. Scene I & II.: The Hairy Ape Elusive Identity and the Tragic Illusion.
4. Scene III : Tragedy of situation.
5. Scene IV to VII Tragic conflict : Fluctuating Identities.
6. Scene VIII : Tragic Denouement and the predicament of Human Identity.
7. The problem of Identity : Naturalistic Fixity and Expressionistic Revolt.

Unit -03 Death of a Salesman As Tragedy

1. Arthur Miller and the American Milieu
2. Arthur Millers concept of Tragedy.
3. Death of a Salesman : Analyses of the text
4. Death of Salesman as Tragedy : An Assessment.

Unit -04 The Novel use of Structure in Death of a Salesman

1. Dramatic Structure : 20th Century perspective
2. Arthur Miller and the concept of dramatic Structure in Death of Salesman.
3. Death of a salesman : Structural Analysis
4. The Novel use of structure in death of Salesman

Unit -05 A Comparison between Eugene O' Neill and Apthur Miller

1. Post I First War and post Second War drama

2. Drama of social reality
3. Psychological Drama
4. Towards a dramatic vision
5. Auto Biography and drama
6. Dramatic Art
7. Theatricality

Ninth Block – The Bluest Eye by Toni Morrison

Unit -01 The Bluest eye : Background

1. Toni Morrison – Life and works
2. (i) Toni Morrison – A chronology
(ii) Novels
(iii) Salient Points concerning Toni Morrison's Life and Art.
3. A notes on Terminology
4. The bluest eye.
 - (i) genesis of the novel
 - (ii) Autobiographical Touches
 - (iii) Title of the Novel.

Unit -02 A Brief View of African American Literature

1. Harlem Renaissance
2. Social change and Civil Right (1940-60)
3. The Black power and Black arts Movement (1960-70)
4. African American Women's writing since 1970.

Unit -03 The Bluest eye and its Narrative

1. The Story
 - (i) Autumn
 - (ii) Winter
 - (iii) Spring
 - (iv) Summer

2. The Structure of the Narrative
 - (i) White Primer as Epigraph
 - (ii) Claudia as a Narrator
 - (iii) Other voice
 - (iv) Tomi Morrison on her Narrative Technique
 - (v) The narrative as a whole
 - (vi) The Omniscient Narrator

Unit -04 The dangerous idea of physical Beauty in the Bluest Eye.

1. Introduction : The white standards of Beauty
2. Changing Attitudes to color and their treatment in Black Fiction.
 - (i) Assimilationism
 - (ii) Black is beautiful
 - (iii) “Black is neither ugly nor beautiful black is”
3. Beauty Culture in American Society and the Bluest eye.
4. Peola’s Quest for beauty.

Unit -05 Sex and Love in the Bluest eye

1. Sexuality and children
2. Death of a dream and After/Pauline Breedlove
3. Love that Herts / Cholly Breedlove
4. Commercial Sex
5. Child Materials
6. Sexuality Among the whites

Unit -06 Conclusion

1. Introduction
2. Scapegoating as a Motif
3. Language and style
4. Literary Echoes
5. Folk elements
6. Critical Approaches to the bluest eye.

MAEN -06

Indian English Literature

First Block Non-Fictional Prose

Unit -01 Non Fictional Prose : A Survey

1. Indian Prose Writers
2. Post-Independence Prose
3. Forms and varieties of Prose

Unit -02 Swami Vivekananda, Sri Aurobindo, and Ananda Coomarswamy

1. Swami Vivekananda : An Introduction
2. Sir Aurobindo : An Introduction
3. Ananda Kentish Coomaraswamy : An Introduction

Unit -03 Gandhi

1. The Life of Mahatma Gandhi
2. What is Hindi Swaraj?
3. The Form of Hind Swaraj
4. A Chapter – wise Summary of Hind Swaraj
5. Detailed Study of Selected chapters.
6. The importance of Hind Swaraj

Unit -04 Jawaharlal Nehru

1. Nehru-Life and Writings
2. Autobiography
3. Chapter-wise analysis
4. How the Autobiography has been received?

Unit -05 Nirad C. Chaudhuri

1. The Autobiography of an unknown Indian
2. The hand, Great Anarch
3. Critical opinion.

Unit -06 Vikram Seth and Amitav Ghosh

1. Vikram Seth : Introduction
2. From Heaven Lake
3. Amitav Ghosh : Introduction
4. Dancing in Cambodia at Large in Burma

Second Block – Untouchable

Unit -01 A short history of the Indian English Novel

1. Early Essayists
2. Early Fiction
3. The First Indian English Novel
4. Other Early Novels
5. Towards Independence – Novels and Novelists
6. Post-Independence-Novels and Novelists till 1980
7. Rushdie and after

Unit -02 Life and work of Mulk Raj Anand

1. Early life
2. Literary career
3. Literary Awards
4. The thirties movement
5. The writing and Publication of Untouchable

Unit -03 Untouchable : Title, Theme, Plot & Characterisation

1. Theme of Untouchability
2. Plot and Structure
3. Narrative Technique
4. Characterisation
5. Other characters

Unit -04 The Picture of a Fragmented nation in Anand's Untouchable

1. The Picture of a fragmented nation

2. Hinduism
3. Islam
4. Christianity
5. The Religion of Humanity

Unit -05 The Gandhian Influence

1. Gandhian Ideology
2. Gandhi in Indian Fiction
3. Gandhiji's speech on untouchability in the Novel

Unit -06 Style

1. Diction
2. Modes of Narration
3. Imagery

Third Block – Kanthapura

Unit -01 Raja Rao : Career and Works

1. Raja Rao and the Indian Novel in English
2. Two Contemporary Writers : Anand and Narayan
3. Raa Rao : Career and works
4. Influences on Rao's Philosophical outlook.

Unit -02 Kanthapura : Background

1. Historical and Political Background
2. Gandhian Thought and its Impact
3. Raja Rao's English : Form and Style

Unit -03 Kanthapura : Themes

1. The Village
2. The Skeffington Coffee Estate
3. Consideration of caste
4. Moorthy Leads a satyagraha

Unit -04 Kanthapura : Structure and Technique

1. The Structure of Kanthapura
2. The Narrative Technique in Kanthapura

3. Achakka, the Narrator
4. The Harikatha Element
5. Myth and Symbolism

Unit -05 Kanthapura Characters

1. Raja Rao's Art of characterization in Kanthapura
2. Moorthy, the Central Figure
3. The women in Kanthapura
4. Some of the other Characters

Fourth Block – Clear Light of Day

Unit -01 Anita Desai : Life, works and language, issue

1. A Biographical Sketch of Anita Desai
2. Anita Desai's Major Works
3. Outlines of Anita Desai's Novels
4. Desai and the Language Issue

Unit -02 Clear light of day : Themes, Techniques, time

1. Structure of clear light of day
2. Detailed Storyline of Part –I
3. Anita Desai's Techniques
4. Bim/Tara Relationship
5. Treatment of time

Unit -03 Political Dimension, major characters

1. Detailed Storyline of Part - II
2. The Political Dimension of clear light of day.
3. The Importance of Raja in the novel
4. Baba's Presence in clear light of day

Unit -04 Music' Minor characters

1. Detailed storyline of part III
2. Importance of music in clear light of day
3. Minor characters Mira Masi, Bakul & Dr. Biswas

Unit -05 Anita Desai's Contribution to Indian English Fiction.

1. Detailed Storyline of Part – IV.
2. Imagery in clear light of day
3. The Das Neighbours : Alis and Misras
4. Anita Desai's contribution to Indian English Fiction.

Fifth Block – Midnights Children

Unit -01 Background

1. Biographical Sketch
2. The other works of Rushdie
3. The title Midnight's Children
4. The Booker and Midnight's children
5. Critical Reception

Unit -02 Midnight's Children : The De-Doxified English

1. The Beginnings
2. Problems and challenges faced by the post 1930s Novelists
3. Rushdie on English and Englishes
4. Rushdie and the use of Hybridized English
5. Is Rushdie and Indian English Novelist?
6. English "De doxified"
7. Rushdie's use of English in Descriptive scenes

Unit -03 Themes in Midnight's Children

1. History and the Individual
2. Colonialism and Neo-colonialism in India
3. Fragmentation, Migrancy and memory

Unit -04 Technique in Midnight's Children

1. The structure of Midnight's children
2. Endings without beginnings : Midnight's children and Epic Structure.

3. Sutradhar and Nati : Saleem and Padma
4. Saleem, Unreliable Narrator
5. The Interplay of Fantasy and Realism
6. Myth in Midnight's Children.

Unit -05 Characterization in Midnight's Children

1. Saleem as India & India as Saleem
2. Padma : Beloved Nati
3. Children of the Midnight : Shiva, Parvati and Saleem
4. Family as Character
5. Common Indian People as characters.

Unit -06 Midnight's Children as a Literary event

1. Midnight's children as a Postmodern Novel
2. Midnight's Children as a Postcolonial Novel
3. Midnight's children as Historical Fiction
4. The Novel of the 1980s
5. Children of Midnight's children

Sixth Block – The Short Story

Unit -01 About the short story

1. history of the short story.
2. What is the short story.?
3. Basic elements of the short story
4. Glossary of Terms

Unit -02 R.K. Narayan

1. R.K. Narayan
2. An Astrologer's day
3. Engine Trouble

Unit -03 Arun Joshi and Manoj Das

1. Arun Joshi – An overview of this work.

2. 'The only American from our village' – A Discussion
3. Characterisation
4. Narrative techniques
5. Manoj Das – an Introduction
6. 'A Trip into the Jungle – A Discussion
7. Characterization
8. Narrative Techniques

Unit -04 Subhadra Sen Gupta & Raji Narasimhan

1. Subhadra Sengupta – an Introduction
2. 'The Fourth daughter – some issues
3. Characterization
4. Narrative Techniques
5. Raji Narasimhan – an Introduction
6. 'A Toast to Herself – Some Issues
7. Characterisation
8. Narrative Techniques

Unit -05 Shashi Deshpande and Githa Hariharan

1. Shashi Deshpande – An Introduction
2. 'The Miracle' – A Discussion
3. Characterisation
4. Narrative Techniques
5. Githa Hariharan – An Introduction
6. 'Gajar Halwa' A Discussion
7. Characterisation
8. Narrative Techniques

Unit -06 Ruskin Bond

1. Writing for Children
2. Ruskin Bond – A Biographical sketch

3. No room for a Leopard – A Discussion
4. Copperfield in the Jungle –A Discussion
5. Characterisation

Seventh Block – Poetry

Unit -01 Background to Indian English Poetry

1. The origin of Indian English Poetry
2. The Impact of British Colonization
3. The Identity of Indian English Poetry
4. The growth and Periodization of Indian English Poetry
5. The future Possibilities

Unit -02 Henry Derozio and Toru Dutt

1. Henry Derozio – A Brief Life Sketch
2. An Overview of Derozio's Poetry
3. Toru Dutt' – A Brief life Sketch
4. An Overview of Toru Dutt's Poetry

Unit -03 Sri Aurobindo and Sarojini Naidu

1. A Brief life-sketch of Sri Aurobindo
2. An Introduction to Sri Aurobindo's works
3. Issues in Sri Aurobindo's Poetry
4. A Brief Life sketch of Sarojini Naidu
5. An Overview of Sarojini Naidu's Poetry

Unit -04 Nissim Ezekiel and Kamala Das

1. A Brief life sketch of Nissim Ezekiel
2. An overview of his poetry
3. A Brief life sketch of Kamala Das
4. An Overview of her Poetry.

Unit -05 A.K. Ramanujan, Arun Kolatkar, and Jayanta Mahapatra

1. A.K. Ramanujan : A Brief life Sketch and an overview of his poetry.

2. Jayanta Mahapatra
3. Arun Kolatkar : A brief life sketch and an overview of his poetry.

Unit -06 R. Parthasarathy and Keki N. Daruwalla

1. R. Parthasarathy : A brief life sketch and an overview of his work.
2. Keki N. Daruwalla : A brief life Sketch and an overview of his work.

Eighth Block – Tara

Unit -01 An Overview of Indian English Drama

1. Challenges faced by Indian English Drama
2. History of Indian English Drama

Unit -02 A Preview of Dattani's Dramatic world

1. The plays
2. Themes
3. Techniques and language

Unit -03 Reading Tara

1. Act I
2. Act II
3. Themes

Unit -04 Appreciating Tara

1. Techniques
2. Language

MAEN -07

New Literatures in English

First Block Introduction

Unit -01 Naming the discipline

1. Introduction
2. Framing Commonwealth Literature
 - (i) Origins
 - (ii) Critiques
 - (iii) Continued usage
3. Apparent Newness Underlying continuity
 - (i) Defining Newness
 - (ii) Variants of Newness
 - (iii) Contentions concerns
4. Enabling Postcolonial Engagement
 - (i) Political Theory/ Theoretical Politics
 - (ii) Textual /Revoluntary oppositionality
 - (iii) Diasporic intellectuals and high theory

Unit -02 African literature : Culture and Post Nationalist Politics in Kenya and Nigeria.

1. The politics of Language
 - (i) Choosing between English and Native languages
 - (ii) Swahili
 - (iii) Kekiya
2. Literature and social commitment
 - (i) Prose writing in Kenya
 - (ii) Theatre in Nigeria
3. The Writer in Africa
 - (i) Cultural and political Assertion
 - (ii) Censorship.

Unit -03 Caribbean Literature – The aesthetic of diaspora

1. 1930's Towards culture decolonization
2. The 'Boom' and the writer in Exile
3. The Decades of the critics
4. Towards New Voices

Unit -04 South Asian Literature

1. Survey of South Asian Literature in English
 - (i) Pakistani Literature in English
 - (ii) Sri Lankan Literature in English.
 - (iii) Bangladesh Writing in English.
 - (iv) Indian Literature in English.
 - (v) Twentieth Century development in Indian English Fiction.
2. Post-Colonialism
 - (i) Unravelling Postcolonialism
 - (ii) Post Colonial literary analysis and pedagogy
 - (iii) Problems with the post colonial paradigm
3. Literature at the Margins – some critical Aspects
 - (i) The question of the Margin.
 - (ii) Women and Literature
 - (iii) Conceptual challenges

Unit -05 Australian Literature : Interrogating National Myths

1. History and identity
 - (i) Tracking the course of Australian studies
 - (ii) Issues of a national identity
2. National Myths and Contestations
 - (i) Constructing the national image
 - (ii) Contestations
3. Outside and Inside the canon

Unit -06 Canadian Literature : Scanning the Literary Landscape

1. Canada : Country and Character
 - (i) History
 - (ii) Canada's cultural and literary milieu
 - (iii) Forging a literary identity.
2. The Writing on the wall
 - (i) Overcoming the odds
 - (ii) Prose
 - (iii) Poetry
 - (iv) Drama

Second Block – A Grain of Wheat

Unit -01 Africa – The Dark Continent and Kenya The Land of Gikayu and Mumbi.

1. Africa – The dark Continent
 - (i) Africa – The myth of premilivism, Political reasons thereof
 - (ii) Africa and the Evalution of Man
 - (iii) Africa and the Ancient Egyptian civilization.
 - (iv) Africa under Europe
2. Pre-Historic Kenya- Location, Antiquity
 - (i) Social and Political Structures in pre historic Kenya
 - (ii) Modern Kenya – The First colonization by Arabs
3. The British
 - (i) The East Africa Trading Company.
 - (ii) The East Africa protectorate
4. The Settlers – The Land Grab
 - (i) Forced Labour
 - (ii) Native Reserves
5. First Protests: K.C.A., Y.K.A., Harry Thuku

- (i) Female circumcisions – Independent Church and School Movements.
- (ii) Africans and Indians – Joint struggles
- 6. The Emergence of Jomo Kenyatta
 - (i) African – Trade Union Congress. The first demand for total Independence.
- 7. Banning of Mau Mau – The Emergency
 - (i) Lifting of the Emergency. Constitutional Conference in London.
 - (ii) Uhuru – Kenyatta as first prime minister.

Unit -02 Literature and Politics

1. Literature – Nature and Functions.
 - (i) Literature and Truth
 - (ii) Literature and Society
 - (iii) Literature and Reality
2. Literature and the Creative process
3. Literature and writer's attitude
4. Literature and subjectivism
5. African Literature Politics and ideology.

Unit -03 Modern Novel in Africa

1. Africa – the 1st Story tellers
2. Africa – First written Narrative
3. Africa – First publications in English : *Ethiopia unbound*, *Eighteen pence*.
4. African writing as part of National Struggles.
5. The rise of modern Novel in Africa
6. Some early Novels

Unit -04 Ngugi Wa Thiong'o – Life Literature and Ideology

1. Birth and Early Education
2. Higher Education

3. Teaching Career
4. Detention and Exile
5. ideology

Unit -05 A Grain of wheat – Summary

1. Summary – Chapters 1, 2, and 3
2. Summary – Chapters 4, 5, 6, 7 and 8.
3. Summary – Chapters 9, 10, 11, 12, and 13.
4. Summary – Chapters 14, Karanya, Mugo, Wamni, Wambui, and Harambee.

Unit -06 A grain of Wheat - An Evolution

1. The Context
2. A grain of wheat and carcase for Hounds – History as Fiction.
3. Women and the Freedom Movement – A grain of wheat
4. A grain of wheat : John Thompson , Mau Mau and the colonization of Kenya.
5. Portraying the Freedom Struggle . Nguni and Mwangi.
6. The Title
7. Characterization.
8. Conclusion : A grain of wheat as a complex portrayal of history.

Third Block – A Dance of the Forests : Wolf Soyinka

Unit -01 An Introduction to Nigeria and to the Yoruba world

1. History and politics of Nigeria
2. Economy of Nigeria
3. A Glimpse into Yoruba history
4. Yoruba Myth and Religion
5. Yoruba Art

Unit -02 Wale Soyinka's Life and Work

1. Wale Soyinka's Early life and works

2. The fifties
3. The sixties
4. The Seventies
5. The Early Eighties
6. The late Eighties and Nineties

Unit -03 A dance of the Forests : Summary

1. Summary of part one of the play
2. Summary of part two of the play
3. Summary of the play – within –A-play
The Court of Mata Kharbu

Unit -04 Critical Commentry on a dance of the forests

1. Things to be kept in Mind
2. Issues
3. Structure
4. Character
5. Language
6. Non-Verbal Technique
7. Western Influences on the play
8. Soyinka and poscolanality.

Fourth Block – Ice Candy- Man

Unit -01 The Author : Background works and significance of the title.

1. Introduction
2. The works of Bapsi Sidhwa
3. The parsis
4. The Zoroastrian, religion
5. Migration to India
6. Title of the Text

Unit -02 The Narrative voice in Ice-candy-Man

1. Introduction

2. The Narrative voice and its ambivalence
3. Lenny's Narrative
4. The Function of Narrator's Several Identification viz. the society.

Unit -03 Feminist Incriptions in Ice-Candy-Man

1. Feminism
2. Feminist inscriptions in the text

Unit -04 Parse Identity in Ice-Candy Man

1. Introduction
2. Identity crises in the Crow eaters
3. Debate at warris road
4. The Parsi Tradition
5. Active neutrality of the parsis during the communal holocaust

Unit -05 Ice-Candy-Man as a Novel of partition.

1. Introduction
2. Sidhwa's political novel
3. The use of political events
4. Dislocation and sense of loss
5. Narrative techniques
6. Bigotry

Unit -06 Bapsi Sidhwa's Ice-Candy-Man A Post Colonial perspective.

1. What is post colonial
2. What is the function of a post colonial writer.
3. Strategies employed by a postcolonial writer.
4. ice-Candy Man : An analysis
5. Sidhwa's use of the English language.

Fifth Block – A House for Mr. Biswas : V.S. Naipaul

Unit -01 Naipaul and his critics

1. A biographical note
2. An overview of Naipaul's fiction and non-fiction.
3. The girit people

Unit -02 Mr. Biswas and the Tulsis

1. prologue
2. Pastoral
3. Before the Tulsis
4. The Tulsis
5. The Chase
6. Gree Vale
7. A Departure

Unit -03 Mr. Biswas and his dream House

1. Amazing Scenes
2. The New Regime
3. The shorthells Adventure
4. Among the Readers and Learners
5. The Vaid
6. The Revolution
7. The Coming House
8. The epilogue

Unit -04 Why did Mr. Biswas, Want a House

1. Diasporic Novel
2. Socio-Political Chronicle
3. Irony and Humour

Unit -05 Putting A House for Mr. Biswas in perspective

1. Naipaul's early works The Mystic Masseur

2. Miguel Street
3. The suffrage of eluira
4. Middle passage
5. Naipaul and India. An ara of Darkness
6. India : A million mutiness now

Sixth Block – Caribbean Poetry : Derek Walcott and Edward Brathwaite

Unit -01 Introduction to Caribbean Poetry.

1. The Region
2. Language
3. Literature

Unit -02 Derek Walcott –I

1. St. Lucia
2. Derek Walcott
3. Crusoe’s Journal
4. Names

Unit -03 Derek Walcott – II

1. The Traveller
2. The spailer’s Return
3. From Midsummer
4. From Omeros

Unit -04 Edward Kamau Brathwaite – I

- 1 Burbados
2. Edward Kamau Brathwaite
3. Wings of A Dove
4. A nanse

Unit -05 (EDW ARD) Kamau Brathu AITE – II

1. The “Video Style”
2. Angel/Engine

3. Stone
4. Colombe

Unit -06 Theoretical paradigms for Caribbean Literature

1. History
2. Intertextuality
3. Orality
4. Diaspora

Seventh Block – The Solid Mandala

Unit -01 The Novelist and the novel

1. The play of dichotomies
2. Insider/Outsider
3. The Solid Mandala

Unit -02 Openings and preoccupations

1. Opening gestures
2. Thematic preoccupations
3. A Sense of place

Unit -03 Denizens of the Australian

1. Characterisation
2. The Core of reality
3. Circles of Existence

Unit -04 Messages in Matifs

1. Androgyny Matif
2. Mandala Matif

Unit -05 Techniques

1. Narrative Strategies
2. Language and Imagery
3. Myth symbol and allegory
4. Humor and Satire
5. Vaicies
6. Time

Unit -06 Perspectives

1. The Twins as a structuring principle
2. Points of Criticism
3. Counterpoints of defence.

Eight Block – The Stone Angel : Margaret Laurence**Unit -01 The Novelist and her Main Thematic Concerns**

1. Margaret Laurence – Introduction
2. Biographical Details – Early years
3. The African Sojourn and its influence.
4. The Canadian Phase
5. Awards and Recognition
6. Main Thematic Concerns

Unit -02 Hager and the Theme of Self Alienation

1. Hager Shipley – A character portrait
2. The stone angel as Vallendungsroman
3. Self Alienation of the Elderly and the Stone Angel

Unit -03 The Stone Angel : A Novel of Awakening

1. The Stone angel : A Novel of Awakening
2. The Stone Angel : The Religious Roots of the Feminine Identity Issues.

Unit -04 A Major Aspects of the Novel

1. The Stone Angel : The title
2. The Stone Angel : A Referential Object.
3. The Stone Angel : Different Meanings
4. The Functions of the stone Angel
5. The Biblical Angel
6. Moving Away from the Stone Angel / The then of Redemption in the Novel.
7. Use of Imagery in the Stone Angel
8. Significance of the past
9. Significance of Manawaka

MAEN -08

Australian Literature

First Block An Introduction to Australian Literature

Unit -01 Australian Literature

1. Introducing Australian Literature
2. Problems of Definition
3. Matters of Relevance
4. Juxtapositions

Unit -02 Australia – Land and History

1. A Question of Beginnings
2. Shaping the course of History
3. Acknowledging Aboriginal Ownership
4. Early Settler Images of the land

Unit -03 Australia – People and Culture

1. Cultural Background to British Settlement
2. Cultural Control of Aborigines
3. ‘White’ Australia
4. Cultural Fissures – Internal and External
5. Multiculturalism – Policy and Practice

Unit -04 Literary Beginnings – Oral Literature

1. Oral Literature – A contradiction in terms
2. Aboriginal traditions
3. Colonial Traditions

Unit -05 Early Literature

1. Provisional Demarcations
2. Colonial Writing
3. Women’s Writing
4. Aboriginal Writing

Unit -06 Themes and Trends

1. Thematic Strands
2. Recent Trends

Second Block – Nineteenth Century Australian

Unit -01 Nineteenth Century Australian Poetry

1. A Survey of Nineteenth Century Australian Poetry
2. Major Themes and Stylistic Features

Unit -02 W.C. Wentworth

1. W.C. Wentworth : His Life and Works
2. Australia : Text
3. Ballads and Folk songs of Australia : A Bird's Eyeview

Unit -03 Charles Harpur

1. Charles Harpur : His life and works
2. Characteristic Features of Harpur's Poetry
3. 'The Bush Fire' Text
4. 'A Midsummer Noon in the Australian Forest : Text

Unit -04 Henry Kendall

1. Henry Kendall : His life and works
2. Characteristic Features of Kendall's Poetry
3. 'Bell Birds' : Text
4. 'After Many Year's : Text

Unit -05 A.L. Gordon and A.B. Paterson

1. A.L. Gordon : His Life and Works
2. Characteristic Features of Gordon's Poetry
3. 'The Sick Stockrider'. Text
4. A.B. Paterson : His Life and Works
5. Characteristic Features of Paterson's Poetry
6. 'The Man from Snowy River': Text

Unit -06 ADA Cambridge

1. Ada Cambridge : Her life and works
2. Characteristic features of Cambridge's Poetry
3. 'An Answer' : Text

Third Block – Introduction to Short Fiction**Unit -01 Short Fiction/Story**

1. Short fiction/story – History and Scope
2. The origin and the Development of Australian Short Fiction/Story.
3. The Bulletin Years
4. Australian Short Fiction in the 20th century
5. Emergence of Migrant and Aboriginal writing in short fiction.

Unit -02 Marcus Clarke : The Seizure of the Cyprus

1. Marcus Clarke
2. His Natural life
3. Themes in Clarke
4. The seizure of the Cyprus – Text

Unit -03 Barbara Baynton : The Chosen vessel

1. The Chosen Vessel – Text
2. Overall structure of the chosen vessel.
3. Interpretations
4. Barbara Baynton's Ideological Position: Contextualising the chosen vessel.

Unit -04 Henry Lawson : The Drover's wife : The Union Buries its Dead

1. Henry Lawson – A Brief History
2. The Drover's wife – Text
3. The Union Buries its Dead- Text

Unit -05 Arthur Hoey Davis : Cranky Jack

1. Cranky Jack – Jack – The Text
2. Overall Structure of cranky Jack
3. Interpretations
4. Contextualising Cranky Jack

Unit -06 Christina Stead : The Old School

1. Christina Stead : life and works
2. Stead and Style
3. Themes in Stead
4. The Old School – Text

Fourth Block – Modern Australian Poetry (1901-1970)

Unit -01 Introduction : An Overview

1. What is Australian Literature?
2. The Social Picture
3. Literary Trends
4. The Jindworbaks
5. The Ern Malley Hoax

Unit -02 Beginnings

1. The grand old man of Australian Poetry
2. Each day I see the long ships coming into Port
3. The Native Singer
4. The Orange tree.

Unit -03 The Notion of Australia

1. The obsession with Australia
2. The father of modern Australian Poetry.
3. South country
4. R.D. Fitzgerald
5. This night's orbit

Unit -04 Keepers of the Flame

1. Judith Wright
2. Legend
3. Bullocky
4. David Campbell
5. The Australian Dream

Unit -05 Coming of age

1. James McAuley
2. Terra Aurtralis
3. A.D. Hope
4. Australia
5. Moschus Moschiferus

Unit -06 The Marginalised voice

1. Women's writing
2. Rosemary Dobson
3. Cock Crow
4. The Aboriginal Voice
5. Kath Walker
6. We are going

Fifth Block – VOSS

Unit -01 Rise and Development of the Australian Novel

1. Australia : Socio-cultural context
2. Australian Novel
3. The Modern Australian Novel : Beginnings
4. Major Issues and concerns of Australian Writers

Unit -02 As we first Read : VOSS

1. The World of Patrick white
2. Some themes and Issues in Patrick white

3. The making of VOSS
4. A Reading of VOSS
5. Human Relationships in the Novel

Unit -03 Romantic Elements in VOSS

1. What is Romanticism?
2. Aspects of Romanticism in VOSS
3. The Romantic World

Unit -04 Multiple Themes in VOSS

1. Perspectives on the Land
2. Problem of Identity

Unit -05 Modern Readings : Some Important areas

1. Modern and Postmodern Readings
2. Inner Movements.

Sixth Block – Contemporary Australian Poetry (1970 onwards)

Unit -01 Contemporary Australia

1. Political Issues
2. Social Issues
3. Cultural Issues

Unit -02 Bruce Dawe and Les Murray

1. 'At Shagger's Funeral

2. 'The Quality of sprawl' and 'Blood'
3. Common Concerns

Unit -03 Chris Wallace – Crabbe and Gwen Harwood

1. 'Melbourne'
2. 'In the Partk'
3. Common Concerns

Unit -04 EE Tiang Hong and Kevin Gilbert

1. 'Coming to'
2. 'Mister man'
3. Common Concerns

Unit -05 Mud roaroo Narogin and Gig Ryan

1. 'Harijan'
2. If I had a Gun
3. Common Concerns
4. Contemporary Australian Poetry : An Overview

Seventh (A) Block – David Malouf : Remembering Babylon

Unit -01 Contemporary Australian Fiction : An Overview

1. Many trends
2. Women's Fiction
3. The Aboriginal Fiction
4. Migrant Writing

Unit -02 The Author, His Creativity and Babylon

1. The author and his creativity
2. Chronology
3. Select Bibliography
4. The Remaining Chapters

Unit -03 Structure, Characters and Metaphors

1. Structure and characters
2. Metonyms, Metaphors, and Epiphanies
3. The Concluding Chapter

Unit -04 Narrative Strategies and communication

1. Narrative Technique
2. Language and Communication in Remembering Babylon
3. Some more aspects of language
4. Representing the Aboriginal

Unit -05 Themes

1. From Colonial Identity to National Identity
2. Exile and Alienation
3. Faultlines in white Australian Identity

Seventh (B) Block – Jessica Anderson ‘Terra Lirra by the River.

Unit -01 The Author and the Significance of the Title

1. The Author and her works : Introduction
2. The title of the novel
3. Literary Allusions : Intertextuality

Unit -02 The Summary of the Novel

1. Section - 01
2. Section - 02
3. Section - 03
4. Section - 04
5. Section - 05
6. Section - 06
7. Section - 07

Unit -03 Critical Analysis

1. Critical Analysis of Section - 01
2. Critical Analysis of Section - 02
3. Critical Analysis of Section - 03
4. Critical Analysis of Section - 04
5. Critical Analysis of Section - 05
6. Critical Analysis of Section - 06
7. Critical Analysis of Section - 07

Unit -04 Characters and Themes

1. Main Characters
2. Minor Characters
3. Major Themes
4. What do the critics say

Unit -05 Narrative Strategies

1. Narrative in the Mirror
2. Aspects of Narrative form
3. The present, the past, and the story
4. The telling of the story : Some more aspects
5. The 'other' A perspective
6. Important images

Eighth Block – The Removalists

Unit -01 An Overview of Australian Drama

1. Pre-Lawler Australian Drama
2. Australian Drama in the Nineteenth Century
3. Post-Lawler Australian Drama

Unit -02 David Williamsons Dramatic world

1. Williamson's Early Plays (1970s)
2. Williamson's Later plays
3. An Approach to Williamson's Plays

Unit -03 Reading the Removalists

1. Act I
2. Act II

Unit -04 Themes and Techniques

1. Themes
2. The title of the play
3. Techniques.

स्नातकोत्तर दर्शनशास्त्र
MAPH

एम0 ए0 प्रथम वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम
MAPH - 01	भारतीय दर्शन	सी0 डी0 शर्मा
MAPH - 02	पाश्चात्य दर्शन	जगदीश सहाय श्रीवास्तव
MAPH - 03	भारतीय दर्शन (भाग 1,2)	डा0 राधा कृष्णन
MAPH - 04	अद्वैत-वेदान्त	प्रो0 अर्जुन मिश्र
MAPH - 05	बौद्ध दर्शन	डा0 छोटे लाल त्रिपाठी
एम0 ए0 द्वितीय वर्ष	पुस्तक का नाम	लेखक का नाम
MAPH - 06	समकालीन पाश्चात्य दर्शन	बी0 के0 लाल
MAPH - 07	अधिनीतिशास्त्र	डा0 वेद प्रकाश वर्मा
MAPH - 08	समकालीन भारतीय दर्शन	डा0 लक्ष्मी निधि सक्सेना
{ MAPH - 09	धर्म दर्शन	याकूब मसीह
{ Or		
{ MAPH - 10	तर्कशास्त्र का परिचय	प्रो0 संगमलाल पाण्डेय
{ MAPH - 11	कांट का दर्शन	प्रो0 सभाजीत मिश्र
{ Or		
{ MAPH - 12	गांधी का दर्शन	डा0 रामजी सिंह